RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Div./244/2020-2022
Desp. Date - 02 June, 2021

अंक – 12 (मासिक) वर्ष – 16 जून, 2021 मूल्य 20/–

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

हर घर ''जय महेश''

कोरोना काल में मुंबई के करूणापति सुरेश काकाणी

श्री माहेश्वरी मेलापक
वैवाहिक डायरेक्ट्री
श्री माहेश्वरी मेलापक 2021
का प्रकाशन प्रारंभ

Visit us :
srimaheshwaritimes.com

देखें प्रति मंगलवार
SMT NEWS
VIDEO NEWS BULLETIN

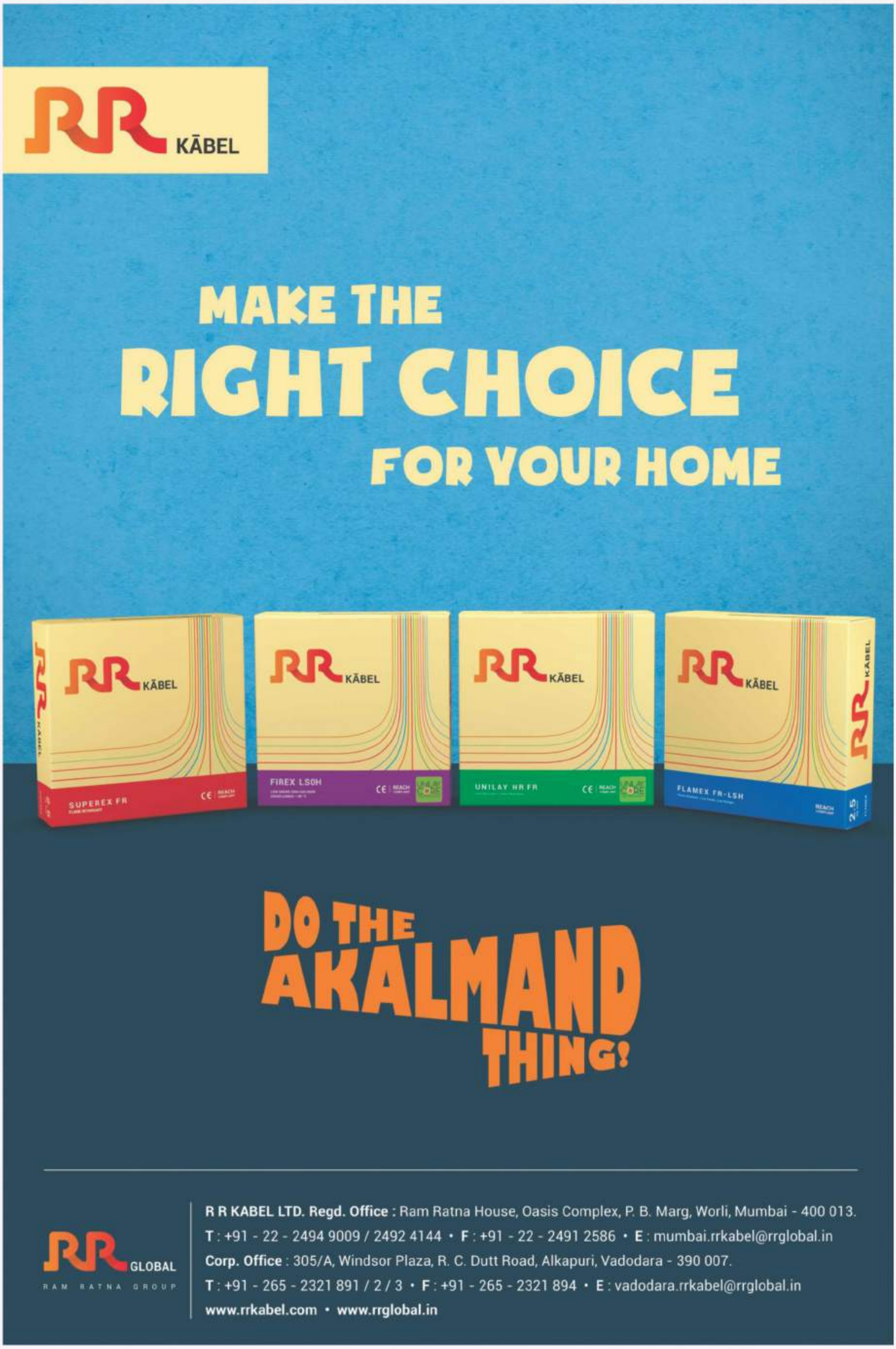
RR KĀBEL
MAKE THE
RIGHT CHOICE
FOR YOUR HOME
SUPEREX FR
FIREX LSOH
UNILAY HR FR
FLAMEX FR-LSH
DO THE
AKALMAND
THING!
RR GLOBAL
RAM RATNA GROUP
R R KABEL LTD. Regd. Office : Ram Ratna House, Oasis Complex, P. B. Marg, Worli, Mumbai - 400 013.
T : +91 - 22 - 2494 9009 / 2492 4144 • F : +91 - 22 - 2491 2586 • E : mumbai.rrkabel@rrglobal.in
Corp. Office : 305/A, Windsor Plaza, R. C. Dutt Road, Alkapuri, Vadodara - 390 007.
T : +91 - 265 - 2321 891 / 2 / 3 • F : +91 - 265 - 2321 894 • E : vadodara.rrkabel@rrglobal.in
www.rrkabel.com • www.rrglobal.in

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-12 ▸▸ जून 2021 ▸▸ वर्ष-16

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री रामकुमार टावरी (दिल्ली)

अतिथि सम्पादक
डॉ. मदन गोपाल लढ़ा, बीकानेर

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा) मुम्बई/इन्दौर
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com
स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

- श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
- सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
- PNB A/c. No. : 0459002100043471
  IFSC- PUNB0045900
- ICICI A/c. No. : 030005001198
  IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

श्री माहेश्वरी टाईम्स की विनम्र अपील

समाज के उत्पत्ति दिवस महेश नवमी के शुभ अवसर पर समस्त स्वजनों को हार्दिक मंगलकामनाएं

'श्री महेश नवमी' के इस पावन पर्व की पूर्व संध्या पर अपने आवास एवं प्रतिष्ठान पर एक

दीपक

समाज की एकता, अखण्डता व गरिमा के नाम लगाने का विन्रम अनुरोध।

श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार

विचार क्रान्ति

इस समय बेंत की तरह झुक जाऐ

बीते सवा वर्ष से जीवन की गति थमी हुई है। विश्व भर के मनुष्य धरती पर मानव जाति के इतिहास में अब तक के सबसे अपूर्व शत्रु से जूझते हुए मृत्यु के विरुद्ध संघर्ष कर रहे हैं। एक अदृश्य किन्तु परम प्रभावी और प्राणघातक वायरस ने चाँद पर पाँव धर चुके मनुष्य को उसी आदिम हाल में ला छोड़ा है, जब वह गुफ़ाओं में निश्चेष्ट बैठा रहता था और बादलों की गर्जना तक से भयभीत हो उठता था। हम सब बेबस हैं और प्राण रक्षा का व्रत लिए घरों में दुबक गए हैं। मानो आधुनिक विज्ञान की ध्वजा को सातवें आसमान पर फहराने को उतावले 21वीं सदी के मनुष्य को एक शूद्र वायरस ने घुटने टेकने पर विवश कर दिया है।

महाभारत के शांतिपर्व की एक कथा इस 'आत्मसमर्पण' को सुनीति बताती है। अर्थात् जब शत्रु प्रबल हो तो वही करना उचित है जो इस समय हम कर रहे हैं। कथा 113 वें अध्याय की है जिसके अनुसार एक बार सरिताओं के स्वामी समुद्र के मन में एक संदेह उत्पन्न हो गया। उसके निवारण के लिए समुद्र ने नदियों को एकत्र कर पूछा कि 'समूलशाखान् पश्यामि निहतान् कायिनो द्रुमान्। युष्माभिरिह पूर्णाभिर्नद्यस्तत्र न वेतसम्।।' अर्थात् हे नदियों! मैं देखता हूँ कि जब बाढ़ आने के कारण तुम में लबालब पानी भर आता है तब तुम विशालकाय वृक्षों को जड़-मूल और शाखाओं सहित उखाड़कर अपने प्रवाह में बहा लाती हो परन्तु उनमें बेंत का कोई पेड़ दिखाई नहीं देता, इसका क्या कारण है?

तब गंगा नदी ने समस्त नदियों की ओर से उत्तर दिया और बोली, 'हे नदीश्वर! ये वृक्ष अपने स्थानों पर अकड़े हुए खड़े रहते हैं, हमारे प्रवाह के सामने मस्तक नहीं झुकाते। इस प्रतिकूल व्यवहार के कारण ही वे नष्ट हो जाते हैं परंतु बेंत ऐसा नहीं है। वह नदी के वेग के समक्ष झुक जाता है।

'कालज्ञः समयज्ञश्च सदा वश्यश्च नोद्वतः। अनुलोमस्तथास्तब्धस्तेन नाभ्येति वेतसः।।' अर्थात् बेंत समय को पहचानता है, उसके अनुसार बर्ताव करना जानता है, सदा हमारे वश में रहता है, कभी उद्दंडता नहीं दिखाता और अनुकूल बना रहता है। उसमें कभी अकड़ नहीं आती है, इसलिए उसे स्थान छोड़कर यहाँ नहीं आना पड़ता है।

गंगा ने कहा, 'जो पौधे, वृक्ष या लता-गुल्म हवा और पानी के वेग से झुक जाते हैं तथा वेग शांत होने पर सिर उठाते हैं, उनका कभी पराभव नहीं होता है।' साधो! कथा अत्यंत लघु होकर भी सारगर्भित व प्रेरक है। गंगा के वचन में वर्तमान के कठिन काल से पार उतरने का सूत्र छुपा है। जब 'हवा का वेग प्रतिकूल' हो, तब समय को पहचाने और बेंत की भाँति झुक जाए। अर्थात घरों में सुरक्षित रहे, अनावश्यक बाहर निकलने की अकड़ न दिखाए। अन्यथा पराभव निश्चित है।

■ डॉ. विवेक चौरसिया

सम्पादकीय

नियत से नियति

मुंबई के एडिशन म्युनिसिपल कमिश्नर सुरेश काकाणी, यह नाम सुप्रीम कोर्ट से मिली प्रशंसा के बाद देशभर में चर्चा में आया, लेकिन श्री काकाणी इसके पहले भी समाज और देश के प्रबुद्ध वर्ग में उतने ही चर्चित रहे हैं। मुंबई में कोरोना संक्रमण के दूसरे दौर की नाथ बांध देने वाले काकाणी की कोरोना से निपटने की कार्ययोजना को देशभर में लागू करने की सिफारिश की गई, क्योंकि महामारी को रोकने के लिए फुल प्रूफ योजना किसी के पास नहीं थी। ऐसे दौर में श्री काकाणी ने मुंबई और धारावी जैसे इलाकों को कोरोना संक्रमण की विभीषिका के बीच सुरक्षित निकालने की दुरुह सफलता हासिल कर एक बार फिर अपनी कार्यशैली और कुशल प्रशासन की धाक जमा दी। श्री काकाणी इंजीनियरिंग से प्रशासनिक सेवा में आए हैं, यह बहुत कम लोग जानते हैं। इसलिए श्री काकाणी न केवल किसी भी काम की तकनीकी बारिकियों को समझते हैं, बल्कि उसे पूरा करने की योजना तैयार करने में भी दूसरों से आगे दिखाई देते हैं। उनके व्यक्तित्व की कई खूबियों में से एक वैचारिक समझ भी है। देश की परिस्थितियों पर उनके आलेख चर्चित रहे हैं। कोरोना संक्रमण के दौर में उन्होंने मुंबई को बचाने के लिए जिस तरह नेतृत्व कर हर कदम पर सफलता हासिल की, उसकी तारीफ करने में सुप्रीम कोर्ट भी पीछे नहीं रहा। यही कारण है कि जब महाराष्ट्र को कोरोना संक्रमण में सबसे आगे माना जा रहा था, तब मुंबई के लोग शांत और स्वस्थ रह सके। कहीं कोई हड़बड़ाहट नहीं, कोई अव्यवस्था नहीं। जबकि कोरोना के पहले दौर में मुंबई की हालत क्या थी, यह बताने की जरूरत नहीं है। श्री काकाणी ने यह सब ऐसे ही नहीं कर दिया। इसके पीछे उनकी सोच, समझ और कार्यशैली का बड़ा बल है। परिस्थितियों का पूर्वानुमान लगाना, उससे निपटने के लिए तैयारी और अपनी कार्ययोजना को पूरी ताकत से लागू कर सफलता हासिल करना ही कुशल प्रशासक का दायित्व भी है। श्री काकाणी निश्चित तौर से देश में प्रशासनिक दक्षता के प्रतिमान बन गए हैं। श्री काकाणी के व्यक्तित्व की खूबियां केवल प्रशासनिक दृष्टिकोण से ही अनुकरणीय नहीं है, बल्कि आम आदमी के जीवन में भी इनका महत्व है। फिर चाहे रोजगार-व्यापार का मामला हो या दैनिक जिंदगी की उहापोह। श्री काकाणी के समूचे व्यक्तित्व को शब्दों में समेटना नामुमकीन है, लेकिन हमने कोशिश की है कि अपने पाठकों को उनके जीवन के हर पहलु से परिचित करा सकें।

तस्वीर का एक पहलु श्री काकाणी हैं, तो दूसरा पहलु दिगंबर झंवर। कोरोना से बचाव में सबसे ज्यादा कारगर माने जा रहे रेमडेसिविर इंजेक्शन के निर्माता दिगंबर झंवर ने अपनी व्यावसायिक प्रतिबद्धताओं के बीच माहेश्वरी समाज के प्रति अपने कर्तव्य को महसूस करते हुए 1000 इंजेक्शन निःशुल्क उपलब्ध कराए। ताकि समाज के किसी भी व्यक्ति को यदि इसकी जरूरत है, उसे भटकना नहीं पड़े। समाज के स्तर पर ही उसे राहत मिल सके। श्री झंवर जैसे समर्पित समाजसेवियों से ही समाज गौरवांवित होता है। इसी तस्वीर का तीसरा पहलु भी है जिसे जानकर शायद समाजजन कुछ असहज हो सकते हैं। श्री झंवर ने यह इंजेक्शन निःशुल्क उपलब्ध कराए थे। सूत्र बताते हैं और चर्चा भी है कि इन्हें जरूरतमंद समाजजन तक पहुंचाने का दायित्व निभाने वालों ने इनकी कीमत वसूल कर ली। यह सीधे अमानत में खयानत का मामला है। श्री झंवर ने जब निःशुल्क इंजेक्शन दिए थे, तो बीचवानों को इसकी कीमत वसूलने का क्या अधिकार है? यदि ऐसा हुआ है तो यह बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण है। ऐसे में कोई दानदाता क्यों समाज की भलाई के लिए निःशुल्क सेवा देगा?

हमने यह मुद्दा भी उठाया कि ऐसे भीषण दौर में दान देने का प्रदर्शन कितना उचित है। हम देख रहे हैं कि जरूरतमंदों को भोजन, दवाई, सिलेंडर, इंजेक्शन आदि में सहयोग करने वाले उनके साथ अपने फोटो खिंचवा कर मीडिया में वायरल कर रहे हैं। वे अपना दान दिखाना चाहते हैं। जबकि हमारी संस्कृति कहती है दान वह है जो एक हाथ करे तो दूसरे हाथ को पता नहीं चले। जो लोग जरूरतमंद के साथ दान देते समय फोटो खिंचवा रहे हैं, निश्चित ही वे अपने अहंकार से पीड़ित है। वे दान नहीं दे रहे बल्कि अपने दंभ की पूर्ति कर रहे हैं। वे दानदाता तो कदापि नहीं है। नियत से नियती का यही सफर है। श्री काकाणी और श्री झंवर अपने निरपेक्ष कर्तव्य बोध से देशभर में ख्याति हासिल कर रहे हैं तो दूसरी तरफ ऐसे लोग आलोचना के पात्र बन गए हैं, जिन्होंने आपदा में अवसर तलाशे। अहंकार से भरा दान व्यक्ति की क्षुधा की तुष्टि कर सकता है, पर कदापि पुण्य में परिवर्तित नहीं हो सकता।

श्री माहेश्वरी टाईम्स की ओर से सभी समाज बंधुओं को समाज के उत्पत्ति दिवस महेश नवमीं पर्व की हार्दिक मंगलकामनाऐं व बधाई तथा अपील करता हूँ कि इस बार भी गत वर्ष की तरह अपनी एवं परिवार की कोरोना महामारी से सुरक्षा के लिए महेश नवमीं उत्सव अपने घर पर दीपावली की तरह मनाऐं।

यह अंक आपको समर्पित करते हुए हर्ष है। इसमें आपकी अपेक्षाओं के अनुसार सामग्री समाहित करने की कोशिश की है, सभी स्थायी स्तंभों के साथ। इस बारे में अपनी राय से अवगत कराना न भूलें। अगला अंक भगवान महेश नवमी पर आधारित होगा। जय महेश !

पुष्कर बाहेती

सम्पादक

अतिथि सम्पादकीय

बीकानेर राजस्थान निवासी डॉ. मदन गोपाल लढ़ा राजस्थान की नई पीढ़ी के चर्चित व प्रतिष्ठित कवि, कहानीकार व आलोचक हैं। सीमावर्ती बीकानेर जिले के महाजन कस्बे में जन्मे डॉ लढ़ा की हिंदी व राजस्थानी में मौलिक लेखन के अन्तर्गत एक दर्जन से अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनकी प्रमुख कृतियां हैं- हिंदी में 'होना चाहता हूँ जल' (कविता), 'आंखों में आकाश' (बालकथा), राजस्थानी में 'च्यानण पख' (कहानी), चीकणा दिन (कविता) आदि। राजस्थान शिक्षा विभाग के लिए बी.एस.टी.सी. प्रथम व द्वितीय वर्ष तथा उच्च प्राथमिक स्तर कक्षा 6 से 8 तक हिंदी विषय की पाठ्यपुस्तकों के समूह सदस्य के रूप में लेखन का महत्त्वपूर्ण कार्य आपने संपादित किया है। एक राष्ट्रीय दैनिक के लोकप्रिय स्तम्भ 'आओ गांव चलें' के लिए आपने शताधिक गांवों का भ्रमण व आलेख-लेखन किया है। साहित्यिक पत्रकारिता के साथ टीवी व रेडियो से भी आपका सतत जुड़ाव है। उत्तरी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा में प्रदेश संगठन मंत्री के दायित्व का निर्वहन कर चुके डॉ. लढ़ा को जोधपुर महाकुंभ में अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा द्वारा 'प्रतिभा सम्मान' से नवाजा जा चुका है। सम्प्रति आप राजस्थान के शिक्षा विभाग में प्रधानाचार्य के पद पर सेवारत भी हैं।

संकळप री सांतरी बेला

महेश नवमी मतलब आपणै समाज रो जलमदिन। आज रै ई दिन ई आपणै समाज री उत्पत्ति हुई। देसभगति, सेवा अर संस्कारां सारू आपणां बडेरा जकी-जकी आफल करी बै इतियास रै पानां माथै सोनल आखरां में मंड्योड़ी है। जीव जगत री हिमायत रै उण भावां अर बळिदान री अमर गाथावां नै निंवण करतां थकां आपां आज रै बगत में देस अर समाज प्रेम रै मायनै नै जांचां-परखां तो स्यात आज रै पावन दिन री सार्थकता सवाई हुय जावैला।

चावा कथाकार निर्मल वर्मा 'मेरे लिए भारतीय होने का मतलब' निबन्ध में लिखै कै देस पेटै हेत रो पैल पोत ठाह बां' नै तद पड़्यो जद बै आपरी मा भेळा रेल में जातरा करै हा अर रेल अेक नदी माथै बण्योड़ै पुल रै ऊपर सूं टिपी। निर्मल उण बगत रेल रै हलका में झौंकड़्यां लेवै हा। मा बां' नै फंफेड़'र जगायो अर अेक रीपिया रो सिक्को हाथ में देय'र नदी में न्हाखण सारू कैयो। सिक्को न्हाख्यां पछै मा आप हाथ जोड़ लिया अर निर्मल सूं ई हाथ जुड़ा'र नदी नै निंवण करायो। उण सूकेड़ी-सी नदी रो नांव तकात निर्मल वर्मा नै ठाह कोनी पड़्यो। आपरै गांव-घर सूं सैंकड़ूं कोस दूर आपरी अणपढ़ मा रो उण अज्ञात नदी सारू इण श्रद्धा भाव नै बै देस पेटै पैलै प्रेम री अभिव्यक्ति मानै। सुवाल उठै कै इक्कीसवैं सईकै रै तीजै दशक री पेड्यां चढता थकां आपणै सारू देस अर समाज रो मतलब कांई है? वैश्वीकरण रै इण जुग में जद आखो संसार अेक इकाई बण रैयो है, बाजार केन्द्रित व्यवस्था में भौगोलिक सींवां बेमानी हुवती जा रैयी है, 'देस' रा संदर्भ सागण ई है का कीं बदलग्या? कांई आज ई आपां 'देस' ने उण अरथ-छिब में ओळख अर अंगेज सकां जिण संदर्भ में आपणा पुरखा लियो।

देस, धरम अर जीव जगत री सेवा अर हिमायत में आपरी आवगी जूण खपावणियां बां पुरखां री ओळूं नै अंवेरता अेक सुवाल भलै मन-मगजी नै आकल-बाकल कर न्हाखै कै कांई आपां बां रै विचारां नै उणीं रूप में आज अंगेज सकां? निजूपण नै खतम करणो अर सपनां नै तजणो सोरो तो कोनी। चावै भलांई सपनां पूरा नीं हुवो पण सुपनां रै लारै भाजणो ई आज रै आदमी री 'नियति' है। पक्कायत ई बै लोग किणीं दूजी माटी सूं बण्योड़ा हुवै जका आपरी अेक-अेक सांस देस-समाज सारू समर्पित कर देवै। भोत मोटो आतम-बल चाइजै इण सारू। आपरै निजु जीवण रै रोजमर्रा रै कामां नै देस अर समाज हित री ताकड़ी माथै तोलणियां लोग गिणती रा है। व्यवस्था नै मूंडै छूटी गाळ काढ़णियां ई जद बख में आवै व्यवस्था री सित्या पट न्हाखै। पगां-पगां माथै देसहित नै खूंटी टांग'र आपरै सुवारथ री साधना में लाग्योड़ै लोगां बिचालै अैड़ा दाखला सोधणा जरूरी है जका आटूं पौर देस-समाज सारू जीवै।

भारत री खास ताकत 'भारतीयता' रो अखूट भाव रैयो है जको सैकड़ूं बरसां सूं इण देस नै जोड़ राख्यो है। भारतीयता रै इण भाव रै पांण ई काश्मीर सूं कन्याकुमारी तांई भारत माता रा जैकारा गूंजै अर हरेक आपदा पछै ई ओ देस पूरी सबलाई सूं उठ खड़्यो हुवै। कोरोना जैड़ी वैश्विक महामारी सूं जूझतां थकां आपां नैं आ बात ई विचारणी पड़ैला कै कठैई आपां मरजादा नैं बिसार'र थोथै दिखावै अर आथूणी संस्कृति रै आंधै अनुकरण में आपरी जड़ां सूं तो नीं कटग्या। जे आपां आपणी सिमरध संस्कृति री सांवठी परम्परावां नैं चेतै राखतां थकां हरेक काम नैं इण कसौटी माथै परखता रैवां कै कठैई आंपणै इण पांवडै सूं आपणै व्हालै मुलक अर समाज रो किणी भांत रो अहित तो कोनी हुवै, तो आ मिनखपणै री लूंठी सेवा हुवैला। इण संकळप सारू महेश नवमी सूं सांतरो मौको भळे कद हुवैला?

डॉ. मदन गोपाल लढ़ा
अतिथि सम्पादक

श्री फलौदी माताजी

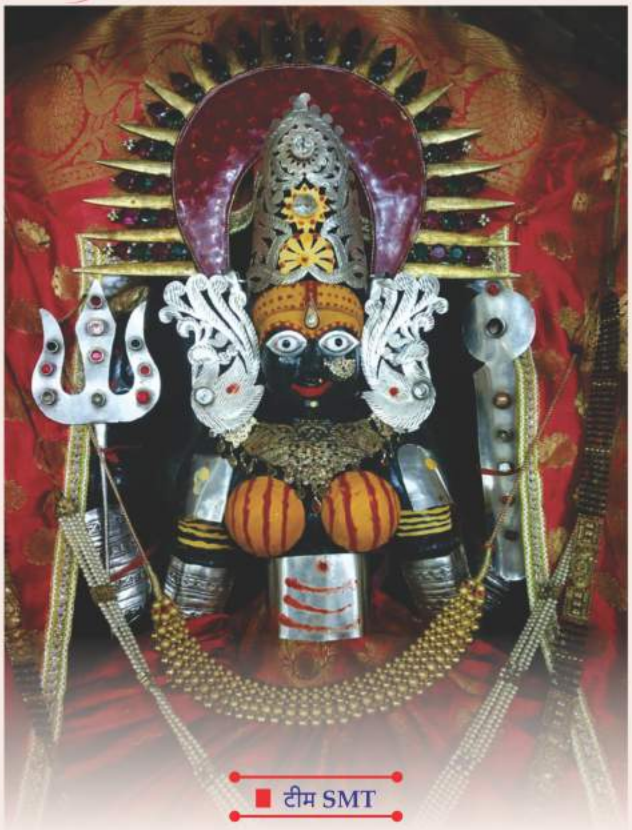

■ टीम SMT

हेड़ा, धूपड़, जाजू, समदानी, खटोड़, तुलावटिया, कयाल, मालानी, लोसल्या, गाँधी और टुवाणी आदि खाँप की कुलदेवी फलौदी माता हैं। माताजी का मंदिर राजस्थान के जोधपुर जिले से लगभग 105 किमी दूर मेड़ता रोड नामक छोटे से गाँव में स्थित है। मंदिर का निर्माण राजा नाहड़ राव परिवार द्वारा करवाया गया। उस समय फलौदी गाँव में फलौदी माता का एक कच्चा थान बना हुआ था। राजा ने उस कच्चे थान को एक छोटे मंदिर का रूप दे दिया जिसके पास ही, एक तालाब व एक बावड़ी भी खुदवाई जो आज भी मौजूद है।

अनुठा तौरण द्वार

विक्रम संवत् 1013 में मंदिर बनवाने के पश्चात शीघ्र ही उस मंदिर में माँ फलौदी ब्रह्माणीजी की प्रतिष्ठा विक्रम संवत् 1013 में कराई, उस वक्त प्रतिष्ठा के लिए रत्नावली (रूण) नगरी से भोजक केशवदासजी के पुत्र लंकेसरजी को लेकर यहाँ आए और यहाँ प्रतिष्ठा कराई तथा बाल भोग के लिए उस वक्त राजा नाहड़ राव ने 52 हजार बीघा जमीन माताजी के नाम अर्पण की, जिसका सम्पूर्ण अधिकार लंकेसरजी को सौंपा। जिस वक्त राजा ने मंदिर की प्रतिष्ठा कराई, उसी दौरान एक तोरण द्वार यादगार के रूप में मंदिर के बाहर बनवाया गया जो कि प्राचीन संस्कृति एवं कलात्मकता का एक अद्भुत नमूना था जो 9 चरणों में बँटा हुआ एक विशाल स्तम्भ दिखाई देता था। उसकी ऊँचाई उस वक्त 85 फुट थी। बाद में इस तोरण थाम का उपयोग विशाल द्वीप स्तम्भ के रूप में किया जाने लगा। आसपास के इलाके के राजा, महाराजा अपने किलों (गढ़) के ऊपर खड़े होकर विशाल दूरबीनों की सहायता से नवरात्रि पर्व के समय माताजी की ज्योत के दर्शन करते थे जो इस तोरण के सबसे ऊपरी हिस्से पर दर्शन हेतु रखी जाती थी।

काले खां का सबक

विक्रम संवत् 1014 को भोजक केशवदासजी, किरतोजी, बलदेवजी व सुमेरजी आदि ने मिलकर वैशाख सुदी तीज सोमवार को कुलदेवी फलदायनी के नाम से फलौदी नाम का गाँव बसाया जो आज मेड़ता रोड कहलाता है। विक्रम संवत् 1633 में बादशाह अकबर की फौज फलौदी (मेड़ता रोड) से होकर गुजरी। फौज के सूबेदार काले खाँ की नजर दूर से ही मंदिर के पास बने कलात्मक व 85 फीट ऊँचे भव्य तोरण पर पड़ी। काले खाँ स्वयं मंदिर के अंदर गया तथा मंदिर जिन चार प्रमुख खम्भों पर खड़ा था उनको तुड़वाना शुरू किया। तीन खम्भे तोड़े जा चुके थे। तब काले खाँ ने माताजी की मूर्ति तोड़ने की नीयत से गर्भगृह में प्रवेश करना चाहा उसी समय माँ भवानी फलदायिनी स्वयं प्रकट होकर क्रोध से दहाड़ उठीं और उन्होंने काले खाँ को जहाँ खड़ा था वहीं जमीन से चिपका दिया। काले खाँ अपनी पूरी ताकत लगाकर हार गया उसने निराश होकर माँ भवानी के चरणों में अपना शीश झुकाकर स्वयं को मुक्त करवाने हेतु प्रार्थना की। तब माताजी ने उसे लूटपाट व मार-काट बंद करवाने को कहा। जब काले खाँ के आदेश से लूटपाट बंद हुई तब तक तोरण द्वार का मात्र एक हिस्सा बचा रह गया जो आज भी अपनी जगह विद्यमान है और इसी तरह मंदिर के अन्दर भी एक ही स्तम्भ सुरक्षित रहा जो आज भी स्थित है। मंदिर प्रांगण में ही ठहरने के लिए 15 कमरे बने हुए हैं। भोजन प्रसाद की अच्छी व्यवस्था है।

नवरात्रि उत्सव

इस मन्दिर में नवरात्रि पर्व का अपना विशिष्ट स्थान है। वर्ष में दो बार यहाँ नवरात्रि पर्व चैत्र बदी अमावस्या से प्रारम्भ होकर सप्तमी तक चलता है। द्वितीय नवरात्रि पर्व आसोज बदी अमावस्या से लेकर सप्तमी तक चलता है। इस दौरान अमावस्या से लेकर छट तक किसी प्रकार का भोग व प्रसाद माताजी के नहीं चढ़ता। सप्तमी को दिन माताजी भोग लगता है। इस मन्दिर में भारत के कोने-कोने से यात्री व भक्त आते हैं और माँ के दरबार में मन माँगी मुरादें पूरी पाते हैं। नवरात्रि पर्व के समय यह मन्दिर एक मेले का रूप ले लेता है। वर्तमान समय में कुछ उत्साही युवकों द्वारा सही मार्गदर्शन कराने से यात्रियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है तथा मन्दिर विकास कार्य भी तीव्र गति से प्रारंभ हुए हैं।

कैसे पहुंचे - ग्राम मेड़ता रोड (फलौदी) जोधपुर से 105 किमी, बीकानेर से 162 किमी तथा अजमेर से लगभग 95 किमी दूर स्थित है। ट्रेन द्वारा जोधपुर, बीकानेर या अजमेर पहुँचकर यहाँ से बस, किराए या स्वयं के चौपहिये वाहन द्वारा यहाँ पहुँचा जा सकता है।

कोरोना महामारी में की मानवता की सेवा

समाज से हटकर आमजन की मदद के लिये भी आगे आये समाजजन

बैंगलुरू। स्थानीय माहेश्वरी सभा ने इस संकट की घड़ी कोरोना काल में सेवा कार्यों में अपने कदम बढ़ाते हुए पुलिस कर्मियों की सुरक्षा को ध्यान में रखकर श्रीरामपुरम पुलिस स्टेशन के ए.सी.पी. को उनकी पुलिस स्टेशन की जरूरत के हिसाब से सेनेटाइजर की बोतलें और ग्लब्ज उपलब्ध कराए। यह कार्य कोषाध्यक्ष अजय राठी, माहेश्वरी युवा संघ के अध्यक्ष अरविंद लोया एवं माहेश्वरी भवन के मैनेजर वैंकटेश द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। फिर शहरवासियों की चिंताजनक हालात को ध्यान में रखते हुए बैंगलुरू के अन्य समाज के सदस्यों के लिए भी बीबीएमपी में रजिस्ट्रेशन कर हॉस्पिटल में बेड मुहैया कराने का काम एम.एस. बीएलआर कोविड वार रूम द्वारा सुचारू रूप से चलाया जा रहा है। माहेश्वरी सभा एवं माहेश्वरी युवा संघ की वालंटियर टीम दिन रात इस प्रयास में लगी हुई है। इसमें संयोजक अमित माहेश्वरी के साथ आदित्य माहश्ेवरी, सुवम माहेश्वरी, प्रहलाद माहेश्वरी, सचिन मूंदड़ा, विजय बंग, निशा माहेश्वरी, सौरभ राठी, जयप्रकाश सारडा, मनमोहन साबू, विशाल लावटी, प्रदीप मांधना आदि अनेक कार्यकर्ता तथा समाज के अनेक डॉक्टर्स आशीष धूत, प्रेरणा भट्टड़, सागर भट्टड़, वर्षा पचीसिया, प्रवीण काबरा, शोभा झंवर आदि निःस्वार्थ भाव से कार्य कर रहे हैं। इस सेवा कार्य के तहत करीब 180 मरीजों को हॉस्पिटल में बेड उपलब्ध करवाने के प्रयास में सफलता प्राप्त हुई है।

प्लाज्मा दान का चलाया अभियान

प्लाज्मा डोनेशन ड्राइव के तहत एचसीजी हॉस्पिटल के साथ टाईअप कर जरूरतमंद रोगियों के लिए प्लाज्मा का इंतजाम किया जा रहा है। कोरोना से स्वस्थ हुए सदस्यों ने बढ़-चढ़कर इसमें हिस्सा लिया और प्लाज्मा दान किया। अब तक करीब 55 लोगों ने प्लाज्मा दान किया है जिससे 110 कोरोना पीड़ित लोगों की मदद हुई है। यह सेवा कार्य माहेश्वरी युवा संघ के अध्यक्ष अरविंद लोया तथा सचिव धीरज काबरा के नेतृत्व में सफलतापूर्वक निर्वाह किया जा रहा है, इसमें अमोल राठी, आयुषी काबरा, कुशल जाजू, हर्ष लखोटिया, विशाल, संजीव भूतड़ा तथा अनेक युवा साथी तन-मन से कार्य कर रहे हैं। इस कार्य में एचसीजी के डॉक्टर आशीष धूत का भरपूर सहयोग प्राप्त हुआ है।

ऑक्सीजन के साथ भोजन की भी चिंता

घर पर रहे मरीजों के लिए ऑक्सीजन कमी की पूर्ति हेतु माहेश्वरी सभा द्वारा समाज बंधुओं तथा शहरवासियों के लिए निःशुल्क ऑक्सीजन कान्सन्ट्रेटर मशीन की व्यवस्था माहेश्वरी भवन में उपलब्ध कराई गयी है, जो जरूरतमंद मरीजों को डॉक्टर के प्रिसक्रिप्शन के आधार पर दिया जा रहा है। इससे अभी तक करीब 15 मरीजों को लाभ हुआ है। इस सेवा

कार्य को माहेश्वरी सभा कार्यसमिति सदस्य राजेश मारू और भगवान जाजू बड़ी जिम्मेदारी से संभाल रहे हैं। माहेश्वरी सभा संक्रमित समाजबंधु तथा परिजनों के लिए घर जैसे भोजन की व्यवस्था न्यूनतम दर पर कर रही है और अब तक दिन में दो समय दोपहर व रात मिलाकर कुल करीब ढाई हजार भोजन की थालियाँ जरूरतमंद परिवारों तक पहुंचाई गई है। इस कार्य को मूर्त रूप देने में सभा सदस्य बिमल लोहिया द्वारा संचालित घर की रसोई का सहयोग रहा है।

दवा व चिकित्सकों की भी व्यवस्था

जरूरतमंद मरीजों के लिए चिकित्सा विभाग तथा फार्मेसी से नियमानुसार दवाइयों की व्यवस्था कराने का प्रयास निरंतर चल रहा है और कई मरीजों को दवाइयां जैसे रेमडेसिविर, टोझिलोजुंयाब एवं ब्लैक फंगस की दवाइयां निरंतर उपलब्ध कराई जा रही है। माहेश्वरी सभा द्वारा इस संकट की घड़ी में कोरोना की विषम परिस्थितियों से जूझ रहे जरूरतमंद समाजबंधुओं के लिए आर्थिक सहायता, आवश्यक सूखे राशन आदि की व्यवस्था भी की जा रही है। समाजबंधुओं के लिए निःशुल्क ऑनलाइन डॉक्टर्स कंसल्टेशन हेतु समाज के कुछ डॉक्टरों को साथ जोड़कर सेवा शुरू की गई है, इसका उद्देश्य यह है कि इस महामारी के समय में छोटी-मोटी बीमारी के लिए किसी को घर से बाहर ना निकलना पड़े और सेकंड ऑपिनियन के तहत अपनी शंकाओं का समाधान हो सके। कोई सदस्य कोरोना ग्रस्त हो जाये तो उसे प्रथम चिकित्सा तथा न्यूनतम जानकारी देना, मरीज को हिम्मत और धीरज देने का प्रयास किया जा रहा है। इस सेवा कार्य में सुनीता लाहोटी, नितिन भटटड़, सुमित अजमेरा तथा सचिन राठी डॉक्टर और मरीज के बीच संपर्क की कड़ी बने। इन कठिन परिस्थितियों में अपने व्यस्त दिनचर्या में से समय निकालकर अपने समाज के डॉक्टर सागर भट्टड़, डॉ. प्रेरणा भट्टड़, डॉ. प्रवीण काबरा, डॉ. हितेश सोमानी, डॉ. शोभा कासट झंवर तथा डॉ. संजना लाहोटी बखूबी अपनी सेवाएं प्रदान कर रही है। शहर के अग्रणी हास्पिटल से संपर्क कर ब्लड डोनेशन तथा 18-44 आयु के सदस्यों के लिए वैक्सीनेशन कैम्प जैसे अभियान आदि का आयोजन भी किया जाऐगा।

समाजसेवी श्यामसुन्दर मंत्री के पौत्र ध्रुव बने कोरोना मसीहा

14 वर्षीय बालक ध्रुव ने एकत्रित की 9 ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर के लिये राशि, सोशल मीडिया पर किया लोगों का आह्वान

कुचामनसिटी। पारिवारिक संस्कारों का बालक के जीवन में क्या महत्व है, इसका प्रत्यक्ष उदाहरण शहर की न्यू कालोनी निवासी वरिष्ठ समाजसेवी श्यामसुंदर मंत्री के पौत्र कक्षा 10वीं में अध्ययनरत ध्रुव मंत्री के नेक कार्य ने पेश किया है। उसके पिता कपिल मंत्री जिंदल स्टील एंड पावर लिमिटेड में वाइस प्रेसिडेंट एवं कारपोरेट स्ट्रैटेजी के हेड व माँ निशा भी समाजसेवा के क्षेत्र में अग्रणी हैं। वे नियमित रूप से जरूरतमंद बच्चों को अध्ययन कराने के साथ ही उनके सर्वांगीण विकास के लिए नियमित रूप से योगा क्लास एवं स्किल डेवलपमेंट क्लास लेती हैं। ध्रुव की दादी शोभा मंत्री भी सामाजिक कार्यों में सदैव अग्रणी रहती है।

ऐसे पारिवारिक माहौल के कारण कोरोना काल ने ध्रुव को कुछ सकारात्मक करने के लिए प्रेरित किया। गत दिनों उसके परिवार के कोरोना संक्रमित होने के बाद उसने इसी दिशा में जरूरतमंदों की मदद का संकल्प लया। उसने तय कर लिया कि कुचामन शहर में कोरोना मरीजों के समक्ष आ रही ऑक्सीजन की कमी को दूर करने के लिए वे हर सम्भव प्रयास करेंगे। इसी दिशा में उसने सोशल मीडिया पर कोरोना मरीजों के लिए ऑक्सीजन कंसन्ट्रेटर मशीनों के लिए सहायता उपलब्ध कराने का आह्वान किया। देखते ही देखते कारवां बनता गया और ध्रुव ने 9 मशीनों के लिए राशि एकमात्र कर ली। इनमें से 5 ऑक्सीजन कन्सन्ट्रेटर मशीनें गुरूवार को कुचामनसिटी पहुंच गई, जिनका क्षेत्रीय विधायक महेंद्र चौधरी ने वर्चुअल मीटिंग के आधार पर लोकार्पण किया। कार्यक्रम का संचालन लॉयन सचिव हेमराज पारीक ने किया। इस अवसर पर श्यामसुंदर मंत्री, अशोक कुमार मंत्री, कपिल मंत्री, ध्रुव मंत्री, लॉयन अध्यक्ष श्याम सुंदर सैनी, सम्पत सोमानी, रंगनाथ काबरा, विमल पारीक, आशीष मंत्री, कृष्णा मंत्री, निशा मंत्री, प्रीति मंत्री मौजूद थे। उपस्थित लॉयन्स क्लब एवं जनकल्याण सेवा समिति के सदस्यों व परिवारजनों सभी ने ध्रुव के प्रयासों की भूरि भूरि प्रशंसा की।

कोरोना योद्धाओं का किया सम्मान

धामनोद (म.प्र.)। पूर्व मध्यप्रदेश पश्चिमांचल के संयुक्त सचिव एवं अखिल भारतीय महेश्वरी महासभा कार्यकारिणी मंडल के सदस्य जगदीश मुंदड़ा के नेतृत्व में माहेश्वरी समाज धामनोद द्वारा कोरोना महामारी में अपनी सेवा दे रहे अधिकारियों का स्वागत किया गया। इसके अन्तर्गत राजस्व अधिकारी, नायब तहसीलदार, एस.डी.एम और सरकारी डॉक्टर एवं उनके स्टाफ का फूल माला पहनाकर स्वागत किया गया। इस अवसर पर मुकेश सोडाणी भगवान मूंदड़ा, राजेश आगीवाल, निलेश परवाल, प्रकाश लड्ढा, दिनेश आगीवाल आदि समाज जन उपस्थित थे। उन्होंने देश के सभी समाज बंधुओं से कोरोना का टीका लगवाने की अपील भी की।

दुआएँ जमा करने में लग जाओ साहब ..!!
खबर पक्की है
'दौलत और शोहरत' साथ नहीं जायेंगे ..!!

कोरोना टीकाकरण शिविर का हुआ आयोजन

जोधपुर (राज.)। जिला माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वाधान में कोराना टीकाकरण का निःशुल्क शिविर महेश्वरी जन उपयोगी भवन रातानाडा में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ लगाया गया। इस कार्यक्रम में 200 लोगों ने टीकाकरण का लाभ उठाया। अध्यक्ष शिवकन्या धूत ने बताया कि इसमें चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सरोज चौधरी रातानाडा की टीम का सहयोग रहा। सचिव उषा बंग ने बताया कि संभागीय आयुक्त डॉ राजेश शर्मा तथा सहायक कलेक्टर व इंसीडेंट कमांडर जोन रेजिडेंसी अपूर्वा परवाल द्वारा निरीक्षण किया गया। संयोजिका डॉक्टर संजीवनी गट्टानी ने बताया कि गत 8 मई को पुनः कैंप लगाकर सेकंड डोज भी लगवाई गई। वैश्विक कोराना महामारी के चलते माहेश्वरी समाज जोधपुर के नर्सिंग केयर सेंटर में ऑक्सीजन कन्वर्टर की दो मशीनें, जिनकी लागत 95000 के करीब है, समर्पित की गई।

गणगौर सिंजारा का आयोजन

कर्नाटक। गोवा प्रांतीय माहेश्वरी महिला संगठन के अंतर्गत गत 8 अप्रैल को बेंगलुरु, बेल्लारी, मैसूर और रायचूर जिला माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गणगौर का सिंजारा कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि शैला कलंत्री, विशेष अतिथि कलावती जाजू, संयुक्त मंत्री पुष्पा तोषनीवाल, विशिष्ट अतिथि पुष्पा गिलड़ा एवं सचिव सरिता सारडा व प्रान्त के सभी पदाधिकारीगण कार्यक्रम में उपस्थित रहे। बैंगलोर माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष कान्ता काबरा ने गणगौर की पूजा की। कार्यक्रम का संचालन सचिव विजय लक्ष्मी सारडा व सहसचिव सुनिता लाहोटी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन रायचूर की सपना मून्दडा ने किया। करीबन 700 सदस्यों ने इस रंगारंग कार्यक्रम का अवलोकन किया। माहेश्वरी युवा संघ के कर्मठ कार्यकर्ता अमित माहेश्वरी ने जूम की व्यवस्था को सुचारू रूप से संभाला।

युवाओं का स्टार्टअप बन रहा मददगार

कोटा। कोरोना संक्रमण की दूसरी लहर में जहां हर तरफ लोग परेशान हैं, वहीं कोटा के युवाओं द्वारा शुरू किया गया स्टार्टअप पूरे देश के लोगों को मदद दे रहा है। दिन हो या रात गांव हो या शहर, हर जगह ''आयु एप'' बहुत कम समय में लोगों को स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध करवा रहा है। यह शुरूआत निखिल बाहेती, सैदा धनावत और श्रेयांस मेहता ने मई 2017 में की गई। इसके लिए बिहार मप्र, उप्र और राजथान के 800 से ज्यादा शहरों का दौरा किया और जाना कि लोगों को किस तरह की परेशानियां आ रही हैं व उनके सामने स्वास्थ्य सेवाएं लेने के लिए क्या चुनौतियां हैं। यह एप कोटा में संचालित किया जाने वाला पहला एप है और अब तक 13 राज्यों व 30 लाख से ज्यादा परिवारों तक पहुंच चुका है। इससे 25 हजार से ज्यादा मेडिकल स्टोर जुड़े हैं। इस डिजिटल नेटवर्क में 5 हजार से ज्यादा विशेषज्ञ डॉक्टर शामिल हैं।

कोराना में प्रारम्भ की 'नेक उमंग'

कोलकाता। पश्चिम बंगाल प्रादेशिक महिला संगठन के अंतर्गत 24 अप्रैल से कोरोना महामारी के दौर में मदद एक नई पहल 'नेक उमंग के साथ, साथी हाथ बढ़ाना' प्रारम्भ की गई। इसे पश्चिम बंगाल से शोभना सारडा और उनकी टीम सक्रियता के साथ संभाल रहे हैं। इसके अन्तर्गत जब ऑक्सीजन, प्लाज्मा, रक्त बेड, एम्बुलेंस इत्यादि की जो रिक्वायरमेंट आती है उसे फोन करके वेरिफाय करते हैं, फिर जिस शहर या गांव से पुकार आई वहां के या आसपास के अपने साथियों के साथ उसे पूरी करने की कोशिश करते हैं। अनेकों डॉक्टर, हॉस्पिटल सेवाकर्मी, सरकारी अधिकारी, दिग्गज समाजसेवी, विदेशों से भी मानवसेवा के लिए समर्पित अनेक सेवाभावी सदस्य बहुत सतर्कता के साथ एकजुट होकर कार्य कर रहे हैं।

निःशुल्क डायलिसिस सेवा प्रकल्प

इन्दौर। श्री माहेश्वरी महिला संगठन, मेघदूत क्षेत्र इंदौर द्वारा निःशुल्क डायलिसिस सेवा विगत 6 महीनों से सुचारू रूप से प्रदान की जा रही है। संस्था अध्यक्ष श्रीमती सुलोचना मंत्री ने बताया कि इसके अन्तर्गत हर माह की अमावस्या पर जरूरतमंद 15 मरीजों के लिए निशुल्क डायलिसिस सेवा कार्य करवाया जा रहा है। इस सेवा कार्य के लिए संस्था के सदस्य ही नहीं बल्कि मुंबई, हैदराबाद, पुणे, अमरावती आदि शहरों से भी दानदाता बढ़-चढ़कर सहयोग राशि प्रदान कर रहे हैं। संयोजक उर्मिला शारदा ने बताया कि अभी तक वे 80 डायलिसिस निःशुल्क करवा चुके हैं। लोग अपनी बर्थडे, एनिवर्सरी और खास दिनों पर पार्टी करने के बजाए सेवा कार्य से जुड़ रहे हैं।

अन्नपूर्णा सेवा में दिया योगदान

राँची। स्थानीय माहेश्वरी महिला समिति ने अक्षय तृतीया के दिन प्रत्येक वर्ष की भाति इस वर्ष भी अपने सेवा प्रकल्प के तहत श्री माहेश्वरी सभा द्वारा संचालित अन्नपूर्णा सेवा में कोविड -19 के दौरान असमर्थ लोगों के घर में निःशुल्क भोजन पहुंचाई जाने वाली सेवा में अपनी सदस्यों के सहयोग से सुखा राशन, घी, तेल व मसाला एवं आर्थिक सहयोग के तहत 25 हजार रूपये भेंट किये गये। इसके अन्तर्गत अध्यक्षा विजयश्री साबू, सचिव अनिता साबू, उपाध्यक्ष भारती चितलांगिया, भूतपूर्व अध्यक्षा सुमन चितलांगिया एवं महिला समिति की सदस्याओ ने सभा अध्यक्ष शिवशंकर साबू को यह राशी भेंट की। प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार मारू, सभा के सचिव नरेन्द्र लाखोटिया और इस सेवा कार्य से जुड़े कई कार्यकर्ता उपस्थित थे। उक्त जानकारी प्रदेश सह मीडिया प्रभारी राज कुमार लढ़ा ने दी। गत 14 मई को रांची के सांसद संजय सेठ ने भी इसका अवलोकन कर इस सेवा की सराहना की।

जीत किसके लिए ये हार किसके लिए।
जो आया है वो जाएगा जरूर,
तो फिर इतना अहंकार किसके लिये।

पक्षी बचाओ-जीवन बचाओ अभियान

बून्दी। श्री माहेश्वरी समाज से जुड़े सदस्यो ने गत 4 अप्रैल से 'पक्षी बचाओ जीवन बचाओ' अभियान के तहत बेजुबान परिंदों के लिए पानी के परिण्डे बांधने की शुरुआत की। इस अवसर पर उनके लिये निरन्तर दाना-पानी की व्यवस्था का संकल्प लिया। अभियान के तहत अलग-अलग स्थानों पर आधे दर्जन से अधिक पेड़ो पर परिण्डे बांधकर सदस्यो ने नियमित रूप से परिंदों की सार-संभाल करने व पानी भरने की प्रतिबद्धता दोहराई। वही पूरी ग्रीष्म ऋतु में आगामी दिनों में शहर के विभिन्न स्थानो पर सामूहिक रुप से पाँच सौ परिण्डे बांधने का भी संकल्प लिया। इस दौरान पूर्वी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के प्रदेशाध्यक्ष घनश्याम लाठी, माहेश्वरी पंचायत संस्थान के पूर्व अध्यक्ष जगदीश जैथलिया, महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. के अध्यक्ष संजय लाठी व सचिव नारायण मंडोवरा, रेवतीरमन बिरला, राजेन्द्र बाहेती, कैलाश बहेड़िया, रामकल्याण मंत्री, द्वारका जाजू, जगदीश लड्ढा, विनोद मंत्री, पूर्व पार्षद मनोज मंडोवरा, दिनेश लखोटिया, भगवान मंडोवरा, गौरव बांगड़, नयन बिल्या आदि सदस्य उपस्थित थे।

होली मिलन प्रीति समारोह सम्पन्न

कलकत्ता। स्थानीय माहेश्वरी सभा द्वारा अपनी शाखा एवं संबंधित संस्थाओं के सहयोग से 03 अप्रैल को होली प्रीति सम्मेलन का आयोजन माहेश्वरी भवन के सभागार में किया गया। माहेश्वरी सभा के पदाधिकारियों, शाखा एवं संबंधित संस्थाओं के मंत्री, कार्यकारिणी सदस्यों और समाज बंधुओं ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। माहेश्वरी महिला समिति की सदस्याओं ने मां गवरजा का गुणगान किया। कार्यक्रम का संचालन माहेश्वरी पुस्तकालय के मंत्री संजय बिन्नानी ने किया। सभा के मंत्री पुरषोत्तम दास मूंधड़ा ने सभी सदस्यों का अभिवादन किया। कार्यक्रम के अंत में भूतपूर्व सभामंत्री बृजमोहन बागड़ी एवं वरिष्ठ सभा कार्यकारिणी सदस्य बुलाकीदास मिमानी ने अपने उद्गार व्यक्त किए। सभा के सभापति पुरूषोत्तम दास मिमानी ने सदस्यों को होली की शुभकामनाएं दी। कार्यक्रम को सफल बनाने में उपमंत्री अशोक कुमार चांडक, गोकुल दास मूंधड़ा आदि का योगदान रहा।

निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर

चंद्रपुर। विश्व स्वास्थ दिवस के उपलक्ष्य में जे सी आई चंद्रपुर एलीट द्वारा निःशुल्क मधुमेह जाँच शिविर का आयोजन गत अप्रेल माह में भारती हॉस्पिटल में पैथोट्रीना लैब के संचालक सुशांत नक्षीणे के सहयोग से किया गया। इस अवसर पर बड़ी संख्या मे लोगो ने अपनी जाँच करवाकर लाभ लिया। इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए जे सी आई चंद्रपुर एलीट के अध्यक्ष आर्क आनंद मुंधड़ा, सचिव अनूप काबरा, प्रकल्प निर्देशक परीक्षित सारडा और संस्था के अन्य सदस्य गौरव लाहोटी आदि का योगदान रहा।

कोरोना टीकाकरण शिविर का आयोजन

जोधपुर। माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वावधान में कोरोना टीकाकरण का निःशुल्क कैंप माहेश्वरीजन उपयोगी भवन रातानाडा में सोशल डिस्टेंसिंग के साथ लगाया गया। इस कार्यक्रम में 200 लोगों ने टीकाकरण का लाभ उठाया। अध्यक्ष शिवकन्या धूत ने बताया कि चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सरोज चौधरी की टीम से सहयोग प्राप्त हुआ। सचिव उषा बंग ने बताया कि संभागीय आयुक्त डॉ. राजेश शर्मा, सहायक कलेक्टर व इंसीडेंट कमांडर जोन रेजिडेंसी अपूर्वा परवाल द्वारा निरीक्षण किया गया। समिति संयोजिका डॉक्टर संजीवनी गट्टानी ने बताया कि समाज के मंत्री नंदकिशोर शाह, उपमंत्री हरि गोपाल राठी, कोषाध्यक्ष ओम प्रकाश पुंगलिया, मुरली सोनी, रमेश लोहिया, नीलम मूंदड़ा, अरुणा तापड़िया, छाया राठी, वीणा सोनी, ललिता धूत, प्रदेश अध्यक्ष रामेश्वरी भूतड़ा, सचिव कमला मूंदड़ा, डॉक्टर सूरज माहेश्वरी, आरती भूतड़ा, पूर्व अध्यक्ष प्रभा वैद्य आदि का सहयोग रहा। कोषाध्यक्ष नीलम भूतड़ा ने आभार व्यक्त किया।

इस दुनिया में सफल होने का सबसे अच्छा तरीका है, उस सलाह पर काम करना जो हम दूसरों को देते हैं।

महिला संगठन ने बनाई काउंसलिंग टास्क फोर्स

कानपुर। कोरोना महामारी से गुजर रहे वर्तमान दौर का लोगों के मानसिक स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। इसी को देखते हुए अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन ने एक अनोखी पहल करते हुए राष्ट्रीय काउंसलिंग टास्क फोर्स बनाई है, जिसके द्वारा कोविड से पीड़ित माहेश्वरी परिवार के सदस्य मनोवैज्ञानिक काउंसलिंग प्राप्त कर सकते हैं। राष्ट्रीय अध्यक्ष आशा माहेश्वरी एवं महामंत्राणी मंजू बांगड़ ने बताया कि इसमें हैदराबाद निवासी डॉक्टर अनुराधा जाजू, जो स्वयं एक काउंसलर एवं गर्भ संस्कार विशेषज्ञ हैं, के नैतृत्व में राष्ट्रीय काउंसलिंग पैनल तैयार किया गया है। यह पैनल महामारी के कारण उत्पन्न तनाव, परेशानी, मानसिक उलझन एवं डर से जूझ रहे माहेश्वरी परिवारों को मानसिक संबल देने का कार्य करेगा। पैनल के उद्देश्य, कार्य प्रणाली, काउंसलिंग की आवश्यकता एवं सार्थकता पर राष्ट्रीय कंप्यूटर समिति व स्वास्थ्य समिति द्वारा द्वि दिवसीय बैठक का जूम पर आयोजन 11-12 मई को भी किया गया, जिसमें डॉक्टर अनुराधा जाजू, डॉक्टर अपूर्व शास्त्री, डॉक्टर के. के. वर्मा आदि विशेषज्ञों ने अपने वक्तव्य के माध्यम से जागरूकता बढ़ाने का प्रयास किया। कंप्यूटर समिति की राष्ट्रीय प्रभारी उर्मिला कलंत्री ने इस बैठक का सूत्र संचालन किया। स्वास्थ्य समिति की राष्ट्रीय प्रभारी शिखा भदादा ने आभार व्यक्त किया। इसमें 255 सदस्यों की उपस्थिति रही जिसमें सभी राष्ट्रीय पदाधिकारी गण, सभी भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष, सभी समिति प्रभारी, सभी आंचलिक सह प्रभारी, प्रदेश अध्यक्ष सचिव, कार्यसमिति, प्रदेश संयोजिकाऐं आदि शामिल थीं।

माहेश्वरी भवन में शुरू हुआ क्वारंटाइन सेंटर

वर्धा। कोरोना के इस संकटकाल में एक कदम आगे आकर माहेश्वरी मंडल ने कोरोना संक्रमित मरीजों के लिए सभी सुविधाओं से युक्त महेश क्वारंटाइन सेंटर स्थानीय मेन रोड शहर थाना परिसर स्थित माहेश्वरी भवन में शुरू किया है। नाममात्र शुल्क में इस सेंटर में सुविधाएं उपलब्ध की जा रही है, जिसका शहरवासियों को काफी फायदा होगा। माहेश्वरी मंडल की इस पहल की सराहना की जा रही है। कोरोना का तेजी से फैलाव हो रहा है। ऐसे में कई लोग घरों में ही रहकर इलाज ले रहे हैं। इससे संपूर्ण परिवार के ही कोरोना की चपेट में आने की घटनाएं उजागर हो रही है। कोरोना मरीजों का घरों में रहना खतरे से खाली नहीं है, जिससे माहेश्वरी मंडल ने क्वारंटाईन केंद्र शुरू किया है। सभी सुविधाओं से युक्त यह सेंटर नाममात्र शुल्क में नागरिकों की सेवा के लिए उपलब्ध होने वाला है। माहेश्वरी भवन स्थित इस क्वारंटाइन सेंटर में आने वालों को नाममात्र शुल्क में दोनों समय का भोजन, सुबह का नाश्ता, दो समय चाय की व्यवस्था, दोपहर में ताजे फल की व्यवस्था, आक्सीमीटर की व्यवस्था, वेपोराइजर की व्यवस्था, कूलर साथ ही शाम को संगीत की व्यवस्था भी की गई है। आकस्मिक सेवा का भी शुभारम्भ किया गया है। इस सेवा कार्य के लिए गणेश काकानी, सतीश पनपालिया, मोहित चांडक, शुभम चांडक, सुनील राठी, संजय मोहता प्रयासरत हैं।

कविता

रामगोपाल मूंदड़ा
बैंगलोर

कोरोना को भस्म करो

कोरोना को खत्म करो
कोरोना को भस्म करो...
भारत विश्व विजेता बनकर
कोरोना को खत्म करो
जो राफेल आए सेवा में
कोरोना को भस्म करो
विकट परिस्थितियां पैदा करके
जन जन को पीड़ा पहुंचा कर
बड़े-बड़े परिवार उजाड़ कर
लाखों को पीड़ा पहुंचा कर
शर्म न आई तुमको अब तक
तू तूफान बनकर छाया जग में
विश्व युद्ध से भी आगे बढ़कर
दुनिया में विनाश फैलाया
लाखों कर रहे चीख पुकार
पूर्ण विश्व में हाहाकार
बच्चे बूढ़े और जवान
कोरोना चपेट में हुए लाचार
कोरोना बना विश्व का काल
नहीं थम रहा तेरा काल
अब...
नई खोज और नई दवा
कोरोना की अब निकली हवा
सख्ती जब लाएगा देश
कोरोना के तब नहीं बचेंगे अवशेष
क्रियाकरम कर कोरोना का
दूर जमीं में दफन करो
ऐसी पहल बना लो हम तुम
भारत विश्व विजेता बन कर
अमन चैन अपना कर
शांतिपथ लाना है अब
जो राफेल आए सेवा में
कोरोना को भस्म करो
अमन चैन अपनाओ

जो दौड़ कर भी नहीं मिलता 'वही संसार' है जो बिना दौड़े मिल जाता है 'वही परमात्मा' है।

मिसेज इंडिया इंटरनेशनल सिद्धि जोहरी द्वारा किया गया सेवा कार्य

जोधपुर। सेवा ग्रुप 'जे बॉयज' की 'हर बच्चा हो खुश और न रहे भूखा' नेक मुहिम के तहत मिसेज इंडिया इंटरनेशनल सिद्धि जौहरी के नेतृत्व में सेवा की गई । ग्रुप के मुख्य संयोजक ई. राहुल विश्नोई ने बताया कि अध्यक्ष ई. नरेश पुरोहित के आह्वान पर 'जे बॉयज' द्वारा कोरोना माहमारी के इस कठिन वक्त में जोधपुर के विभिन्न जगह पर जरूरतमंद लोगो को N-95 मास्क, सेनिटाइजर, राशन सामग्री, खाना इत्यादि वितरित किए जा रहे है। उसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए आज ई. राहुल विश्नोई के नेतृत्व एवं मिसेज इंडिया इंटरनेशनल 2019 सिध्दि जौहरी के सहयोग से वसुंधरा हॉस्पिटल के निकट निर्धन मासूम बच्चों और जरूरतमंद लोगों को दाल, उपमा, सब्जी और रोटी आदि वितरित किये गए। इसके साथ ही निर्धन वर्ग के मासूम बच्चों की खुशियों के लिए टॉफियाँ और वेफर भी वितरित किये गए। आयोजन में सिध्दि जौहरी, प्रेरणा त्रिवेदी, मैना व्यास, विशाल पांडे, हनीश मेहरा, संतोष शर्मा, अधिवक्ता नितिन पाल रामावत, अभय पुरोहित आदि कई ग्रुप सदस्य उपस्थित थे।

आर्थिक मदद में आगे आया काल्या ट्रस्ट

गुलाबपुरा। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा काल्या परिवार द्वारा मानव सेवार्थ संचालित 'श्री बसन्तीलाल मनोरमा देवी काल्या फाउंडेशन' के सहयोग से कोरोना महामारी की इस विपदा की घड़ी में कोविड पॉजिटिव जरूरतमंद माहेश्वरी समाजजनों को चिकित्सा सहायता के रूप में आर्थिक सहयोग प्रदान किया जा रहा है। इसके अन्तर्गत उनके बैंक खाते में 2000 रूपये की आर्थिक सहायता सीधे जमा की जा रही है। इस हेतु दिए गए लिंक HTTP://ABMYS.IN/COVID21/ पर जानकारी प्रेषित की जा सकती है। अल्प समय में ही 150 से अधिक समाज बंधुओं के आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। जल्द ही सहायता राशि उनके बैंक खाते में जमा कराई जा रही है। अधिक जानकारी के लिये राजकुमार काल्या - राष्ट्रीय अध्यक्ष तथा आशीष जाखोटिया - राष्ट्रीय महामंत्री से सम्पर्क किया जा सकता है।

परिवार के साथ हमेशा बने रहें क्योंकि वही वो एकमात्र जगह है जहां हमें हमारी सारी कमियों के साथ स्वीकार किया जाता है।

महिला संगठन ने प्रारम्भ किया सेवा अभियान

इंदौर। कोरोना महामारी के चलते कई समाज बंधु आर्थिक परेशानी में आ गए थे, ऐसे में मेघदूत माहेश्वरी महिला संगठन इंदौर ने समाज के जरूरतमंद समाजजनों को सहयोग करने का निर्णय लिया। इसके अन्तर्गत अभी तक 5 परिवारों को लगभग 4 महीने का राशन प्रदान किया गया। संगठन द्वारा जिन परिवारों को सहयोग किया गया है उनका नाम गुप्त रखने का भी निर्णय लिया गया। यह सेवा अनवरत जारी है। इसके अतिरिक्त इंदौर जिला माहेश्वरी संगठन के सहयोग से कोरोना पीड़ित होम क्वॅरिंटाइन समाजजनों के लिए लगभग 80 निःशुल्क टिफिन की व्यवस्था कराई गई। उपरोक्त जानकारी संगठन अध्यक्ष सुलोचना मंत्री एवं सचिव नेहा माहेश्वरी ने दी।

अमेरिका की फेयरफील्ड यूनिवर्सिटी ने हेमंत माहेश्वरी को कंप्यूटर साइंस की डिग्री प्रदान की

इंदौर। समाज के लिए गौरव की बात है कि अमेरिका की फेयरफील्ड यूनिवर्सिटी ने हेमंत माहेश्वरी को कंप्यूटर साइंस की उपाधि से सम्मानित किया गया है। आप गिरीश माहेश्वरी के सुपुत्र एवं सिटी ब्लास्ट के वरिष्ठ पत्रकार मोहनलाल मंत्री के पोते हैं। आप अमेरिका यूनिवर्सिटी में पिछले चार वर्षों से अध्ययन कर रहे थे। कंप्यूटर साइंस की पढ़ाई पूर्ण होने पर यूनिवर्सिटी ने उन्हें यह डिग्री प्रदान की है, इस मौके पर उनके नाना लक्ष्मी नारायणजी बाहेती, वह दादा दादी ने हर्ष व्यक्त किया।

अंतिम संस्कार में सहयोगी बना श्रीमती अयोध्या बालूराम जाजू ट्रस्ट

भीलवाड़ा। जरूरतमंद परिवारों में मृत्यु उपरांत हिंदू रीति-रिवाज से दाह संस्कार करने हेतु घी व लकड़ी सहित अन्य सामग्री श्रीमती अयोध्या बालूराम जाजू ट्रस्ट निःशुल्क उपलब्ध कराएगा। ट्रस्ट के पदाधिकारी सुरेश जाजू व गौरव जाजू ने बताया कि कोरोना व अन्य बीमारी से मृत्यु होने पर ट्रस्ट सदस्य रामगोपाल अग्रवाल से मो. 94141 15674 व दिलीप गोयल से मो. 94141 15554 पर संपर्क किया जा सकता है। कोरोना काल के पश्चात भी निःशुल्क दाह संस्कार सेवा निर्धन परिवारों के लिए जारी रहेगी। ट्रस्ट के रामप्रसाद जाजू ने बताया कि ट्रस्ट कमजोर वर्ग के प्रतिभावान विद्यार्थियों को आर्थिक सहायता करेगा व रोगियों को निःशुल्क दवा भी उपलब्ध कराई जाएगी। ट्रस्ट के अध्यक्ष बाबूलाल जाजू ने बताया कि ट्रस्ट पर्यावरण संरक्षण, निःशुल्क भोजन सहित अन्य जनहित के कार्य भी करेगा।

कोरोना में शुभ विवाह का आयोजन

रूपनगढ (ज़िला अजमेर)। समाज सदस्य मुकेश मोदाणी के छोटे भाई राकेश मोदाणी की सुपुत्री स्वाति मोदाणी का शुभ विवाह सुनील बिदादा के सुपुत्र शुभम बिदादा के साथ गत 30 अप्रैल को स्वयं के आवास पर कोविड गाइडलाइन की पालना करते हुये विवाह संपन्न किया। इस विवाह में दोनों पक्षों की तरफ़ से कोरोना गाईड लाईन के अनुसार 48 परिजनों ने मिलकर विवाह संपन्न किया गया। इसमें विवाह में आने वाले सभी परिजन व व्यवस्थापकों की आरटीपीसीआर रिपोर्ट अनिवार्य थी। साथ ही वर पक्ष द्वारा रूपनगढ की माधवगौशाला मे ईक्कावन हजार की राशि दी गई व साथ ही रूपश्याम मंदिर में ठाकुर जी की पोशाक व चाँदी के बर्तन दिये गये।

कोरोना के कारण चुनाव रद्द

कोलकाता। स्थानीय माहेश्वरी सभा का चुनाव एव वार्षिकं साधारण अधिवेशन के साथ गत 16 मई को होने वाला था। मनोनीत चुनाव आयोग की 5 सदस्यीय टीम ने कोरोना महामारी को देखते हुए वर्तमान में चुनाव नही करवाने का फैसला सर्वसम्मति से लिया। उसकी सूचना सभा के मंत्री पुरुषोत्तमदास मूंधड़ा को भी दी। सभा ने इस चुनाव और वार्षिक साधारण अधिवेशन को रद्द करने का निर्णय लिया।

न्यायालय के फैसले का किया स्वागत

वर्धा। सर्वोच्च न्यायालय की पाँच न्यायाधीशो की बेंच ने एक ऐतिहासिक निर्णय दिया कि शिक्षा एवं नौकरी में आरक्षण की सीमा को 50 प्रतिशत तक ही सीमित रखा जाये। यह मुद्दा इसलिये उठा था क्योंकि महाराष्ट्र की तत्कालिन भाजपा सरकार ने सभी राजनैतिक दलो को विश्वास में लेकर मराठा समाज को 16 प्रतिशत आरक्षण देकर 50 प्रतिशत की सीमा को तोड दिया था। समाज के कुछ जागरुकजनों ने नागपूर के डॉ. अनिल लद्दड, वर्धा के CA जगदीश चांडक, CA मुरलीमनोहर राठी, विशाल धीरण, राजकुमार जाजू, मुरली लाहोटी, मुकुंद मुंधडा हिंगणघाट आदि के नेतृत्व में इस अन्याय के विरोध में हाईकोर्ट में याचिकायें दाखिल की और सारे महाराष्ट्र में सेव मेरीट सेव नेशन के बैनर तले अभियान चलाया। न्यायालय के इस निर्णय से समाज सहित सामान्य वर्ग में हर्ष व्याप्त है।

अपने अंदर से अहंकार को
निकाल कर स्वयं को हल्का करें,
क्योंकि ऊंचा वही उठता है,
जो हल्का होता है।

रक्तदान शिविर का किया आयोजन

कोलकाता। वृहत्तर कोलकाता माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा हिंदमोटर अंचल के फ्रैंड्स क्लब में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें कुल 33 युवाओं ने रक्तदान करने की इच्छा जाहिर की, जिनमें से 28 लोगो को रक्त दान हेतु उपयुक्त पाया गया। कार्यक्रम का सुचारू रूप से आयोजन करने में कोषमंत्री अनुराग जाजू, राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य सुरेश कोठारी, उपाध्यक्ष सुरेंद्र डागा, प्रचार प्रसार मंत्री विष्णुकांत लखोटिया एवं हिंदमोटर अंचल के युवा अध्यक्ष गणेश झंवर, मंत्री गोपाल भट्टर एवम युवा साथियों का विशिष्ट योगदान रहा। इसमें लायंस क्लब से डॉक्टर की टीम व मोबाइल ब्लड डोनेशन बस का सहयोग प्राप्त हुआ। इसी प्रकार संगठन द्वारा विध्यांचल कॉम्प्लेक्स हावड़ा में भी रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें कुल 18 समाजजनों ने रक्त दान करने की इच्छा जाहिर की जिसमे से 12 लोगो को रक्त दान हेतु उपयुक्त पाया गया।

चिकित्सा उपकरण किए भेंट

बून्दी। माहेश्वरी समाज से जुड़े प्रबुद्धजनों ने 'सेवा परमो धर्म' के संकल्प के साथ कोरोना संक्रमण से संक्रमित होने के उपरांत चिकित्सकीय सलाह के अनुसार अपने घरों में आइसोलेट व उपचाराधीन स्वजातीय मरीजो के लिए विभिन्न चिकित्सा उपकरण भेंट किए। इसके अन्तर्गत जैत सागर रोड़ स्थित माहेश्वरी भवन में एक सादे समारोह में माहेश्वरी पंचायत संस्थान के पूर्व अध्यक्ष जगदीश जैथलिया, जिला माहेश्वरी सभा के पूर्व जिलाध्यक्ष रेवती रमन बिरला व पूर्व महामंत्री द्वारका जाजू, महेश क्रेडिट को-ऑपरेटिव सोसायटी लि. अध्यक्ष संजय लाठी व सचिव नारायण मंडोवरा, जगदीश लड्ढा आदि ने सेवाभावी व अप्रत्यक्ष भामाशाहों के सहयोग से एक मेडिकल पलंग मय किट, एक व्हील चेयर, दस प्लस ऑक्सिमिटर, दो थर्मल स्केनर व दो रक्तचापमापी यंत्र माहेश्वरी पंचायत संस्थान के अध्यक्ष भगवान बिरला को समाज के लिए समर्पित किए। इस दौरान पंचायत उपाध्यक्ष संजय मंडोवरा व शिव तोतला, भवन के प्रबंधक गौरव माहेश्वरी आदि उपस्थित रहें।

कोरोना के दौर में अंतिम संस्कार में योगदान

पंढरपूर (महाराष्ट्र)। समाजसेवी सूरज राठी दिखने में भले ही साधारण हों, लेकिन वह आज एक सच्ची भावना से लोगों की सेवा में लगे हुये हैं। हिंदू संस्कृति के नियमों के अनुसार मृत व्यक्ती को पानी पिलाया जाता है। मगर कोरोना से दिवंगत होने पर पानी पिलाना तो दूर घरवाले भी हाथ तक लगाने आगे नहीं आते। ऐसे में भी सूरज न सिर्फ लाश को उठाते हैं बल्कि उस का औपचारिक रूप से अंतिम संस्कार भी करते हैं। इतना ही नहीं उसके परिवार के अन्य सदस्यों को भी यथोचित सहयोग देते हैं। यह सब सेवा वे अपने मोबाईल नंबर 8329441860 व्हाट्सअप, फेसबुक जैसे सोशल मीडिया आदि के माध्यम से दे रहे हैं।

कोरोना महामारी में सेवा गतिविधि

छिंदवाड़ा। स्थानीय समाज के दो युवा महेंद्र - श्रीकृष्ण जाखोटिया एवं आशुतोष ओमप्रकाश डागा द्वारा छिंदवाड़ा मे दीनदयाल अंत्योदय रसोई का गाँधी गंज छिंदवाड़ा मे संचालन किया जाता है। इसके द्वारा सत्र 2020 मे कोरोना काल के प्रथम दौर में 23 मार्च 2020 से 20 मई 2020 तक लगभग 11 लाख लोगो को घर घर भोजन उपलब्ध कराया गया था। इसी श्रंखला में सत्र 2021 मे भी कोरोना की दूसरी लहर को देखते हुए लगभग 40 से 45 हज़ार लोगो को भोजन उपलब्ध कराया गया। इसके साथ ही जिस व्यक्ति को दवाईयों की जरुरत है उन्हें दवाईयाँ और इंजेक्शन भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं।

जूम एप पर हनुमान चालीसा पाठ

इंदौर। माहेश्वरी डीडवाना महिला मंडल की अध्यक्षा डॉ. वीणा सोनी एवं सचिव आशा सिंगी ने बताया कि वर्तमान में सभी परिजन मानसिक शारीरिक एवं आर्थिक परेशानी से जूझ रहे हैं। इसी को मद्देनजर रख संस्था द्वारा जूम मीटिंग पर सामूहिक हनुमान चालीसा के पाठ का आयोजन किया गया एवं भगवान से सभी के स्वास्थ्य की कामना की गई। जूम प्रांगण में विशेष रूप से मंजू भलिका, उषा काबरा, शशि पटवा, शोभा पसारी, सुषमा मालू आदि उपस्थित थे।

टैंकर से पौधों को दे रहे पानी

जोधपुर। एक सामान्य पेड़ प्रतिवर्ष 700 केजी ऑक्सीजन का उत्सर्जन करता है एवं 20 टन कार्बन डायआक्साईड को सोखता है। भविष्य में आने वाली ऑक्सीजन की कमी की विपदा को टालने के लिए संगठन की अध्यक्षा सुशीला बजाज ने एक महत्वपूर्ण निर्णय लिया। पर्यावरण को बचाने के लिए इस भीषण गर्मी को देखते हुए एक गांव से दूसरे गांव के बीच लगे पौधों को टैंकरों से सिंचने का कार्य शुरू किया। संतों के सानिध्य में इस कार्यक्रम की शुरूआत की। सचिव गीता सोनी ने बताया कि यह सेवा दो महिने तक चलेगी और इसमें 500 टैंकर का लक्ष्य बनाया हुआ है। उपाध्यक्ष बबीता चाण्डक व ललिता धूत ने बताया कि इसमें नीतू करणानी, कुसुम राठी, सरोज मूंदड़ा, पूष्पा सोनी, शोभा डागा, गुलाबी बजाज, निर्मला सोनी सहित समस्त सदस्याओं का सहयोग रहा।

काल्या के प्रयास से ऑक्सीजन प्लांट व रेमडेसिविर की हुई उपलब्धता

गुलाबपुरा। कोरोना वायरस की इस आपदा की घड़ी में नगर पालिका गुलाबपुरा चेयरमैन सुमित काल्या के प्रयासों से शुरु हुआ गुलाबपुरा चिकित्सालय में आक्सीजन सुविधा युक्त कोविड़ सेंटर मरीजो के लिए संजीवनी साबित हो रहा है। श्री काल्या द्वारा ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना के प्रयास भी सफल हुए हैं जल्द ही गुलाबपुरा चिकित्सालय में ऑक्सीजन प्लांट की स्थापना भी की जा रही है जिससे मरीजों को राहत मिलेगी। शासन के सहयोग से इनकी स्थापना के साथ ही एक प्लांट श्री काल्या के प्रयासों से जल्द ही जवाहर फाउंडेशन के सहयोग से स्थापित किया जा रहा है। उन्होंने अपने व्यक्तिगत प्रयासों से रेमडेसिविर इन्जेक्शन भी उपलब्ध करवाये हैं।

राख की कई परतों के नीचे तक देखा,
पर अफसोस वो गुरुर वो रुतबा,
वो पद कहीं नजर नहीं आया जो
सारी उम्र ओढ़े बैठे थे।

चार हजार से अधिक तक कोरोना संक्रमित परिवारों को पहुंचाया निःशुल्क भोजन

इंदौर। कोरोना काल में संस्था प्रेम किरण के 3 युवाओं ने सेवा का अनूठा जज्बा पेश करते हुए कोरोना संक्रमित परिवारों तक भोजन पहुंचाया यह सेवा अभी भी निरंतर जारी है। संस्था के युवा नीलेश भूतड़ा, मधुसूदन भलिका, दिनेश सारडा ने तकरीबन 1 महीने पहले जब कोरोना अपने पैर पसार रहा था तब स्वर्गीय श्री बंसीलाल भूतड़ा 'किरण' से प्रेरणा लेकर सेवा कार्य शुरू किया था। परिवार में जब कोई महिला संक्रमित हो जाती है तो भोजन का संकट आता है इसलिए यह तय किया कि माहेश्वरी परिवारों में यदि कोई संक्रमित पाया जाता है तो पूरे परिवार का भोजन उनके घर तक पहुंचाया जाएगा। इसमें 150 परिवारों से सेवा शुरू हुई, कारवां बढ़ता चला गया, तकरीबन 40 दिन से जारी यह सेवा अभी तक 4048 टिफिन सेवा तक पहुंच चुकी है। इंदौर जिला माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष राजेश मुंगड़ व मंत्री विजय लड्डा के साथ ही समस्त क्षेत्रीय संस्थाओं व समाजजनों का सहयोग प्राप्त हुआ।

एक माह तक मनाऐंगे महेशोत्सव

झारखंड । झारखंड बिहार प्रादेशिक माहेश्वरी सभा ने महेश नवमी इस बार ज़ूम द्वारा सम्पूर्ण प्रदेशवासियों, महिला एवं युवा संगठन के साथ पूरे एक महीने त्योहार के रूप में मनाने का विचार किया है। संगठन मंत्री आदित्य मूंदड़ा ने बताया कि इस बार कोविड 19 को ध्यान में रखते हुये महेश नवमी पूरे एक महीने ऑनलाइन मनाया जायेगा। इसको हम लोगो ने चार भागों में बांटा है, तैयारी पर चर्चा, खेल से मेल, गाना-बजाना, नवमी पूजन भजन जो हर सप्ताह ज़ूम द्वारा आयोजित किया जायेगा। इसमें सभी वर्गों के लिये कार्यक्रम होगा। इसमें बचपन से लेकर पचपन के ऊपर वाले भी भाग ले सकते हैं। इसमे सभी प्रकार के मनोरंजक कार्यक्रम होंगे। जैसे गाना, भजन, चुटकुले, मोमबती जलाकर बुझाना, बलून फुलाकर फोड़ना, डांस इत्यदि। इस पूरे कार्यक्रम का प्रारूप एवं भार खुद संगठन मंत्री ने लिया है।

केतन आयआयएम से एमबीए

यवतमाल (महाराष्ट्र)। केतन लक्ष्मीकांत मूंदड़ा सुपौत्र श्री सत्यनारायण मूंदड़ा ने देश के सर्वश्रेष्ठ प्रबंधन संस्था आयआयएम अहमदाबाद से एमबीए की उपाधि प्राप्त की है। इसके पूर्व वे आयआयटी खड़गपुर से बी.आर्क. की उपाधि प्राप्त कर चुके हैं। आयआयएम से पढ़ाई के दौरान उन्हें पदमभूषण श्रीमती राजश्री बिड़ला द्वारा प्रतिष्ठित "श्री आदित्य विक्रम बिड़ला स्कॉलर अवार्ड" (छात्रवृत्ति) से सम्मानित किया गया। वर्ष 2020-21 में "बेस्ट ऑल राउण्डर पीजीपी स्टडेन्ट के तौर पर केवी श्री निवास गोल्ड मेडल पुरस्कार से सम्मानित हुए तथा उन्हें जेट एज सिक्युरिटीज प्रायवेट लिमिटेड इंडस्ट्री इंडिया मेरीट स्कॉलरशिप भी प्राप्त हुई।

बाल साहित्य प्रतियोगिता के परिणाम घोषित

सलूंबर। बाल साहित्य के लिए समर्पित सलिला संस्था, सलूंबर-राजस्थान द्वारा प्रतिवर्ष अखिल भारतीय बाल साहित्य लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। सलूंबर के स्वतंत्रता सैनानी श्री औंकारलाल शास्त्री की स्मृति में आयोजित इस बाल साहित्य प्रतियोगिता को इस वर्ष आत्मकथा विधा पर केंद्रित किया गया। जिसके तहत देश भर से कुल 45 प्रविष्टियां प्राप्त हुई। प्राप्त प्रविष्टियों का मूल्यांकन प्रख्यात साहित्यकार सुमन बाजपेयी (पूर्व संपादक चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट, दिल्ली), अनिल जायसवाल (संपादक, पायस एवं पूर्व संपादकीय टीम, नंदन, दिल्ली) व प्रकाश तातेड़ (सह संपादक, बच्चों का देश, राजसमंद) की तीन सदस्यों की चयन समिति ने किया। सलिला संस्था की अध्यक्ष डॉ. विमला भंडारी ने बताया कि चयनित नौ बाल आत्मकथाओं पर पुरस्कारों की घोषणा की गई। प्रथम पुरस्कार विजेता- उषा सोमानी, चित्तौड़गढ़-राजस्थान (चॉकलेट की आत्मकथा) को 3000/- की पुरस्कार राशि के रूप में प्रदान किया गया। द्वितीय पुरस्कार विजेता- भगवती प्रसाद गौतम, कोटा तृतीय पुरस्कार विजेता- सरिता गुप्ता, दिल्ली है। अन्य 6 श्रेष्ठ आत्मकथाओं को भी पुरस्कृत किया गया।

बागडी को मिली अंतरराष्ट्रीय सदस्यता

नागपुर। प्रख्यात समाजसेवी, लेखक व शिक्षाविद् शरद गोपीदासजी बागडी को 'वर्ड कान्सटिट्युशन एंड पार्लियामेंट असोसिएशन, यूएसए' द्वारा अंतरराष्ट्रीय सदस्यता प्रदान की गई है। इस प्रतिष्ठित संस्था का मुख्यालय अमेरिका में है। यह एक अंतरराष्ट्रीय संस्था है जिसका कार्य दुनिया के 190 देशों में है। संस्था के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष गुसीपीस प्राईस अवार्ड प्राप्त प्रोफेसर डॉ.ग्लैन टी मार्टिन है जो रेडफोर्ड युनिवर्सिटी, यूएसए के संस्थापक व अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिलोसोफर, रिसर्चर, लेखक, प्रौफेसर हैं एवं अमेरिका व दुनिया के अनेकों संस्थाओं के प्रशासनिक पदों पर कार्यरत है। वर्ड कान्सटिट्युशन एंड पार्लियामेंट असोसिएशन संस्था अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दुनिया को बेहतर बनाने के लिए दुनिया भर मे विभिन्न क्षेत्रों में कार्य करती हैं और इसकी सालाना अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस दुनियाभर के देशों व भारत मे होती हैं। अध्यक्ष प्रौफेसर डॉ.ग्लैन टी मार्टिन ने ईमेल द्वारा श्री बागड़ी को सदस्यता पत्र व सदस्यता सर्टिफिकेट प्रेषित किया।

कोरोना काल में फिर बने सहयोगी

भीलवाड़ा। संजय कालोनी माहेश्वरी समाज संस्थान द्वारा कालोनी एवं समाज बंधुओं के सहयोग से निर्मित तीन मंजिला माहेश्वरी भवन जिसमें 25 कमरे मय लेट बाथ एवं ए.सी.के एवं 2 हाल विद्यमान हैं का उपयोग सामाजिक कार्यों के अतिरिक्त जनहिताय कार्यों में भी किया जाता रहा है। संस्थान अध्यक्ष प्रहलाद नुवाल एवं मंत्री कैलाशचंद्र मूंदड़ा ने बताया कि संस्थान द्वारा कोविड-19 वैश्विक महामारी में संस्थान की ओर से 01 अप्रैल 2020 को राज्य सरकार को 1,01,111/- रुपए का सहयोग प्रदान किया गया। संस्थान द्वारा पूर्ण भवन मई 2020 से सितम्बर 20 तक स्थानीय प्रशासन को कोविड व्यवस्थाओं हेतु उपलब्ध कराया गया था। इसी दोरान संस्थान द्वारा संजय कालोनी आर्थिक रूप से कमजोर माहेश्वरी परिवारों को यथासंभव भोजन सामग्री का वितरण भी किया गया। साथ ही इस समयावधि में सामाजिक कार्यों हेतु भवन उपयोग पेटे प्राप्त सहयोग राशि पूर्ण रूप से पुनः लौटाई गई। पुनः कोविड -19 की द्वितीय लहर प्रकोप की रोकथाम में सहयोग हेतु पूर्ण संस्थान भवन 16 अप्रैल 2021 से पुनः क्वारंटीन सेंटर हेतु उपलब्ध कराया गया है। इस समयावधि में सामाजिक कार्यों हेतु भवन उपयोग पेटे प्राप्त सहयोग राशि भी पूर्ण रूप से पुनः लौटाई जा रही है।

निःशुल्क परिवार स्वास्थ्य बीमा योजना

जयपुर। महासभा एवं प्रदेश के पदाधिकारी कैलाश सोनी, जुगल किशोर सोमानी, मधुसूदन बिहानी एवं रामअवतार आगीवाल आदि की प्रेरणा, मार्गदर्शन से जयपुर जिला माहेश्वरी सभा समिति के अध्यक्ष नवल किशोर झंवर अन्य पदाधिकारियों की सहमति से निर्णय लिया कि राजस्थान सरकार की प्रायोजित मुख्यमंत्री चिरंजीवी स्वास्थ बीमा योजना के तहत जयपुर जिला के उन सभी माहेश्वरी परिवारों (जिनकी सालाना पारिवारिक आय दो लाख रुपए तक है) के लिए ज़्यादा से ज़्यादा रजिस्ट्रेशन आवेदन स्वीकार कर उन्हें निःशुल्क परिवार स्वास्थ्य बीमा उपलब्ध कराया जाये। जिला सभा के निर्णय अनुसार राजस्थान सरकार की उपरोक्त योजना में प्रति परिवार बीमा प्रीमियम राशि रूपए 850/- का भुगतान भी उपरोक्त श्रेणी के माहेश्वरी परिवारों के लिए जयपुर जिला माहेश्वरी सभा समिति द्वारा किया जा रहा है। इसमें पंजीकृत किये गये सभी परिवारों को 1 मई 2021 से 30 अप्रैल 2022 तक की अवधि के लिए 5 लाख रूपये प्रति परिवार का स्वास्थ्य बीमा राशि कवरेज लागू हो गया है।

कविता

प्रेरणा पुरोहित मंत्री
जयपुर

देवी स्तुति

भुवनमोहिनी भगवती, ले लो फिर अवतार।
रोग शत्रु का नाश कर, जन जन को दो तार।।

सम्वेदन को लीलता, क्रूर क्लिष्ट यह रोग।
मानवता न खत्म हो, दो अब ऐसा योग ।।

विकट समय है, कर रही, जगती हाहाकार।
जगजननी जगत्राणिके, अब हो उपसंहार।।

राजा भी अब सो गया, स्वार्थ बढ़ा चहुँओर।
लालच इतना भर गया,जिसका ओर न छोर।।

करूँ अम्बिके प्रार्थना, रखो प्रजा की आन।
अपने हर कर्तव्य का, राजा को हो भान।।

धनी, दीन सब रो रहे, सुन लो हे जगदम्ब।
विनती ये स्वीकार लो, कष्ट हरो अविलंब।।

जन जन को आरोग्य हो, दुःख कोई ना पाय।
सुख उपजे चहुँओर अब, माँ समृद्धि हो जाय।।

बहुत परीक्षा हो चुकी, पूर्ण हुआ अब दंड।
धरो रूप अब सौम्य माँ, तज दो रूप प्रचंड।।

निश दिन विनती सब करें, माता ध्यान लगाय।
कष्ट हरो नारायणी, हम सब आस लगाय ।।

आरवी साइंस ओलंपियाड में भी अव्वल

इंदौर। समाज सदस्य वैभव और आंचल लोहिया की सुपुत्री आरवी लोहिया ने साइंस ओलंपियाड फाउंडेशन 2020 में जनरल नॉलेज में इंटरनेशनल रैंक 1 तथा मैथ्स में इंटरनेशनल रैंक 5 हासिल की। इसके साथ ही उन्हें इंटरनेशनल गोल्ड मेडल्स एवं अन्य पुरस्कार भी प्राप्त हुए। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया ।

अपनों के साथ रिश्ते... जतायें नहीं निभाये जाते हैं..

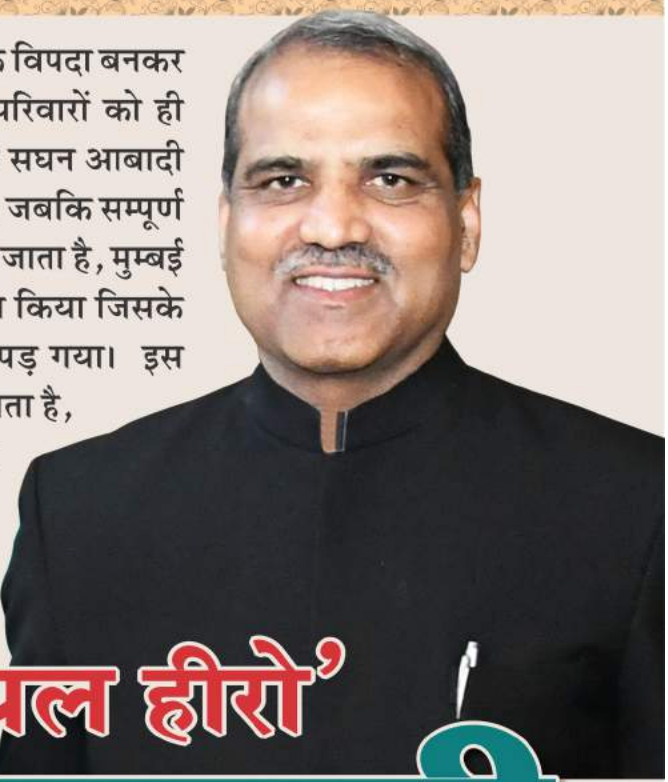

कोरोना महामारी की दूसरी लहर हमारे देश में अत्यंत भयानक विपदा बनकर आई है, जिसने न सिर्फ परिवारों के सदस्यों बल्कि कई परिवारों को ही अकाल मृत्यु का ग्रास बना दिया। ऐसे में भी देश की सबसे सघन आबादी वाला महानगर मुम्बई अन्य शहरों की तरह परेशान नहीं हुआ, जबकि सम्पूर्ण महाराष्ट्र प्रदेश इससे सबसे अधिक प्रभावित था। इसका श्रेय जाता है, मुम्बई महानगरपालिका को जिसने एक ऐसी योजना बनाकर काम किया जिसके सामने कोरोना को भी घुटने टेकने के लिये मजबूर होना पड़ गया। इस योजना को तैयार करने में अहम भूमिका निभाने का श्रेय जाता है, मुम्बई महानगर पालिका के एडिशनल म्यूनिसिपल कमिश्नर तथा माहेश्वरी समाज के गौरव IAS सुरेश काकाणी को।

कोरोना काल में मुंबई के 'रियल हीरो' सुरेश काकाणी

जब प्रथम बार गत वर्ष देश में कोरोना महामारी ने दस्तक दी थी, तो उसने सबसे अधिक संक्रमण ही मुम्बई महानगरी में फैलाया था। न सिर्फ झुग्गियाँ बल्कि कई पाश इलाके यहाँ तक की कई बड़ी हस्तियाँ भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहीं थीं। इसके बाद जब कोरोना की दूसरी लहर का इस बार आगमन हुआ, तो चिंता का सबसे बड़ा केन्द्र फिर मुम्बई ही था, क्योंकि जब देश के कई प्रदेश इस भीषण आपदा से कराह उठे और स्वयं महाराष्ट्र प्रदेश इस महामारी से सबसे अधिक प्रभावित था, तो महानगर मुम्बई को बचा पाना अत्यंत कठिन ही था। कारण यह देश का सबसे बड़ा व सघन आबादी वाला महानगर है । वास्तव में देखा जाऐ तो इससे खतरा ही सघन बस्ती को ज्यादा होता है, जिसका उदाहरण मुम्बई में कोरोना की प्रथम लहर थी। लेकिन इस बार सभी को ऐसा लगा जैसे करिश्मा ही हो गया। जब पूरा देश यहाँ तक कि छोटे-छोटे गाँव तक कोरोना महामारी से बुरी तरह प्रभावित हो रहे थे, ऐसे में भी मुम्बई ने कोरोना की इस दूसरी लहर को न सिर्फ शिकस्त दी बल्कि मात ही दे डाली। इस सफलता का श्रेय मुम्बई महानगर पालिका की योजनाबद्ध तैयारी 'मुम्बई मॉडल' को जाता है, जिसका निर्माण करने में अहम भूमिका निभाने वाले 'असली हीरो' हैं, मुम्बई महानगर पालिका के एडिशनल म्यूनिसिपल कमिश्नर सुरेश काकाणी।

ऐसे की कोरोना से जंग की तैयारी

कोरोना महामारी ने इसकी प्रथम लहर में मुम्बई की समस्त व्यवस्थाओं को हिलाकर रख दिया था। ऐसे में मुम्बई महानगर पालिका ने इससे सबक लिया। ऐसे समय में जब प्रथम लहर के बाद सम्पूर्ण राष्ट्र की कोरोना से निपटने की तैयारी ठंडे बस्ते में चली गई थी, तब से ही महानगर पालिका ने अपने एडिशनल म्यूनिसिपल कमिश्नर सुरेश काकाणी के नैतृत्व में इसकी दूसरी लहर से निपटने की तैयारियाँ प्रारम्भ कर दी थी। श्री काकाणी ने अपनी दूरदर्शिता से यह एहसास सभी को करवा दिया था कि यदि समय रहते इसकी दूसरी लहर से निपटने की तैयारी प्रारम्भ नहीं की तो एकदम विपदा आने पर मुम्बई को सम्भालना सम्भव ही नहीं हो पाऐगा। इसके लिये श्री काकाणी ने अपनी टीम के साथ मिलकर आपदा को एक अवसर बनाने के लिये 10 मुख्य

बिन्दुओं पर आधारित 'कोविड कन्ट्रोल मॉडल' बनाया। इसमें कोरोना की प्रथम लहर से मिले अनुभवों के आधार पर कमियों तथा सिस्टम की व्यवस्थाओं की समीक्षा की गई। दूसरा सबसे बड़ी योजना कोरोना टेस्टिंग को लेकर बनाई गई, जिसमें प्रतिदिन 20 से 50 हजार तक की टेस्ट की व्यवस्था की गई, साथ ही मॉल, रेलवे स्टेशन, बस डिपो, टूरिस्ट स्पॉट आदि पर भी टेस्टिंग की व्यवस्था की जिससे छुपे हुए तथा बाहर से आये ऐसे मामलों पर नियंत्रण किया जा सके, जो संक्रमण फैला सकते हैं। प्रथम लहर में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी महसूस हुई थी। अतः ऑक्सीजन बेड तथा वेन्टीलेटर की व्यवस्था को 60 प्रतिशत तक पहले ही बड़ा लिया गया तथा विशेष परिस्थिति के लिये और भी व्यवस्था रखी। सबसे बड़ी तैयारी ऑक्सीजन सप्लाय तथा प्रबंधन की पूर्वानुमान के आधार पर ही कर ली गई। बेड मैनेजमेंट सिस्टम का विकेन्द्रीकरण करते हुए वार्ड वार रूम की व्यवस्था की और अस्थायी रूप से पर्याप्त कर्मचारियों की व्यवस्था की। अस्पतालों पर दबाव न पड़े इसके लिये होम आईसोलेशन व्यवस्था और इसके फॉलोअप की व्यवस्था तैयार की। नागरिकों में घबराहट न उत्पन्न हो तथा उनमें प्रशासन के प्रति विश्वास बढ़े इसके लिये 'ट्रांसपेरेन्ट मेसेजिंग सिस्टम' तैयार कर सुदृढ़ प्रशासनिक व्यवस्था तैयार की।

सर्वोच्च न्यायालय ने भी सराहा

इन सब व्यवस्थाओं का नतीजा यह रहा कि जहाँ कोरोना की प्रथम लहर ने मुम्बई महानगर में आतंक मचा दिया था, वहाँ इस दूसरी लहर में सभी भय मुक्त ही रहे। ऐसे दौर में जब महाराष्ट्र राज्य सम्पूर्ण राष्ट्र में कोरोना संक्रमण में शीर्ष पर चल रहा था, ऐसे में भी यहाँ संक्रमण अत्यंत नियंत्रण में ही रहा। अपने उत्तम प्रशासन, कुशल मार्गदर्शन, कौशलमय संगठन शक्ति एवं साहसिक निर्णय से कोरोना की आपदाओं को नियंत्रित कर श्री काकाणी ने असंभव को संभव कर दिखाया। इसका नतीजा यह रहा कि देश के सर्वोच्च न्यायालय ही नहीं बल्कि केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री तक ने मुंबई में कोरोना से निपटने के लिये की गई तैयारियों की प्रशंसा की है। उन्होंनें अन्य राज्यों को भी इससे सीख लेने को कहा। कोरोना काल में कई राज्यों तथा शहरों की व्यवस्था चरमरा गई। सबसे ज्यादा समस्या ऑक्सीजन सप्लाय तथा रेमडेसिविर इंजेक्शन को लेकर आयीं। इन तमाम अव्यवस्थाओं के कारण पीढ़ित पक्षों ने शासन के खिलाफ न्यायालय के दरवाजे खटखटाये और न्यायालय को भी व्यवस्थाऐं सुधारने को लेकर सख्त निर्देश देने पड़ें लेकिन सर्वोच्च न्यायालय के साथ अधिकांश न्यायालयों ने भी सरकारों तथा शासन प्रशासन को मुम्बई मॉडल से सबक लेकर आत्मनिर्भर हो तैयारी करने के लिये कहा।

उड्डयन क्षेत्र में भी निभाई महत्वपूर्ण जिम्मेदारी

वाइस चेयरमैन और प्रबंध निदेशक, महाराष्ट्र एयरपोर्ट डेवलपमेंट तथा चेयरमैन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर, मिहान इंडिया लिमिटेड रहते हुए श्री काकाणी ने इस क्षेत्र में भी जो किया वह मिसाल बन गया। इसके अन्तर्गत आपने शिरडी अंतरर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का सफलतापूर्वक संचालन किया तथा नागपुर हवाई अड्डे को लाभ कमाने वाले हवाई अड्डे में सफलतापूर्वक बदल दिया। भारत सरकार की आरसीएस-उड़ान योजना को सफलतापूर्वक कार्यान्वित करते हुए पुरंदरे (पुणे), अमरावती, चंद्रपुर आदि में हवाई अड्डों का विकास करवाया तथा राज्य के लिए नागरिक उड्डयन नीति का मसौदा तैयार किया। आईएएस के रूप में विभिन्न प्रशासनिक पदों पर कार्यरत नागरिकों और गैर सरकारी संगठनों की

सक्रिय भागीदारी से प्राकृतिक आपदाओं जैसे सूखा, बाढ़ आदि को सफलतापूर्वक संभाला। उज्ज्वल नांदेड़ योजनान्तर्गत जिले के समग्र विकास के लिए विभिन्न गतिविधियां आयोजित की। नवी मुंबई अंतरर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे, मुंबई में मेट्रो रेल, नवी मुंबई और पुणे, मोनो रेल, रेल, मुंबई शहरी परिवहन परियोजना आदि के लिए कैबिनेट प्रस्ताव तैयार किये। मुंबई महानगर क्षेत्र में विभिन्न परियोजनाओं के लिए भूमि अधिग्रहण की सुविधा का सरलीकरण किया। यूएनडीपी द्वारा वित्त पोषित 'महाराष्ट्र डीआरएम कार्यक्रम' के राज्य परियोजना अधिकारी के रूप में राज्य में कार्यक्रम के सुचारू और सफल कार्यान्वयन की जिम्मेदारी सम्भाली। अपनी सफलतापूर्ण कार्यशैली के कारण श्री काकाणी महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के हाथों स्वच्छ भारत तथा सर्वश्रेष्ठ कलेक्टर का पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं। कानून और न्याय और इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री रविशंकर प्रसाद के हाथों डिजिटल इंडिया राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त कर चुके हैं। मुंबई महानगर क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्यालय के लिए राजीव गांधी प्रशासनिक उत्कृष्टता पुरस्कार प्राप्त किया।

इंजीनियरिंग से तय किया आईएएस का सफर

आमतौर पर आई.ए.एस. करने वाले आर्ट्स विषय लेते हैं, लेकिन श्री काकानी ने इंजीनियरिंग के क्षेत्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त की और इसके द्वारा वे ऊंचे वेतन वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनी की नौकरी भी कर सकते थे, इसके बावजूद उन्होंने राष्ट्र सेवा के लिये आई.ए.एस. को ही अपना लक्ष्य बनाया। कमरगाँव जिला वाशिम (महाराष्ट्र) में श्री मन्नालाल काकाणी के यहाँ जन्मे श्री काकाणी ने कृषि प्रोद्योगिकी महाविद्यालय परभणी से खाद्य विज्ञान में वर्ष 1980-1984 में बी. टेक. तथा वर्ष 1984-1986 में एम.टेक. की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 2006-2008 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले, सीए, यूएसए से एशियाई अध्ययन विषय में एम.ए. की शौकिया रूप से आईएएस के रूप में सेवारत रहते हुए उपाधि प्राप्त की। प्रारम्भ से प्रतिभावान रहने के कारण स्नातक अध्ययन के लिए योग्यता छात्रवृत्ति प्राप्त की। पीजी अध्ययन के लिए रोटरी वर्ल्ड पीस फेलोशिप तथा पीजी स्टडीज के लिए इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च फेलोशिप भी प्राप्त की। एम. टेक (खाद्य विज्ञान) में विशिष्टता के साथ प्रथम स्थान पर रहे। इस दौरान श्री काकाणी वर्ष 2003-2006 तक महाराष्ट्र के उपसचिव रहने के बाद विश्व बैंक के शार्ट टर्म असाइनमेंट के साथ वाशिंगटन डीसी में कार्यरत थे। आईएएस के रूप में अपने कॅरियर में श्री काकाणी इसके अतिरिक्त संयुक्त सचिव, शहरी विकास विभाग, मंत्रालय, मुंबई (2008 से 2013), नगर आयुक्त, मीरा भायंदर नगर निगम (2013 से 2014), मुख्य कार्यकारी अधिकारी, जिला परिषद, सोलापुर (2014 से 2015), कलेक्टर और जिला मजिस्ट्रेट नांदेड़ (2015 से 2017) तथा वाइस चेयरमैन और प्रबंध निदेशक, महाराष्ट्र एयरपोर्ट डेवलपमेंट एंड चेयरमैन एंड मैनेजिंग डायरेक्टर, मिहान इंडिया लिमिटेड (8 मई, 2017 से 6 दिसंबर 2019) रहे हैं। 6 दिसंबर 2019 से आज तक अतिरिक्त नगर आयुक्त महानगर पालिका मुम्बई के रूप में अपनी सफलता पूर्व सेवा दे रहे हैं।

शिक्षा से राष्ट्र सेवा में परिवार भी साथ

आईएएस के अतिरिक्त एक विद्वान के रूप में भी अपनी पहचान रखने वाले श्री काकाणी ने अपने ज्ञान व अपने चिंतन को अपने आप तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसका विस्तार कर राष्ट्र तथा मानवता की सेवा में अपना सदा योगदान दिया। उन्होंने 'नवउदारवाद, भूमि और हिंसक संघर्षः एक केस स्टडी' विषय पर शोध प्रबंध तैयार किया। इसके अतिरिक्त 'भारत में विशेष आर्थिक क्षेत्रों की स्थिति', 'भारत में वैश्वीकरण और सामाजिक संघर्ष', 'भारत में मानवाधिकारों का संरक्षणः भारत के राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की प्रभावशीलता एक महत्वपूर्ण विश्लेषण', 'मुंबई में बम विस्फोट सांप्रदायिक बल क्यों किया', 'भारत-पाकिस्तान संबंध, आर्थिक सहयोग के माध्यम से एक शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व', 'स्टाम्प शुल्क युक्तिकरण' तथा 'महाराष्ट्र में सूखा शमन उपाय' आदि विषयों पर शोधपत्रों का लेखन किया जिनका विभिन्न प्रतिष्ठित राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं में प्रकाशन हुआ है। वर्तमान में आपके परिवार में आपकी धर्मपत्नी ज्योति काकाणी के साथ ही विवाहित पुत्र बी.ई. व एमबीए तक शिक्षित शशांक, पुत्रवधू श्वेता, तथा पुत्री डॉ.गार्गी काकाणी शामिल हैं। सभी श्री काकाणी के पदचिह्नों पर चलते हुए अपनी उच्चशिक्षा तथा मानवीय संवेदनाओं के साथ राष्ट्र तथा मानवता की सेवा के लिये तत्पर हैं।

सम्मानित होंगे माहेश्वरी समाज के 100 कर्मयोगी

भगवान श्रीकृष्ण कर्मयोग के प्रवर्तक और निष्काम कर्म के प्रेरक पुरुषोत्तम हैं। सृजन के विविध आयाम और कर्म की पराकाष्ठा से ओतप्रोत श्रीकृष्ण के मार्ग का अनुसरण करते हुए माहेश्वरी समाज के भी अनेक बन्धु-बहिनों ने कर्मयोग की अनुकरणीय मिसालें प्रस्तुत की हैं।

प्रतिष्ठित चैनल **'भक्ति सागर'** और आपकी अपनी मासिक पत्रिका **'श्री माहेश्वरी टाइम्स'** ने सृजन की विभिन्न विधाओं और लोक कल्याण के नाना क्षेत्रों में अपने निष्काम कर्म की छाप छोड़ने वाले समाज के ऐसे ही प्रेरक कर्मयोगियों के अभिनन्दन का निर्णय किया है। अखिल भारतीय स्तर पर चुने हुए इन **'१०० कर्मयोगियों'** के साक्षात्कार चैनल पर प्रसारित किए जाएंगे और पत्रिका इन सभी के योगदानो को समर्पित विशिष्ट पुस्तक का प्रकाशन करेगी।

समाजजनों से आग्रह है कि कृपया अपने क्षेत्र के ऐसे कर्मयोगियों के बारे में हमें सूचनाएं सुलभ कराने का कष्ट करें, जिन्होंने किसी भी क्षेत्र में उपलब्धि के शिखर छूकर लोक के लिए कर्म की पराकाष्ठा का उदाहरण प्रस्तुत किया हो। आप इनके नाम, परिचय, कार्य विवरण, चित्र, सम्पर्क नम्बर या मेल आईडी उपलब्ध करा कर हमारे इस अभियान में सहयोगी बन सकते हैं। श्रेष्ठ १०० का चयन निर्णायक मंडल के अधिकार में होगा।

श्री माहेश्वरी टाईम्स
९०, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे)
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

माहेश्वरी समाज ने अपनी व्यवसाय कुशलता से न सिर्फ धन अर्जित ही किया है, बल्कि भामाशाह की तरह मानवता की सेवा के लिये अपनी तिजोरियाँ खोलने में भी कोई कसर नहीं रख छोड़ी। यही कारण है कि संपूर्ण भारतवर्ष में स्थापित अनेक मंदिर, धर्मशालाएं, अस्पताल, शिक्षण संस्थाएं, समाजसेवी न्यास इत्यादि स्वयं माहेश्वरी समाज की सेवा भावना का गुणगान कर रहे हैं। कोरोना महामारी के इस भयानक दौर में भी समाज के कई भामाशाह जरूरतमंदों की मदद के लिये आगे आये हैं। नांदेड़ निवासी वरिष्ठ कर सलाहकार रामलाल बाहेती एक ऐसे भामाशाह हैं, जिन्होनें इस विकट दौर में जरूरतमंदों की परेशानी को समझा और 51 लाख रूपये के अपने व्यक्तिगत सहयोग से एक ऐसा पूरा सेवा ट्रस्ट ही समाज को समर्पित करवा दिया, जो कोरोना काल के बाद भी समाज की सेवा करता रहेगा।

किशनप्रसाद दरक, नांदेड

'अपनों के लिये' अपने मददगार रामलाल बाहेती

लक्ष्मी पुत्रों का समाज समझे जाने वाले माहेश्वरी समाज में भी आज ऐसे अनेक परिवार हैं जिन्हें दो समय की रोटी के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। ऐसे में उस परिवार में कोई बीमार पड़ जाएं, कोई दुखद घटना घटित हो जाएं या फिर वृध्दावस्था के कारण आय का स्रोत ही बंद हो जाएं तो उस परिवार की दैन्यावस्था का कोई पारावार नहीं रहता। नांदेड के वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता एवं सुप्रसिद्ध कर सलाहकार रामलाल बाहेती ने आमजन की इसी समस्या को समझते हुए अपने कुछ चुनिंदा साथियों को बुलाया तथा उनसे एक नवीन सेवा ट्रस्ट के गठन करने का आग्रह किया। इस कार्य के लिए उन्होंने व्यक्तिगत रूप से रुपये 51 (इक्कावन) लाख की राशि देने की घोषणा भी की। उपस्थित समाज जनों ने इस ट्रस्ट को उनकी स्वर्गीय माताजी के नाम पर 'केसरबाई गणेशलाल बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट' नाम देने का निर्णय लिया। इस ट्रस्ट में श्री बाहेती के सुपुत्र निखिल रामलाल बाहेती को अध्यक्ष बनाया गया।

कई संस्थाओं की दी सौगात

श्री बाहेती एक ऐसे समाजसेवी हैं, जो न सिर्फ स्वयं समाज व मानवता की प्रेरणा में आगे रहते हैं, बल्कि उन्होंने सदैव अन्यों को भी इसके लिये प्रेरित किया है। उनकी प्रेरणा से वर्ष 1980 में माहेश्वरी कंज्यूमर्स कोऑपरेटिव सोसायटी लिमिटेड नांदेड व वर्ष 2008 में श्री हरिकिशनजी बजाज मेमोरियल माहेश्वरी शिक्षण विकास संस्था नांदेड़ की सौगात मिली। अब इस वर्ष उनकी प्रेरणा तथा प्रदत्त रुपए 51 लाख की धनराशि से केशरबाई गणेशलालजी बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट नांदेड की स्थापना हुई है। गत 5 मई 2021 को श्री बाहेती ने अपनी वचन पूर्ति करते हुए रुपये 51 लाख का चेक इस ट्रस्ट के संचालन के लिये गठित कार्यकारी मंडल को सुपुर्द किया। उनके इन कार्यों में आपकी धर्म पत्नी श्रीमती हीरा देवी बाहेती भी प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बनी हुई हैं।

राजस्थानियों को एक जुट करने का लक्ष्य

जिस राजस्थानी समाज में हमारा जन्म हुआ है उस समाज के अनेक परिवारों में विवाह संबंधों को लेकर अनेक समस्याएं हैं। इन समस्याओं को सुलझाने हेतु संपूर्ण राजस्थानी समाज में रोटी व्यवहार के साथ ही बेटी व्यवहार होना अत्यावश्यक है। इस संकल्प के साथ श्री बाहेती ने वर्ष 1997 मे राजस्थानी सेवा समिति नांदेड की स्थापना की। वर्ष 1999 में नांदेड के इतिहास में पहली बार 'राजस्थानी विधवा- विधुर- विकलांग वधू वर परिचय सम्मेलन' का आयोजन किया गया। इस प्रयास को न केवल सफलता प्राप्त हुई बल्कि 4 जोड़ों का विवाह भी संपन्न हुआ। वर्ष 2002 में पुनः यह आयोजन किया गया। इसमें 9 जोड़ों का विवाह संपन्न हुआ। सामाजिक मंच से 'संपूर्ण राजस्थानी समाज एक है' की आवाज देते हुए श्री बाहेतीजी ने माहेश्वरी- ब्राह्मण, माहेश्वरी- अग्रवाल इनके वैवाहिक संबंध करवा कर एक नया इतिहास रचा। 'कथनी से करणी महत्वपूर्ण है' इस बात को अपना जीवन सिद्धांत मानने वाले श्री बाहेती ने राजस्थानी समाज के गरीब परिवारों को तीर्थ यात्रा कराने का बीड़ा उठाया। तदनुसार वर्ष 2012 में 75 को द्वारिका यात्रा, वर्ष 2014 में 160 को सालासर धाम यात्रा, वर्ष 2016 में 220 को जगन्नाथपुरी यात्रा एवं वर्ष 2018 में 250 समाजजनों को पशुपतिनाथ, गोरखपुर, प्रयागराज, अयोध्या, चित्रकूट एवं वाराणसी के दर्शन करवाएं। इसका संपूर्ण खर्च बाहेतीजी अकेले ही वहन करते आए हैं।

सेवा के वृहद आयाम

इसके अतिरिक्त रोटरी क्लब नांदेड के अध्यक्ष, कर सलाहकार समिति के अध्यक्ष, राजस्थानी एजुकेशन सोसायटी नांदेड़ के सेक्रेटरी के नाते श्री बाहेती ने अनेक सामाजिक कार्यों को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इसमें मूक-बधिर-अंध छात्रों के लिए राज्य स्तरीय शिविर, उनके शिक्षकों के लिए विशेष ट्रेनिंग प्रोग्राम, अपंग व्यक्तियों के लिए तथा जरूरतमंद बालक-बालिकाओं को शिक्षा हेतु मुक्तहस्त से सहयोग शामिल हैं। श्री बाहेती को अ.भा. मारवाड़ी युवा मंच द्वारा 'मारवाड़ी रत्न' एवं नांदेड जिला माहेश्वरी सभा द्वारा 'माहेश्वरी जीवन गौरव पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

कोरोना जैसी महामारी, जिसमें अपने भी अपनों से दूरी बनाकर रखते हैं, जिसके कारण एक भय सब के मन में रहता है। यदि कोई अपना इससे संक्रमित हो जाए, तो अपने भी उपेक्षा करने से नहीं चुकते। वृद्धाश्रम में रह रहे 65 से लगभग 95 साल के वरिष्ठ वैसे ही किसी न किसी बीमारी से पहले ही ग्रसित रहते हैं, यदि ऐसे माहौल में वे सभी कोरोना पॉजिटिव हो जाऐं तो क्या होगा? निश्चय ही स्थिति अत्यंत चिंताजनक ही होगी लेकिन नागपुर स्थित यतिराजदेवी मांगीलाल सारड़ा श्री महेश्वर वानप्रस्थ आश्रम की टीम वानप्रस्थ के सकारात्मक प्रयासों से न सिर्फ उनकी सही देखरेख हुई बल्कि वे स्वस्थ भी हो गये। इस टीम वानप्रस्थ में रामरतन सारड़ा, सरला सोमानी, रमाकांत सारड़ा, मधु सारड़ा, सुशील फतेपुरिया, किरण मूंदड़ा, अशोक सोमाणी, अजय नबीरा, लता मनियार, कृष्णा लाहोटी आदि शामिल हैं।

'टीम वानप्रस्थ' के प्रयासों से जीते कोरोना जंग

वयोवृद्ध

कल्पना मोहता, नागपुर

गत माह अप्रैल में नागपुर स्थित यतिराजदेवी मांगीलाल सारड़ा श्री महेश्वर वानप्रस्थ आश्रम में कोरोना ने आक्रमण कर ही दिया। पहले 2 और बाद में शेष सभी 24 आश्रम वासी संक्रमित हो चुके थे। टेस्ट रिपोर्ट आने तक 2 साथियों को खो चुके आश्रमवासियों पर स्वयं के पॉजिटिव होने की खबर कहर बन कर टूटी। मानसिक संबल तो जाता ही रहा, जीवित रह पाने की उम्मीद भी मानो कोरोना के भय ने निगल ली.. सब सहम चुके थे। प्रबंध समिति बाकी व्यवस्थाओं के साथ-साथ उनका संबल बनाए रखने के लिए भरसक प्रयास कर ही रही थी तभी इस सरकारी आदेश के साथ एम्बुलेंस ही आ गयी कि सबको कोविड केयर सेंटर में क्वारंटाइन करना होगा। अब तो मानो कुछ शेष रहा ही नहीं।

प्रबंध समिति के समझाने बुझाने पर सभी वरिष्ठ आ कर एम्बुलेंस में तो किसी तरह बैठ गए, मगर पहले से ही अपनों से दूर और अब जो अपने बने उनसे भी दूर होने का डर? कहाँ जा रहे हैं, क्या होगा, वहां कौन संभालेगा हमें? .... उनके चेहरों पर घबराहट और माथे पर चिंता की लकीरें आसानी से पढ़ी जा सकती थीं। तब प्रबंध समिति के सदस्यों में से एक किरण मूंदड़ा ने उन सबसे कहा.. 'हम है आपके साथ.. आप जहाँ रहोगे, वहां मैं आपसे मिलने आऊंगी.. घबराइए मत...' इतना सुन वरिष्ठ जनों को जैसे सम्बल की संजीवनी मिल गई।

सिटी स्कैन होने और कोविड केयर सेंटर पहुंचने तक प्रबंध समिति के सदस्य साथ रहे, तो शायद उन्हें थोड़ा ढाढस बंधा लेकिन समय के साथ घटनाक्रम भी बदलते गए। पहले से ही अन्य रोगों से ग्रस्त वरिष्ठों की तबियत बिगड़ी, अस्पताल में भर्ती होना पड़ा, कुछ वरिष्ठों का निधन भी हुआ। लगभग प्रतिदिन उनकी छोटी बड़ी अनेक समस्याएं सामने आ रही थीं। प्रबंध समिति के कुछ सदस्य फोन पर, कुछ कभी कभी कोविड केयर सेंटर में प्रत्यक्ष रूप से आकर उन्हें साथ होने का अहसास दे रहे थे... मगर एक सदस्य जिसे हमेशा हर परिस्थिति में वो प्रत्यक्ष रूप से साथ पा रहे थे, जिससे वो ये हौंसला पा रहे थे कि सब ठीक हो जाएगा, जो हमेशा उनसे कह रही थीं कि हम जल्दी ही वापस आश्रम चलेंगे - वो थी किरण मूंदड़ा।

'आपके परिवारजन आपके लिए चिंतित हैं, बस उन्हें यहां आने की इजाजत नहीं, वरना वो आपसे मिलने आते'.. यह कहकर उन्हें झूठी तसल्ली दे रही थी किरण मूंदड़ा। रात 3 बजे किसी वरिष्ठ को कोविड केयर सेंटर से अस्पताल में भर्ती कराना हो, अस्पताल में दवाइयों या भोजन की व्यवस्था हो या शहर से 20 किलोमीटर दूर अस्पताल में किसी वरिष्ठ की मृत्यु पश्चात देर शाम उन्हें मुखाग्नि दे अंतिम संस्कार करना हो.. जैसा समय आया वैसा कार्य किरण मुंदड़ा ने किया।

जहां हम एक कोरोना संक्रमित के सम्पर्क में आने से घबराते हैं, वहाँ इतने वरिष्ठ जनों के निरन्तर सम्पर्क में रह कर इस विजय यात्रा की सारथी रही किरण मुंदड़ा स्वयं पूरी तरह स्वस्थ्य हैं, आश्रमवासी सकुशल हैं... क्योंकि किरण जी स्वयं सकारात्मक रहीं और वही ऊर्जा वो निरन्तर सभी को हस्तांतरित करती रहीं। ईश्वर कृपा पर अटूट विश्वास उनका सम्बल रहा.. हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम के मूलमंत्र को आधार मान वो सबकुछ उनके श्री चरणों में अर्पित कर सतत आगे बढ़ती रहीं और सबको इस भंवर से निकाल लाईं..

इस मुश्किल घड़ी में लगभग प्रतिदिन कभी कोविड केअर सेंटर, कभी कोविड हॉस्पिटल जाने वाली किरण जी को पूरी सकारात्मकता के साथ परिवार ने अनुमति दी, सहयोग दिया। "हम आपके साथ हैं...आप जहाँ रहेंगे मैं वहां आऊंगी...." उनके इन शब्दों ने मानो जादू किया हो। हर दिन, हर ज़रूरत पर जब आश्रमवासियों ने वानप्रस्थ टीम को साथ और किरण जी को सामने पाया तो दिन ब दिन कोरोना से लड़ने की इच्छाशक्ति मजबूत होती गयी। 65 से 96 वर्ष तक के वरिष्ठजन जिनका इलाज करना या हो पाना डॉक्टर्स को भी रिस्की लग रहा था, वो कोरोना से जिंदगी की जंग जीत चुके हैं - सिर्फ और सिर्फ उन्हें मिली सकारात्मक सोच और कभी न छूटने वाले साथ के बलबूते।

टीम वानप्रस्थ

वर्तमान में हमारा देश कोरोना महामारी की भीषण विभीषिका से जूझ रहा है। ऐसे में हमारा समाज भी इससे प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। वैसे तो यह बीमारी अपने-आपमें भय का पर्याय बन गयी है, लेकिन हमारे कई समाजजनों ने अपने हौंसलों से इस पर न केवल विजय प्राप्त की बल्कि अन्यों के लिये मिसाल बने। इस स्तम्भ में प्रस्तुत हैं, समाज के ऐसे कोरोना विजेताओं के कोरोना से जंग के अनुभव। इसमें उनके वे कटु अनुभव भी शामिल करें, जिनसे वे जुझे हैं। इसके साथ इसमें समाहित है कोरोना से जंग में किन-किन परेशानियों का सामना करना पड़ा और उनसे वे कैसे जूझे तथा उन्हें कहां से और किन-किन से मदद मिली इसका भी उल्लेख है। ये अनुभव कोरोना से जंग लड़ रहे अन्य समाजजनों के लिये प्रेरक सिद्ध होंगे।

ऐसे पायी हमने कोरोना से जंग में विजय

सेवा का बेमिसाल उदाहरण

माखन लाल बिड़ला, रांची

मैं माखन लाल बिड़ला, रांची के प्लाजा चौक के पास निवास एवं अपर बाजार में व्यवसाय करता हूं। मेरी उम्र 80 साल है और हमारा पूरा परिवार कोविड-19 संक्रमण से गुजरा है। बात अप्रैल के पहले सप्ताह की है जब अचानक मुझे खांसी और छाती में थोड़ा दर्द महसूस हुआ। बेटे मनोज ने तुरंत टेस्ट करवाने की ठानी और 13 अप्रैल को हुए टेस्ट में मैं और मेरी 75 वर्षीय पत्नी दोनों पॉजिटिव निकले और डॉक्टर ने तुरंत चेस्ट की सीटी स्कैन कराने की सलाह दी जिसमें मेरे फेफड़े में 85 प्रतिशत इन्फेक्शन निकला जबकि पत्नी को काफी कम था। अचानक दिक्कत बढ़ने लगी और ऑक्सीजन स्तर 80 से भी नीचे चला गया था। पर ना तो ऑक्सीजन सिलेंडर मिल रहा था और ना ही अस्पताल में जगह। ऐसे में चारों तरफ से निराशा से भरे मेरे परिवार ने हमारे माहेश्वरी समाज के अध्यक्ष श्री शिव शंकर साबू को फोन किया, जिन्होंने हर संभव सहायता का आश्वासन दिया। फिर उनके एवं श्री राजकुमार मारू के अथक प्रयास से 17 अप्रैल को नागर मल मोदी सेवा सदन में मुझे भर्ती करवा दिया गया। इसी बीच 21 अप्रैल को फिर से पूरे परिवार का टेस्ट हुआ जिसमें 59 वर्षीय मेरा बेटा मनोज, 55 वर्षीय बहू सुमन और मेरी पोती सोनल भी पॉजिटिव आए और मेरा 10 वर्षीय पोता अकेला सदस्य था जो नेगेटिव था और उसे संक्रमण ना हो इस डर से हाथों-हाथ उसे मेरी बेटी के यहां भेज दिया गया। मैं तो अस्पताल में आ गया था, पर बाकी लोग घर पर आइसोलेटेड थे। पोती सोनल संक्रमित होने के बावजूद घर का सारा काम देख रही थी। अचानक 29 अप्रैल को मेरे बेटे का ऑक्सीजन लेवल 72 हो गया और शुगर भी काफी बढ़कर 425 हो गई जिसके कारण वह घर के बाथरूम में बेहोश होकर गिर गया और चोटिल हो गया। 3 दिन तक पोती सोनल ने अपने पापा की बिना एक मिनट की नींद लिए सेवा की। पूरे घर को सोनल ने संभाला भी और सबको मोटिवेट भी करती रही। उस समय भी कोविड-19 संक्रमण से उबर कर डॉक्टर द्वारा बेड रेस्ट की सलाह दिए जाने के बावजूद भी सभा के अध्यक्ष श्री साबू ने अपनी सेहत की परवाह न करते हुए भी बेटे मनोज के लिए ऑक्सीजन सिलेंडर का इंतजाम कर खुद ही घर पर पहुंचाया। उन्होंने सोनल के साथ डॉक्टर सुनील रुंगटा से मुलाकात कर बेटे के लिए परामर्श भी करवाया। फिर स्थिति नहीं संभलने पर बेटे मनोज को भी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

इस 1 मई से माहेश्वरी सभा द्वारा हम सभी सदस्यों के लिए यह अनुभव लिखने तक घर पर भोजन भेजा जा रहा है क्योंकि अभी भी परिवारजनों में काफी शारीरिक कमजोरी है। 10 मई को मेरे पुत्र की कोविड-19 रिपोर्ट भी नेगेटिव हो गई और अब हम सभी लोग अपने घर पर स्वस्थ लाभ कर रहे हैं। सच बताऊं तो इस कठिन घड़ी में जब अपने परिवार जन भी संक्रमण के डर से सहायता करने से कतराते हैं वैसे में श्री माहेश्वरी सभा, रांची का इतना बड़ा साथ नहीं मिलता तो पता नहीं क्या होता? इसलिए किसी भी समाज के लिए संगठन का होना बहुत जरूरी है। ऐसे समय में न सिर्फ समाज जनों ने हमारी सहायता की बल्कि हमें रोज हाल-चाल पूछ कर मोटिवेट भी किया और चिकित्सकों से लगातार संपर्क करवा कर हम सब को स्वस्थ होने में काफी बड़ी मदद की।

मोबाइल के सही उपयोग से कोरोना को हराया

अशोक बिसानी, नागदा

कहते हैं, 'बेटियां एक नहीं दो-दो घरों का ध्यान रखती है' और 'पूर्वजों ने अच्छे कर्म किये तो उसका फल अवश्य मिलता है।'

मुझे 6 अप्रैल को बुखार आया व 9 अप्रैल को वापस तबीयत बिगडी, तब पत्नी (सुषमा बीसानी) ने नागपुर छोटी बेटी आंशिका-सागर जांवधिया को मोबाईल पर खबर दी। कवंरसा एवं बेटी ने गुगल पर सर्च कर वहीं से नागदा ब्लू लेब वालों को खबर कर अगले दिन सुबह ही हम दोनों पति-पत्नी का COVID ANTIGEN (RAPID) टेस्ट करवाया। हम दोनों पाजिटिव आये। मुझे INFECTION ज्यादा था और सुषमा को कम। मुझे शीघ्र इन्दौर कोविड हास्पिटल में एडमिट होने के लिए बोला। ऐसे में हम घबरा गये। तब समाज के वरिष्ठ श्री गोपाल मोहता, श्री महेन्द्र बीसानी व युवा सुधीर राठी आगे आये और मुझे सही समय पर व्यवस्था कर इन्दौर (भगवान स्वरूप) डा. अनुराग मोहता के निर्देशन में 'विशेष जुपीटर हास्पीटल' के कोविड वार्ड में एडमिट कर समय पर उचित ट्रिटमेंट दिलवाया। सुषमा घर पर ही आइसोलेट थी। उस समय बडी बेटी तुहिना-राघव काबरा (सांगली) व परिवार के सभी रिश्तेदारों एवं मित्रों ने सुषमा का मनोबल बड़ा कर संयम रखने को कहा। 14 अप्रेल तक मेरी रिकवरी बहुत अच्छी हो गई थी। तब डॉ.संजय गुजराती ने चेक कर 15 अप्रेल को मुझे छुट्टी दे दी और 11वे दिन कोरोना को हराकर घर आ गया। तब से आज तक हम पति-पत्नी पूरी तरह से स्वस्थ है।

आप सभी से निवेदन है कि अपना व परिवार का ध्यान रखें। समय पर भरपूर प्रोटिन युक्त नाश्ता-भोजन, फल, सब्जियां, काड़ा व नियमित व्यायाम-प्राणायाम-योग आदि करते रहें। 'जरूरी हो तो ही घर से बाहर निकले' क्योंकि 'यह जीवन नहीं मिलना है दौबारा।

हौंसले से जीती कोरोना से जंग

राजकुमार मारू, रॉंची

बढ़ते संक्रमण को देखते हुए हमने विचार किया कि परिवार समेत पूरे स्टाफ कोरोना जांच करा ली जाये, हालांकि हमें कोई लक्षण नहीं था, लेकिन बढ़ते खतरे को देख जांच कराना सही लगा। इससे स्टॉफ का भी आत्मविश्वास बढ़ता। जब चार अप्रैल को जांच रिपोर्ट आयी, तो पूरा परिवार और स्टाफ पॉजिटिव थे, सबने घर में खुद को आइसोलेट कर लिया। परिवार में छह सदस्य हैं, सभी हर दिन एक साथ खाना खाते थे, एक साथ खेलते थे, वॉकिंग करते थे। इन्हीं चीजों ने कोरोना से जंग लड़ने की ताकत दी। हम सब मिलजुल कर काम करते रहे। किसी सदस्य को किसी तरह का कोई लक्षण नहीं था, ऐसे में हमें बहुत चिंता और घबराहट भी नहीं हो रही थी। हर दिन डॉक्टरों के संपर्क में रहे। उनकी सलाह पर दवायें लीं। भाप लेते रहे। 14 दिन बाद जब जांच हुई तो मां को छोड़ सभी निगेटिव थे। मां की उम्र 91 वर्ष है, इसलिए उन्हें स्वस्थ होने में ज्यादा समय लगा। तीन दिन बाद माँ भी निगेटिव हो गयी। अब पूरा परिवार स्वस्थ है। अब हम सब कोरोना से जंग जीतकर खुशियों की जिंदगी जी रहे हैं।

कोरोना को हल्के में न लें

डॉ. उल्हास जाजू, वर्धा

सारे प्रोटेक्टिव मेसर्स के साथ दवाखाने में कार्यरत रहने के बावजूद, कोरोना का जंतु सहजता से प्रवेश कर पाया। घर में एक को कोरोना हुआ तो अन्य सारे परिवार को भी हो जाता है। इस सर्वसामान्य नियम के अनुसार पहला नम्बर लगाया पोती निती ने। पूनम (बहू) ने शरीर दर्द के साथ अपना नंबर लगाया, पर वह थोड़ी सी परीक्षा लेकर थक जायेगा ऐसा मेरा विश्वास है। मुझ पर दयावान कोरोना के अब 11 दिन पूरे हो रहे हैं, दवाई लेने की नौबत ही नहीं आने दी और खूब सोने का और कुछ वाचन का मौका प्रदान किया। किरण, सेहास तो पहले ही कोरोना का स्वाद ले चुके थे, अब स्वस्थ्य हैं। सुमेध, नमिता, शुभदा, श्रुति, निखिल अभी तक कोरोना को असंभव कर पाये हैं। सुहास को कोरोना हुआ था तब निसर्ग ने दस दिन तक हमारी कड़ी परीक्षा ली थी। इस व्याधि के साथ उभरती असुरक्षितता और एकाकीपन का सबक सिखाया था। दूसरे कोरोना में जवान व्यक्ति भी हाईपोक्सिया के साथ मरणासन्न अवस्था में दवाखाने पहुंच रहे हैं। बीमारी से लड़ सके ऐसी दवाईयों का शोध नहीं हो पाया है। वैक्सिनेशन के बाद कोरोना का असर कम होगा ऐसी आशा बनी है।

प्रबल इच्छाशक्ति से ही हारता है कोरोना

रामरतन लड्ढा, उज्जैन

आत्मविश्वास और जीने की इच्छा को मजबूत करके कोरोना को हराया जा सकता है। मैं स्वयं कोरोना संक्रमित हो अस्पताल में भर्ती रहा हूँ। ऐसे में अस्पताल में रहकर देखने को मिला था कि कई लोग संक्रमित हो जाते हैं तो चिंता करने लग जाते हैं जबकि हमें चिंता न करते हुए कोरोना को हराने की इच्छाशक्ति को और मजबूत कर लेना चाहिए। अस्पताल में रहकर खाने पीने की आदत को भी बेहतर बनाए रखें। अगर अस्पताल का खाना पसंद नहीं आए तो घर या बाहर से मंगवाएं लेकिन इसमें कमी न होने दें। मैं अस्पताल में भर्ती था तो हर दिन पौष्टिक आहार का सेवन करता था। नारियल पानी और फल भी खाते रहना चाहिए। संक्रमित हो जाने के बाद परिवार के सदस्यों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। मैं खुशकिस्मत हूँ कि परिवार के सभी सदस्यों ने मेरा पूरा ध्यान रखा। खासकर मेरी बहू अटेंडर के रूप में मेरी सेवा करने के लिए अस्पताल में मौजूद रहती थी। अस्पताल में रहकर मुझे लगता था कि समाज के लिए और काम करना है इसलिए जल्दी यहां से बाहर निकलना जरूरी है। इच्छाशक्ति के कारण कोरोना को हराने में सफल रहा हूं। अब मैं घर आ चुका हूं और समाजसेवा के लिए ऑक्सीजन कंसंट्रेटर मंगवाई है। अब मेरा फर्ज बनता है कि दूसरे संक्रमितों को मदद पहुंचाई जाए।

तन की दूरी रखें मन की नहीं

संदीप दम्माणी
शिवसागर (असम)

मेरे परिवार के लिए कोरोना एक बिन बुलाए मेहमान की तरह साबित हुआ, जिसकी मजबूरीवश खातिर करनी पड़ी और प्रेम पूर्वक वापस भेज दिया गया। मेरा छोटा भाई सचिन कोरोना से ग्रस्त हुआ और पूरा परिवार अपने ही घर मे बंदी बन गया। पर यह सत्य है कि घर के अंदर कैद हो जाना ही कारगर साबित हुआ जिसकी वजह से हम कोरोना को परास्त कर पाए। इसमें कोई दो राय नही है कि भय और डर का माहौल जरूर बना। शरीर में ऑक्सीजन की कमी होना क्या होता है, कभी पता ही नही था। पिछली बार शरीर के तापमान की कब जांच की थी याद भी नही। पर यह सब कुछ करना पड़ा और बार बार करना पड़ा। भाइयों का, बहनों का, परिवारों का, रिश्तेदारों का, अज़ीज दोस्तो का इस संकट की घड़ी में काफी योगदान रहा, जिसका शब्दों में बखान करना लगभग नामुमकिन है। इन सभी के निरंतर फोन पर संपर्क बनाए रखने तथा ढाढंस बंधाने ने काफी हद तक मुझे और मेरे परिवार को इस मुश्किल समय से लड़ने की हिम्मत दी। अंत मे सभी से यही निवेदन है कि किसी भी कोरोना ग्रस्त व्यक्ति से डरें नही, तन की दूरी जरूर बनाए पर मन की नहीं। आगे आएं साथ दें, साथी बनें। आप के दो मीठे बोल जीवनदायी साबित हो सकते है।

मित्रों का सहयोग बना संबल

राजकुमार जाजू, वर्धा

दीपावली तो हर वर्ष आती है, इस वर्ष भी आई किंतु यह भी कोरोना काल की। मेरे लगभग 5 वर्षों के व्यावसायिक जीवन में कभी न होने वाली इतनी भीड़ से मैं रूबरू हुआ। सुरक्षा के सभी उपायों के बावजूद मुझे मिला कोरोना पॉजिटिव हो जाने के कारण 14 दिनों का एकांतवास। तेज चलता हुआ जीवन अचानक सा रूक गया। सुनी सुनाई, देखी दिखाई घटनाओं से पहले तो मन सुन्न सा हो गया, आत्मबल गिरने लगा किंतु तुरंत पारिवारिक चिकित्सक डॉ. उल्हास, डॉ. सुहास, डॉ. शुभदा, डॉ. सुमेध एक्शन मोड में आ गये। डॉ. श्याम टावर ने एक्स-रे, तो डॉ. जयंत मकरंदे ने पैथालॉजी टेस्ट करवाकर औषधियां, ऑक्सीमीटर आदि की समाजबंधुओं व रोटरी मित्रों तथा रिश्तेदारों के धड़ाधड़ संदेश आने लगे। सारे रिश्ते एक बार फिर रिचार्ज होकर सभ्यता और संस्कृति की नई पाठशाला आरंभ करने लगे। बस यही वह समय था जब मैंने पाया कि धन ऐश्वर्य अपनी जगह है, यह तो निर्विवाद सत्य है किंतु ऐसे समय जो कुछ मैंने पाया शायद वह मेरे जिंदगी का अनमोल खजाना था। यह सीख मैंने पाई कि जिंदगी में चार पैसे भले ही कम कमाओ किंतु चार मित्रों को जोड़े रखो। इन दिनों में मुझे रामायण ने कैसे जीना है और महाभारत ने कैसे रहना है कि आचार संहिता सिखलाई। यह भावना भी जागी कि घर का सात्विक आहार ही श्रेष्ठ आहार है, ना कि 'जंक-फूड'!

व्यवस्था कर दी। सभी ने निर्णय लिया कि मैं घर पर ही रहूंगा। शुभदा भाभी ने अर्धांगिनी को दिशा निर्देश जारी कर दिये। दो-दो घंटे की रिपोर्टिंग मुझे सभी डॉक्टर्स को देनी होती थी। थोड़ी देर पहले घबराया हुआ मन इस अप्रत्याशित घटना से सकारात्मक हो चला था। दरअसल, इस बीमारी में बरती जाने वाली सारी सावधानियाँ और उपचार हमारे बुजुर्ग हमें पहले ही सिखा गये थे किंतु पाश्चात्य संस्कृति की अंधानुकरण एवं भेड़चाल में हमने उन्हें भूला दिया था। इस बीमारी ने हमें अवसर दिया है हमारी जीवन शैली को निहारने का।

कोविड की जंग - परिवार के संग

वर्ष 2020 की महेश नवमी मेरे परिवार को हमेशा याद रहेगी। उस दिन मेरे डॉक्टर बेटा- बहू बुलढाना में कोविड हॉस्पिटल मे भरती थे। बाकी पूरे परिवार को मलकापुर में QUARANTINE घर पर ही कर रखा था। हम अपने कोविड रिपोर्ट की राह देख रहे थे। दुहेरी टेंशन था। उस रात बुलढाना में बेटे का बुखार बढ़ गया - वह अस्वस्थ था - औरंगाबाद ले जाने के बारे में विचार चल रहा था। उस की आयुर्वेदिक - एलोपॅथिक और होम्योपैथी की दवाईयां चल रही थी। बेटे की खुद की ही ट्रिटमेंट सिविल सर्जन की सलाह पर चल रही थी। सलाईन - मेडिसिन साथ में थे। डॉ. बहू सब करती थी। ऐसे में डॉ भाई ने होमियोपैथी का डोज बदल कर दिया। रात को 11 बजे सभी लोग डोज के लिए भागदौड़ करने लगे। आखिर डोज मिला और 1/2 घंटे में उसे आराम मिला। हम दूसरे दिन वहां पर भेजे गए। पूरा परिवार साथ होने से हम 6 लोग जल्दी ही ठीक हो गये। हम सभी ने वहीं से नियमित प्राणायाम - योग - रामरक्षा - हनुमान चालीसा - अथर्वशिर्ष तथा मंत्र-जाप शुरू किये और सेंटर की अन्य पॉजिटिव महिलाओं को भी करने के लिये प्रेरित किया।

डॉ. कमल अशोक काबरा
मलकापुर, महाराष्ट्र

उस समय कोरोना नयी बिमारी थी - INVESTIGATION _ GUIDE LINES नही थे। इसलिए अंधेरे में ही सब दौड रहे थे। खैर - अंत हमारे लिए अच्छा रहा। इस संकट के समय में हमें सभी मित्र परिवारों ने बहुत मदद की। रोजाना ताजा टिफीन - उत्साह वर्धक फोन करते रहे। बाद में 7 दिन के QUARANTINE समय में भी बहुत मदत की। बड़ी बहू और छोटे बेटे के 2 छोटे पुत्र निगेटिव होने से घर पर ही थे। उन्हें भी बहुत मदद की। अब डॉ. बेटा कोरोना पेशंट को ON LINE FREE CONSULTATION देता है। फोन करके उन्हें प्रोत्साहित करता है। योग- प्राणायाम के वीडियो भेजता है। लसिकरण पर मार्गदर्शन करता है। अभी तक उसने 300-350 लोगों को मार्गदर्शन किया है। अब सब परिवार स्वस्थ है।

तत्काल उपचार से हुआ कोरोना लाचार

मैं शीला राठी आयु 61वर्ष 27- बी विद्यानगर मे अपने पति श्री कैलाशनारायण राठी के साथ निवासरत हूँ। गत वर्ष 19 दिसम्बर 2020 को मुझे बुखाऱ 102 डिग्री होकर सर्दी खांसी होने के कारण 20 दिसम्बर को परिवार के नियमित डाक्टर एच पी सोनानियाजी को दिखाया। उनके परामर्श के अनुसार एक्सरे, ब्लड जांच के साथ कोरोना जांच हेतु तुंरत माधवनगर अस्पताल में संपर्क किया। जांच में निगेटिव रिपोर्ट आई परन्तु सोनानियाजी को संदिग्धता लगने के कारण 22दिसम्बर को करण एक्सरे पर HRCT जांच करवाई गई। 23दिसम्बर 2020 को रिपोर्ट प्राप्त होकर फेफडों में 40 प्रतिशत इन्फेक्शन होने पर चारभुजानाथजी का प्रसाद लेकर संजीवनी हॉस्पिटल में 24 दिसम्बर को एडमिट करवाया गया। लिफ़्ट मे अकेले ले जाने तथा सभी को कोविड सूट पहने देखकर मे बहुत घबरा गई तथा बहुत रोने लगीं। परन्तु संजीवनी के स्टाफ़ ने बहुत ढाढ़स बढ़ाया तथा सभी सिस्टर्स ने गले लगाया तब मुझे कुछ विश्वास हुआ। डाक्टर सोनानियाजी तथा डाक्टर सिंगापुर वाले की सलाह तथा दिशानिर्देश अनुसार मेरा उपचार प्रारंभ हुआ तत्समय रेमेडसिर इन्जेक्शन भी सुलभ हो गये। हास्पीटल में भी नियमित प्रभुभजन, गुरूवाणी श्रवण के साथ व्यायाम भी ज़ारी होकर प्रभु कृपा से छह दिन बाद ही 29 दिसम्बर को ही हास्पीटल से डिस्चार्ज कर दिया गया तथा तीन सप्ताह तक घर पर क्वारन्टाइन रहकर उपचार लेकर पूर्ण स्वस्थ हो पाई। अंत में यही कहना चाहूंगी कि बीमार होने पर बिना देरी किये संकुचित नहीं होकर तत्काल डाक्टर को दिखाने तथा उपचार प्रारंभ कर कोरोना की जंग जीत सकतें हैं।

शीला कैलाशनारायण राठी
उज्जैन

हौंसले से जीती जीवन की जंग

किसी को भी कोरोना शब्द से घबराने की जरुरत नहीं है। आज से 4 महीने पूर्व मै भी इस सीडी से पार हुई हूं। मैंने पहले दिन से ही पारिवारिक डॉक्टर योगेश मूंदड़ा से परामर्श किया। उनके द्वारा दी गई दवाइयों का सेवन किया और कुछ नियमों का पालन किया जैसे तीन बार पानी की भाप लेना, सुबह शाम सुपाच्यभोजन करना और प्राणायाम किया। उस समय चिकित्सक ने मुझे एक ही रुम में क्वारेंटाइन रहने के लिए कहा था। तो मैं बस 14 दिन एक ही जगह रही और नियमित रुप से काड़े का सेवन किया। इन सब काम के साथ मैंने सबसे ज्यादा अपना आत्म विश्वास मजबूत बनाएं रखा, पॉजिटिव एटीट्यूड था ,कि मुझे कुछ नहीं होगा। अटूट विश्वास के कारण मैंने यह महामारी कोरोना की जंग जीत। तो दोस्तों, जीत जाएंगे हम जीवन में यदि अपने हौसले बुलंद होंगे। हौसलो की आंधियां इतनी तेज होनी चाहिए कि किस्मत का सिक्का पूरी तरह पलट जाए। हौसले भी किसी हकीम से कम नहीं होते हैं, हर तकलीफ में ताकत की दवा देते हैं।

पूजा काकाणी, इंदौर

भगवान महेश के आशीर्वाद से उत्पन्न माहेश्वरी

सर्वमान्य रूप से माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति पौराणिक कथाओं के अनुसार भगवान महेश के आशीर्वाद से हुई थी। ''माहेश्वरी'' पूर्व में क्षत्रिय थे तथा भगवान महेश की प्रेरणा से कर्म परिवर्तन कर वैश्य बने और माहेश्वरी कहलाये। समाज की नवीन पीढ़ी के लिये पुनः प्रस्तुत हैं, उस पौराणिक कथा के अंश, जिनसे हुई समाज की उत्पत्ति।

खंडेलपुर जिसे खंडेलानगर और खंडिल्ल के नाम से भी उल्लेखित किया जाता था, नामक राज्य में सूर्यवंशी क्षत्रिय राजा खड्गलसेन राज्य करता था। इसके राज्य में सारी प्रजा सुख और शांति से रहती थी। खड्गलसेन इस बात को लेकर चिंतित रहता था कि पुत्र नहीं होने पर उत्तराधिकारी कौन होगा? राजा ने मंत्रियों से मंत्रणा कर के धोसीगिरी से ऋषियों को ससम्मान आमंत्रित कर पुत्रेष्ठी यज्ञ कराया। यज्ञ से प्राप्त हवि को राजा और महारानी को प्रसादस्वरूप में भक्षण करने के लिए देते हुए ऋषियों ने आशीर्वाद दिया और साथ-साथ यह भी कहा कि तुम्हारा पुत्र बहुत पराक्रमी और चक्रवर्ती होगा, पर उसे 16 साल की उम्र तक उत्तर दिशा की ओर न जाने देना, अन्यथा आपकी अकाल मृत्यु होगी। कुछ समयोपरांत महारानी ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम सुजानसेन रखा। वह राजकाज, विद्या और शस्त्र विद्या में आगे बढ़ने लगा तथा समय आने पर सुजानसेन का विवाह चंद्रावती के साथ हुआ।

उमरावों सहित सुजानकुंवर बने पाषाण

देवयोग से एक जैन मुनि खंडेलपुर आए। कुंवर सुजान उनसे बहुत प्रभावित हुवा। उसने अनेक जैन मंदिर बनवाए और जैन धर्म का प्रचार-प्रसार शुरू कर दिया। जैनमत के प्रचार-प्रसार की धुन में वह भगवान विष्णु, शिव और देवी भगवती को मानने वाले को ही नहीं बल्कि ऋषि-मुनियों को भी प्रताड़ित करने लगा, उन पर अत्याचार करने लगा। ऋषियों द्वारा कही बात के कारण सुजानसेन को उत्तर दिशा में जाने नहीं दिया जाता था लेकिन एक

दिन राजकुंवर सुजान 72 उमरावों को लेकर हठपूर्वक जंगल में उत्तर दिशा की ओर ही गया। उत्तर दिशा में सूर्य कूंड के पास महर्षि पाराशर की अगुवाई में सारस्वत, ग्वाला, गौतम, शृंगी और दाधीच ऋषि यज्ञ कर रहे थे। यह देख वह आगबबूला हो गया और क्रोधित होकर बोला, इस दिशा में ऋषि-मुनि शिव की भक्ति करते हैं, यज्ञ करते हैं, इसलिए पिताजी मुझे इधर आने से रोकते थे। उसने क्रोध में आकर उमरावों को आदेश दिया कि इसी समय यज्ञ का विध्वंस कर दो। आज्ञा पालन के लिए आगे बढ़े उमरावों को देखकर ऋषि भी क्रोध में आ गए और उन्होंने श्राप दिया कि सब निष्प्राण हो जाओ। श्राप देते ही राजकुंवर सहित 72 उमराव निष्प्राण, पत्थरवत हो गए। यह समाचार राजा खड्गलसेन ने सुना तो अपने प्राण तज दिए। राजा के साथ उनकी 8 रानियाँ सती हो गईं।

भगवान महेश ने किया था श्राप मुक्त

राजकुंवर की कुंवरानी चंद्रावती 72 उमरावों की पत्नियों के सहित रुदन करती हुईं उन ऋषियों के चरणों में गिर पड़ी और क्षमायाचना करने लगी। तब ऋषियों ने उपाय बताया कि देवी पार्वती के कहने पर भगवान महेश्वर ही इनमें प्राणशक्ति प्रवाहित करेंगे। अतः निकट ही एक गुफा है, वहाँ जाकर भगवान महेश के अष्टाक्षर मंत्र 'ॐ नमो महेश्वराय' का जाप करो। राजकुंवरानी सारी स्त्रियों सहित गुफा में गई और मंत्र तपस्या में लीन हो गई। तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान महेश देवी पार्वती के साथ आये। पार्वती ने इन जड़त्व मूर्तियों को देखा। उनके दर्शन होते ही सारी स्त्रियाँ देवी पार्वती के चरणों में गिर पड़ी। देवी पार्वती ने उनकी तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान महेश से सुजानकुंवर तथा सभी 72 उमरावों को श्राप मुक्त कर दिया। इसके साथ ही उन्होंने सभी से उनके शस्त्र लेकर सूर्यकुंड में डलवाये और उन्हें वैश्य कर्म प्रदान किया। सुजानकुंवर को इस अपराध का मुख्य दोषी होने के कारण जागा का काम दिया और शेष 72 उमरावों से 72 माहेश्वरी खांपों की उत्पत्ति हुईं। श्राप देने वाले ऋषियों को इन सभी के गुरु का सम्मान प्रदान किया।

जागाओं के मत से सत्तु तीज पर उत्पत्ति

जागा अपने रिकॉर्ड के अनुसार माहेश्वरी समाज की उत्पत्ति 5 हजार वर्ष से भी पूर्व महाभारतकालीन मानते हैं, लेकिन उनका मत है कि 72 उमराव व सुजानकुंवर की श्राप मुक्ति की घटना महेश नवमी नहीं बल्कि सत्तु तीज को हुई थी। वे इसके समर्थन में उत्पत्ति से जुड़ी पंक्ति सुनाते हैं-'प्रथम सन् 9 का समय शुभ मोहरत तिथि तीज भादवे जन्म्यो माहेश्वरी बादा खंडेली बीज।' उनके मतानुसार 12 वर्षों से पाषाण बने 72 उमराव व राजा सुजानकुंवर को भगवान महेश ने सत्तु तीज के दिन श्राप मुक्त कर उनकी भूख की व्याकुलता शांत करने के लिए उन्हें सत्तु भोजन के रूप में प्रदान किया था। इसके बाद वे महेश नवमी के दिन डिडवाना जाकर बसे और उन्होंने वहां से अपने वैश्य धर्म की शुरुआत की थी। अतः वास्तव में महेश नवमी माहेश्वरी समाज के वैश्य धर्म स्वीकार करने का दिवस है।

कैसे करें भगवान महेश की पूजा

महेश नवमी के दिन सुबह जल्दी उठकर नित्य कर्मों से निवृत्त होकर स्नान करें व शिव मूर्ति के समीप पूर्व या उत्तर में मुख करके बैठ जाएं, हाथ में जल, फल, फूल और गंध, चावल लेकर इस मंत्र से संकल्प लें ''मम शिवप्रसाद प्राप्ति कामनया महेश नवमी निमित्तं शिव पूजनं करिष्ये''।

यह संकल्प करके माथे पर भस्म का तिलक और गले में रुद्राक्ष की माला धारण करें। उत्तम प्रकार के गंध, फूल और बिल्वपत्र आदि से भगवान शिव पार्वती का पूजन करें। यदि किसी कारणवश शिवमूर्ति का सान्निध्य प्राप्त न हो सके तो भीगी हुई चिकनी मिट्टी को ''हराय नमः'' से ग्रहण करके ''माहेश्वराय नमः'' मंत्र का स्मरण करते हुए हाथ के अंगूठे के आकार की मूर्ति बनाएं। फिर ''शूल पाणये नमः'' से प्रतिष्ठा और ''पिनाकपाणये नमः'' से आह्वान करके ''शिवाय नमः'' से स्नान कराएं और पशुपते नमः से गंध, फूल, धूप, दीप और नैवेद्य अर्पण करें। इसके बाद इस प्रकार भगवान शिव से प्रार्थना करें-

जय नाथ कृपासिंधोजय भक्तार्तिभंजन।
जय दुस्तर संसार-सागरोत्तरणप्रभो।
प्रसीद में महाभाग संसारास्त्रतस्यखिद्यतः।
सर्वपापक्षयंकृत्वारक्ष मां परमेश्वर॥

इस प्रकार पूजन करने के बाद उद्यापन करके शिव मूर्ति का विसर्जन कर दें। इस प्रकार महेश नवमी के दिन भगवान शिव का पूजन करने से साधक की हर मनोकामना पूरी होती है।

महेश नवमी वास्तव में माहेश्वरी समाज के लिये अत्यंत गौरव पूर्ण होने के साथ ही अत्यंत विशिष्ट पर्व भी है। कारण है, इसी दिन माहेश्वरी समाज का प्रादुर्भाव हुआ था। हमने भगवान महेश की कृपा से शस्त्र त्याग कर वैश्य कर्म को स्वीकार किया था। इतना महत्वपूर्ण होने के बावजूद भी इसकी गूंज हर जगह नहीं पहुंच पायी, कारण कि हमने ही इसे दीपावली की तरह भव्य रूप में मनाने का प्रयास नहीं किया। तो आईये इस पर्व से हम संकल्प लें इसे भव्य रूप में हर वर्ष मनाने का। इस बार कोरोना महामारी की इस स्थिति में इसमें मानवता की सेवा का संकल्प भी लें।

श्रीराम माहेश्वरी, वाराणसी

दीपावली की तरह मनाएँ अपना उतपत्ति दिवस

पूरे देश में तथा विदेशों में भी अपने समाज के स्थानीय संगठन महेश नवमी समारोह आयोजित करते हैं। कार्यकर्ताओं के उत्साहपूर्ण प्रयास से महेश नवमी के कार्यक्रमों में समाजबंधुओं की भागीदारी बढ़ी है। कार्यक्रमों की गुणवत्ता में निखार स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। विविधता के साथ-साथ कार्यक्रम के माध्यम से कोई न कोई संदेश देने की दृष्टि विकसित हो रही है। इस सराहनीय उपलब्धि के बावजूद महेश नवमी अपने घरों में एक त्योहार के रूप में स्थापित नहीं हो पाई है। परिवार के सभी सदस्य महेश नवमी मनाने के लिए समाज द्वारा आयोजित कार्यक्रम में शामिल होने नहीं जाते हैं, कुछ जाते हैं, कुछ घर पर ही रुक जाते हैं। लगता है महेश नवमी मनाने की परंपरा समाज के संगठनों ने शुरू की और हम लोग उसी में रम गए। इसलिए अनजाने ही घर में महेश नवमी मनाने का विचार अंकुरित नहीं हो पाया।

उल्लास को खुलकर प्रकट करें

वास्तव में परिवार के किसी सदस्य का जन्मदिन मनाने से अधिक महत्व हमें अपने समाज के प्रादुर्भाव दिवस मनाने को देना चाहिए। जिस तरह होली-दिवाली-विजयादशमी के त्योहार अपने घरों में मनाए जाते हैं, उसी तरह महेश नवमी को भी एक त्योहार के रूप में प्रत्येक माहेश्वरी के अपने-अपने घरों में मनाया जाना चाहिए। राज-तंत्र अथवा संगठनों द्वारा जो उत्सव मनाए जाते हैं, किसी भी कालखंड में उनमें शिथिलता अथवा व्यवधान आने की आशंका को नकारा नहीं जा सकता। इसके कई उदाहरण इतिहास व वर्तमान में मौजूद हैं। एक त्योहार के रूप में महेश नवमी घर में मनाने से सभी सदस्यों की इसमें भागीदारी होगी। इससे माहेश्वरी भाव अधिक पुष्ट होगा। इस पावन दिवस को त्योहार के रूप में अंगीकार करने से यह परिवार में सामाजिक संस्कार की नींव को मजबूत करेगा। अन्य त्योहारों की भांति घर में महेश नवमी को एक त्योहार के रूप में स्थापित करने के लिए होली, दीपावली व विजयादशमी जैसे उत्साह की जरूरत है।

अपनों के बीच बांटें पर्व की खुशियाँ

अपने मित्रों-रिश्तेदारों को तथा समाजबंधुओं को इस अवसर के उपलक्ष्य में शुभकामना संदेश प्रेषित किए जाएं। घर के प्रवेश द्वार पर फूल पत्ती, सजावटी वंदनवार, रंगोली, बिजली से सजावट करें। स्थानीय संगठन इसके लिए प्रतियोगिता आयोजित कर सकते हैं। व्हाट्अप द्वारा उनके चित्र मंगवाकर पुरस्कृत किया जा सकता है। परिवार के सभी सदस्य मिलकर एक साथ घर में महेश वंदना करें, प्रसाद वितरित करें। अन्य त्योहारों की भांति महेश नवमी पर भी रसोई में कुछ विशिष्टता रखी जाए। घर के सभी सदस्य अपने से बड़ों को प्रणाम करें। परिवार में अर्थोपार्जन करने वाले सदस्य बड़ों को उनकी आवश्यकता/अभिलाषा के अनुरूप उपहार भेंट करें। परिवार प्रमुख छोटों को अन्य त्योहारों की भांति इस दिन भी त्योहारी दें। परिवार के सदस्यों के साथ अपने आवास-प्रतिष्ठान के कर्मचारियों व सेवकों को भी त्योहारी दी जाए। बच्चों को उपहार दिया जाए जिससे उनके मन में महेश नवमी के लिए आकर्षण जागृत हो, उनमें माहेश्वरी भाव का बीजारोपण हो।

सेवागतिविधियों का भी करें आयोजन

किसी रिश्तेदार को सहयोग की आवश्यकता हो तो इस दिन उसका सहयोग करें, किसी कारण से तत्काल सहयोग संभव न हो तो उसका सहयोग करने का संकल्प करें। यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि जिनका सहयोग किया जा रहा है उनका स्वाभिमान आहत न हो। समाज के किसी प्रकल्प अथवा सेवा निधि को आर्थिक सहयोग भेंट करें। भेंट राशि की संख्या से अधिक महत्व इस भाव का है कि हमने सेवा राशि अर्पित की। महेश नवमी के उपलक्ष्य में इस दिन अथवा महेश नवमी के पूर्व किसी सुविधाजनक दिन सामूहिक रूप से कारसेवा की जाए। सिख समाज की इस अनुपम परंपरा को निभाते हुए अपने समाज द्वारा स्थापित भवन / धर्मशाला / अतिथिगृह, समाज के किसी प्रकल्प, किसी मंदिर अथवा किसी सार्वजनिक स्थल का कारसेवा हेतु चयन किया जा सकता है। अपने परिवार के पुरखों का श्रद्धा स्मरण करते हुए परिवार के प्रति उनके योगदान को याद किया जाए। स्थानीय संगठन के माध्यम से अपने क्षेत्र के श्रद्धा-पुरुष, प्रादेशिक व राष्ट्रीय संगठन के माध्यम से प्रादेशिक व राष्ट्रीय स्तर पर श्रद्धा पुरुषों का स्मरण किया जाए। समाज के प्रति इनके समर्पण, योगदान से वर्तमान पीढ़ी को अवगत कराया जाए। व्यक्तिगत स्तर पर अथवा संगठनों के माध्यम से पौधोरापण भी किया जाए। वर्तमान में जब सम्पूर्ण राष्ट्र कोरोना महामारी से जूझ रहा है, ऐसे में अनिवार्य है कि हम मानवता की सेवा में अपना योगदान देकर अपने आपके माहेश्वरी होने का परिचय भी दें।

वैसे तो काली मिर्च हमारे कीचन में उपयोग में आने वाले मसाले में से एक है, जो कई व्यंजनों के जायके में चार चाँद लगाने में कोई कसर नहीं रख छोड़ती। लेकिन इसकी विशेषता सिर्फ यहीं पर पूर्ण नहीं होती, यह तो प्रकृति का वह वरदान है, जो हमें स्वस्थ रहने के लिये मिला है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि काली मिर्च के काले-काले कुछ दाने कई बीमारियों के दुश्मन हैं। रोजाना कालीमिर्च का सेवन करने से कई सारी बीमारियां ठीक हो जाती हैं। आईये जानें हम कब करें इसका कैसे उपयोग?

कैलाश लड्ढा, जोधपुर

बीमारियों की दुश्मन काली मिर्च

गोल-गोल कालीमिर्च के दाने खाना खाते हुए अगर किसी के मुंह में आ जाते हैं तो लोग मुंह बनाने लगते हैं। लेकिन क्या आपको मालुम है कि ये गोल-गोल काले दाने आपकी आंखों की रोशनी के लिए बहुत ज्यादा फायदेमंद है? अपितु इन दानों से मोटापा और बवासीर जैसी गंभीर बीमारियां तक ठीक हो जाती हैं। बस जरूरत है इसके सही समय पर सही ढंग से उपयोग भर करने की। यही इसका सही उपयोग किया तो यह आपके तन के शत्रु को समूल नष्ट करने में पीछे नहीं रहेगी।

आंखों के लिये वरदान

पूरे दिन कंप्यूटर या लैपटॉप के आगे बैठकर काम करने से आंखें खराब हो गई हैं तो कालीमिर्च आपके लिए कारगर नुस्खा साबित हो सकता है। आंखों की रोशनी ठीक करने के लिए काली मिर्च और घी का सेवन करें। इसके लिए सबसे पहले काली मिर्च को पीस लें। अब आधा चम्मच पिसी हुई काली मिर्च को थोड़े से घी के साथ रोज सुबह-शाम खाएं। आंखों की रोशनी ठीक हो जाएगी। अगर आंखों में चश्मा लगा है तो चश्मा भी उतर जाएगा।

इंफेक्शन पर भी कारगर

पेट का संक्रमण हो या स्किन इंफेक्शन... कालीमिर्च हर तरह के संक्रमण को ठीक कर देती है। फोड़े-फुसियों में काली मिर्च को पीस कर लगायें। कुछ दिनों में फोड़े-फुंसियां ठीक हो जाएंगे। इसके अलावा शक्कर के साथ काली मिर्ची को मिलाकर खाने से एलर्जी भी ठीक हो जाती है। पेट का संक्रमण ठीक करने के लिए रोज कालीमिर्च के दो दाने खाएं। इससे इन्फेक्शन का खतरा कम हो जाता है।

डिप्रेशन में भी फायदेमंद

कालीमिर्च के दो दाने अवसाद जैसी बीमारियों को भी ठीक कर देते हैं। दरअसल काली मिर्च खाने से शरीर में सेरोटोनिन हार्मोन बनता है, जो अच्छे मूड के लिए जिम्मेदार होता है। मस्तिष्क में सेरोटोनिन की मात्रा बढ़ने से मूड स्विंग के लक्षण में कमी आती है जिससे डिप्रेशन ठीक हो जाता है। इसलिए रोजाना अपने खाने में काली मिर्च का इस्तेमाल करें और खुशमिजाज रहें।

वजन रहे नियंत्रित

कालीमिर्च वजन कम करने का अचूक उपाय है। इसकी पुष्टि 2010 में एक शोध में हो चुकी है। इस शोध के अनुसार काली मिर्च शरीर की वसा को कम करने का भी काम करती है। जिससे पाचन क्रिया तेज होती है और कम समय में अधिक कैलोरी खर्च होती है। साथ ही यह शरीर से टॉक्सिन्स को निकाल बाहर करने में भी कारगर है। मोटापा दूर करने में भी काली मिर्ची मददगार साबित होती है।

बवासीर का भी जड़ से खात्मा

बवासीर जैसी गंभीर बीमारियों को भी कालीमिर्च ठीक कर देती है। बवासीर से निजात पाने के लिए 20 ग्राम कालीमिर्च, 10 ग्राम जीरा और 15 ग्राम शक्कर या मिश्री पीस कर मिला लें। अब इस मिश्रण को रोज सुबह-शाम पानी के साथ खाएं। कुछ ही दिनों में बवासीर से आराम मिलेगा।

थाइराइड की भी दुश्मन

रोज़ाना 21 कालीमिर्च के दानों का पावडर सुबह खाली पेट गरम पानी के साथ सिर्फ 21 दिन लेने से इस भयंकर बीमारी से मुक्ति मिलती है। शुरू करने से पहले और बाद में ब्लड टेस्ट जरूर करवा लें। इस टेस्ट से यह स्पष्ट हो जाएगा कि आपकी समस्या कितनी गंभीर थी और इससे उसमें कितना लाभ हुआ?

वर्तमान में कोरोना महामारी तो ठीक से थमी भी नहीं है और ब्लैक फंगस का आतंक बढ़ने लगा है। देशभर में ब्लैक फंगस के संदिग्ध मरीज सामने आए हैं इनमें से कई आंखें गंवा चुके हैं तो कुछ अपनी जिन्दगी भी। इन स्थितियों के बावजूद इस बीमारी से किसी को भी डरने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में यदि शुरुआती दौर में ही इसका इलाज शुरू कर दिया जाए तो इसे आसानी से हराया जा सकता है। आईये जानें इस सम्बंध में क्या कहते हैं, प्रख्यात ईएनटी विशेषज्ञ डॉ. एस. के. जैथलिया।

डॉ. एस. के. जैथलिया
उज्जैन

कठिन नहीं है ब्लैक फंगस को हराना

ब्लैक फंगस अथवा म्यूकर माइकोसिस बीमारी सामान्यतः ऐसे कोरोना पेशेंट को हो रही है, जिनको डायबिटीज हो, किडनी की प्रॉब्लम हो, कैंसर की प्रॉब्लम है या ऐसे पेशेंट जिनमें इम्युनिटी कम है, स्टेरॉइड ज्यादा मात्रा में ली है या हायर एंटीबायोटिक ज्यादा मात्रा में यूज हो रही है। उनमें किसी-किसी पेशेंट में इस प्रकार की समस्या पाई जा रही है। हालांकि अभी यह समस्या बहुत कम लोगों में ही है। इसके लिए हमें थोड़ी सी सावधानी रखने की आवश्यकता है। यदि किसी को भी कोरोना के इलाज के दौरान या इलाज के बाद नाक में सूखापन लगता है, इरिटेशन होता है, या नाक में पपड़ी जमती है और खास करके एसे पेशेंट जो डायबिटीक है उन्हें अगर ऐसा लगता है तो वे तुरंत इस बात पर ध्यान दें ताकि शुरुआती दौर में ही इस बीमारी को रोका जा सके। साथ ही मरीजों में ऊपर के दांतो में दर्द होना, गालों पर हल्की फुल्की सूजन आना यह इस बीमारी की शुरूआती अवस्था रहती है। इस अवस्था में यदि पेशेंट ध्यान दें तो इसकी रोकथाम की जा सकती है। इससे इसके जो लेट कॉम्प्लिकेशन हैं, वह नहीं होंगे।

इस बीमारी से कैसे बचें

शासन द्वारा भी अपने स्तर पर इस बीमारी से लड़ने के लिए व्यवस्था की जा रही है। वर्तमान में इसके लिए उपलब्ध होने वाली दवाइयों की कमी है पर प्रशासन की व्यवस्था के अनुसार जल्द ही इस बीमारी की दवाइयां आसानी से उपलब्ध हो पाएंगी। जिन मरीजों में इस प्रकार के थोडे भी लक्षण अगर दिखाई देते हैं तो उन्हें घबराना नहीं है। तुरंत उसका इलाज लेना है और स्वस्थ होकर जब वह घर जाएं तो अपनी डायबिटीज पर कंट्रोल रखें, रेगुलर चेकअप करवाते रहें। मरीजों को ऐसे बंद कमरे में जहां पर धूप नहीं आती हो, सीलन हो वहां नहीं रहना चाहिए। शहर में कुछ ऐसे मामले सामने आए हैं जिनमें इस प्रकार की समस्या देखी जा रही है। पर इन्हें अभी और जांच की आवश्यकता है, जिससे कि कंफर्म हो कि वह ब्लैक फंगस बीमारी से ग्रसित हैं। वर्तमान में निश्चित तौर पर यह नहीं कहा जा सकता कि वह सभी मामले ब्लैक फंगस के ही हैं। सामान्य संक्रमण के कारण भी कभी-कभी ऐसी कई समस्याएं आती हैं।

ब्लैक फंगस के लिए होने वाली जांचे

ब्लैक फंगस की जांच के लिए शुरुआती दौर में नाक का परीक्षण किया जाता है। जिसमें नाक का स्वाब लिया जाता है जिसमें देखा जाता है कि इसमें फंगस है कि नहीं। इसके अलावा सीटी स्कैन और एमआरआई करवाई जाती है। इन सभी जांचों के बाद पता चलता है कि मरीज को फंगस है या नहीं, या फंगस का कितना इंवॉल्वमेंट है। यदि फंगस केवल नाक और साइनस में है तो ईएनटी सर्जन उसे ऑपरेट करते हैं। यदि ऊपर की हड्डी उसमें इंवॉल्व होने लगती है तो उसमें फेसो मैक्सिलरी सर्जन इंवॉल्व होते हैं। यदि आंखों का इंवॉल्वमेंट होता है तो आई स्पेशलिस्ट आई सर्जन भी इसमें इंवॉल्व होते हैं। इस बीमारी का इलाज एक टीम वर्क है जिसमें डॉक्टर की टीम मिलकर मरीज का इलाज करती है और उसे स्वस्थ करती है।

IS:1786
CM/L - 6943589

GBR TMT
THE STRENGTH WITHIN
www.gbrmetals.com

Manufacturers of High quality MS Billets and TMT Bars

Works:
#295, G.N.T Road,
Peravallur Village,
Ponneri Taluk - 601 206
Tamil Nadu
Website: www.gbrmetals.com

Registered Office:
#4, Ramanan Road,
Chennai - 600 079
Tamil Nadu
Ph: +91 44 25292151
E-mail: sales@gbrmetals.com

कहावत है दान-धर्म कुछ ऐसे किया जाए कि अगर एक हाथ दान-धर्म करे तो दूसरे हाथ को भी इसका भान ना हो ; पर आम दिन की तो बात छोड़िए जनाब आज कोविड जैसी वैश्विक महामारी के दौर में जरूरतमंदों को दान देकर उसका ढिंढोरा पीटकर उनकी जरूरतों का मजाक बनाया जा रहा है। अधिकांश दानदाता दान को कई-कई गुना अधिक दान-धर्म बताकर वाह-वाही लूट रहे हैं। इसके कारण जरूरतमंद समाज-बंधु स्वयं को निम्न समझकर अपनों से ही कतराने लगे हैं। आवश्यकता होने पर भी अपने स्वाभिमान को बचाने के लिए अपनी लाचारी छुपाकर भूखे-पेट सोने को मजबूर हैं। काम-धंधों के मंद-बंद पड़ने के कारण बढ़ती बेरोजगारी से उनकी रही-सही पूंजी भी साफ हो रही है। उनकी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति नाजुक है। क्या ऐसे समय में दान-धर्म को सोशल मीडिया के जरिये भूनाना सही है अथवा यही सही समय है समाज में अपनी प्रतिष्ठा-प्रदर्शन का? आइये जानें इस स्तम्भ की प्रभारी सुमिता मूंदड़ा से उनके तथा समाज के प्रबुद्धजनों के विचार।

"दान-धर्म को प्रतिष्ठा-प्रदर्शन बनाना"
उचित अथवा अनुचित ?

दान-धर्म निःस्वार्थ भाव से किया जाए

कहावत है कि दान-धर्म कुछ ऐसे किया जाए कि अगर एक हाथ दान-धर्म करे तो दूसरे हाथ को भी इसका भान ना हो; पर आम दिन की तो बात छोड़िए जनाब आज कोविड जैसी वैश्विक महामारी के दौर में जरूरतमंदों को दान देकर उसका ढिंढोरा पीटकर उनकी जरूरतों का मजाक बनाया जा रहा है। अधिकांश दानदाता दान को कई-कई गुना अधिक दान-धर्म बताकर वाह-वाही लूट रहे हैं। इसके कारण जरूरतमंद समाज-बंधु स्वयं को निम्न समझकर अपनों से ही कतराने लगे हैं। आवश्यकता होने पर भी अपने स्वाभिमान को बचाने के लिए अपनी लाचारी छुपाकर भूखे-पेट सोने को मजबूर हैं। काम-धंधों के मंद-बंद पड़ने के कारण बढ़ती बेरोजगारी से उनकी रही-सही पूंजी भी साफ हो रही है। उनकी शारीरिक, मानसिक और आर्थिक स्थिति नाजुक है। ऐसे समय में अपनी सामाजिक-साख को बढ़ाने के लिए दान-धर्म को सोशल मीडिया में परोसना उचित नहीं है। इस प्रचार-प्रसार का एक सकारात्मक पहलू यह जरूर है कि यह दान-धर्म औरों के लिए प्रेरणा का भी स्रोत बन जाता है, एक-दूसरे को देखकर भी लोग जरूरतमंदों की तरफ सहायता का हाथ बढ़ाते हैं। दूसरों के लिए प्रेरणा अवश्य बनें पर कुछ इस तरह की दान लेनेवाले का अहम और स्वाभिमान आहत ना हो। अगर दान-धर्म को सोशल मीडिया में जाहिर करें भी तो दान लेनेवाले का परिचय और तस्वीर को स्वयं तक सीमित रखें। दान का पूर्ण फल भी तभी प्राप्त होता है जब दान निःस्वार्थ भाव से किया जाए।

■ **सुमिता मूंधड़ा**, मालेगांव

सृष्टि का एक नियम है
जो बाँटोंगे वही आपके पास बेहिसाब होगा
फिर चाहे धन हो, अन्न हो, सम्मान हो,
अपमान हो, नफरत हो या प्रेम हो।

मदद लेने वाले के नाम का उल्लेख करना हमारी सभ्यता के खिलाफ

दोनों पहलू पर बात करूंगा एक पहलू यह है कि चूंकि व्यक्ति दान देता है, सहयोग करता है, तो उसको अपने व्यक्तिगत प्रचार व प्रसिद्धि के लिए यह नहीं करना चाहिए। ये शिष्टता और सभ्यता के खिलाफ है। लेकिन जो लोग ये समझते हैं कि इससे लोगों को प्रेरणा मिलेगी और लोग आगे आएंगे, तो उनका यह पहलू भी तर्कसंगत है। इसको भी अस्वीकार नहीं कर सकते। मुझे आज पता लगे कि कोविड के समय में मेरे पड़ोसी के परिचित ये काम कर रहे हैं, तो मुझे भी प्रेरणा मिल सकती है, यह तभी सम्भव है जब मुझे पता चले।

आज के दौर में ऐसे लोग मिलना बहुत मुश्किल है, जो गुप्त दान करें। इसे आज के समय में स्वीकार कर लेना चाहिए। जो दान या सहयोग करेंगे वे लोग अपना नाम धर्मशालाओं, भवनों में लिखवाते ही हैं। इससे संतोष मिलता है और उसको मैं बहुत गलत नहीं मानता। लेकिन हम गुप्तदान दे दें, सहयोग कर दें और अपना नाम भी नहीं आने दें, इतनी बड़ी ऊंचाई तक पहुंचने के लिए जो मानसिकता चाहिये वह आज के वातावरण में संभव नहीं है। क्योंकि वह जानता है कि मैं जो भी सहयोग जिस संस्था को करूंगा, वहां के पदाधिकारी भी उसका श्रेय लेंगे और वो लोग हमको श्रेय नहीं देगे इसलिए वह चाहता है कि उनका नाम आना चाहिए। उदाहरण के लिए महासभा भी है। मुझे ऐसा लगा दोनों पहलू में कि जिसको सहयोग दिया जाता है, उसके नाम का उल्लेख नहीं होना चाहिए बल्कि उसे गुप्त ही रखा जाना चाहिए। इसी में हमारी सभ्यता है क्योंकि उसके नाम को प्रस्तुत करना वह उसका अपमान ही है। इससे उसके मन में हीन भावना पैदा होगी, हम लोग इसके पक्षधर बिल्कुल भी नहीं है। ये होना भी नहीं चाहिए। देने वाले अपना नाम कर देवें ये एक बात अलग है लेकिन लेने वाले का नाम सबके सामने उजागर करेंगे, तो उसका अपमान होगा। इससे आप जो कर रहे हैं, उसका मूल्य घट जाएगा। ये बहुत निम्न स्तर का काम होगा। ये शोभा देने लायक नहीं है।

■ **कमल गांधी**, कोलकाता

लोक मान्यता अनल सम कर तप कानन दाहू

अभी कुछ वर्ष पूर्व की बात है जब एक क्लब में गरीब, असहाय विधवाओं को सिलाई मशीनें बांटी जा रही थी, पदाधिकारी इनके साथ फोटो खिंचवा रहे थे तो मैंने चलती सभा में ही इस बात का विरोध किया कि इस तरह किसी के स्वाभिमान को रौंद कर सहायता देना दान के मूल महत्व को समाप्त कर देना जैसा है। बेहतर यही होगा कि ये मशीनें आप इनके घर जाकर दें एवं इनका नाम तक जगजाहिर न हो। इसका असर यह हुआ कि ठीक वही किया गया जो मैंने कहा, इतना ही नहीं आगे भी ऐसे सहयोगों के लिए यह परिपाटी बना दी गई। आखिर हम दान का प्रदर्शन कर, अखबारों में तस्वीरें छपवा कर क्या प्राप्त करना चाहते हैं? प्रदर्शन दान के महत्व को ही समाप्त कर देता है। ईश्वर ने अगर हमें धन दिया है तो यह हमें उसकी बख्सी हुई नेमत है। ऐसे में उसकी कृपा को हम इस तरह से दें कि लेने वाले को कोई कष्ट न हो, उसे गर्दन नीचे न झुकानी पड़े। ऐसा करने से लेने वाले का स्वाभिमान तो बचेगा ही, आपकी आत्मा भी प्रमुदित, पुष्ट होगी। आज कोरोनाकाल में भी हमारे अनेक भाईयों पर गाज गिरी है। लॉकडाऊन से व्यापार बंद हो गए फिर कई घरों में कोरोना हो जाने से स्थिति कोढ़ में खाज वाली बन गई। ऐसे में हमारे समर्थ भाई गुपचुप उन्हें मदद करें, उन्हें हौंसला दें। इससे वे आपको ढेरों दुआएं देंगे और ये दुआएं ही आपकी अपनी विपत्तियों में कवच बन कर आपकी रक्षा करेंगी। समय किस का सगा रहा है? उसका मिज़ाज़ बदलते देर नहीं लगती। प्रसंगवश मुझे तुलसी याद हो आए हैं, जो मानस के उत्तरकाण्ड में क्या खूब लिखते हैं-लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहू अर्थात् प्रदर्शन की चाह उस अग्नि की तरह है जो हमारे सम्पूर्ण तप को दग्ध कर देती है।

■ **हरिप्रकाश राठी**, जोधपुर

दान अधर्म न बन जाऐ इसका ध्यान रखना जरूरी

एक जमाना था, जब लोग एक हाथ से दिया हुआ दान दूसरे हाथ को भी मालूम ना हो, इस तरह की भावना रखते हुए देते थे। ज्यादातर गुप्त दान देना तथा ईश्वर की कृपा से यह हो रहा है, ऐसी भावना रखना श्रेष्ठ माना जाता था। किंतु समय के साथ प्रदर्शन की प्रवृत्ति बढ़ गई है। मेरा दिया हुआ छोटा-से-छोटा दान भी, ज्यादा-से-ज्यादा लोगों को दिखे, यह भावना पनपती जा रही है, जो निंदनीय तो है ही, साथ ही हास्यास्पद भी हो जाती है। अब तो प्रसार माध्यम, फोन हाथ में आ गया है, जो क्षण भर में आपकी बात हजारों लाखों तक पहुंचा सकता है। आपका दान-धर्म अगर किसी अन्य व्यक्ति या संस्था द्वारा प्रदर्शित हो रहा है और आपने भी प्रदर्शन की भावना से दान नहीं किया है, तो ठीक है। क्योंकि इससे औरों को भी प्रेरणा मिलती है, किंतु इसके साथ ही जिसकी मदद की जा रही है उनकी दयनीय स्थिति उजागर करते हैं, तो वह धर्म नहीं अधर्म बन जाएगा। कोरोना काल में आप सेवाभावी बनकर किसी की मदद हेतु व्यक्तिगत स्तर पर कार्य करते हैं और औरों को भी जोड़ना चाहते हैं, तो जानकारी के रूप में वह उचित ही होगा। अन्य संस्थाओं का भी सम्मिलित रूप में कार्य हो रहा है, तो वहां व्यक्ति विशेष को प्रतिष्ठित मत कीजिए। वह अनुचित होगा। और अनावश्यक आडंबर तो बहुत ही घातक होता है।

■ **पुष्पा बल्दवा**, ठाणे (महाराष्ट्र)

हमने ही बनाया दिखावे को परम्परा

हमारे समाज में बड़े-बड़े आयोजनों चाहे वह धार्मिक हो या सामाजिक बोली लगाने का बड़ा बोलबाला प्राचीन समय से ही रहा है। भगवान महेश के अभिषेक को ही ले लीजिए। उसके लिए बोल लगती है। हमारी आस्था के केंद्र मंदिर में ध्वजा, कलश चढ़ाने की बात हो उसके लिए भी बोली लगती है। बोली के माध्यम से समाज के बंधुओं द्वारा खुलकर सहयोग दिया जाता है और समाज में उनकी प्रतिष्ठा भी बनती है। यह परंपरा मैं जब से आंखें खुली तब से देखती आई हूं। बंधुओं ने किस तरह से पैसा कमाया है? उनका आचरण कैसा है? उनका व्यवहार कैसा है? यह बात यहां आकर सब गौण हो जाती है क्योंकि वह समाज को अर्थ सहयोग दे रहा है। उसके सारे अवगुण छिप जाते हैं। यहीं से पैसा व्यक्ति से बड़ा बन जाता है और समाज में दान देकर प्रतिष्ठा पाने की अवधारणा मन में घर कर जाती है। आज कोरोना के समय में भी अगर हमें यह प्रवृत्ति देखने को मिले तो यह कोई नई बात नहीं है क्योंकि यह परिपाटी बरसों से चली आ रही है। जब यह प्रारंभ हुई होगी, उस समय उसका स्वस्थ रूप रहा होगा किंतु अब इस परंपरा में यह प्रदर्शन का रूप नजरों में चुभने लगा है क्योंकि दान देने वाले व्यक्ति येन-केन-प्रकारेण पैसा कमाकर समाज में दान देकर प्रतिष्ठा पा लेता हैं। यह बातें विचारणीय है। अर्थ बिना कुछ भी संभव नहीं। नव निर्माण कार्य भी नहीं। अन्य गतिविधियां के लिए अर्थ चाहिए। जिसमें आर्थिक योगदान एक ऐसा सुगम मार्ग है जो समाज में प्रतिष्ठा और पद की ओर ले जाता है। हमारे धर्माचार्य भी ऐसे ही दानदाताओं को वरीयता देते हैं फिर भला हम कैसे बात कर सकते हैं कि प्रतिष्ठा पाने की यह प्रवृत्ति ठीक नहीं।

■ **डॉ. विमला भंडारी**, सलूबर-राजस्थान

शर्मिन्दगी से बड़ी जिंदगी है

वर्तमान कोरोना काल में हमारे समाज में कई परिवार ऐसे हैं जो घोर आर्थिक संकट से जूझ रहे हैं। उनके आय के साधन बंद हो गये हैं, परिवार के लिए दो समय का खाना जुटाना भी समस्या बन गया है। ऐसी विकट परिस्थिति में समाज के साधन सम्पन्न लोगों से अपेक्षा की जाती है कि वे मदद के लिए आगे आएं। यह सुखद बात है कि कई लोग आगे आकर सहायता भी दे रहे हैं। सहायता करने वालों में दो तरह की सोच के लोग हैं। एक तो वे जो बिना किसी शोर-शराबे के गुप्त रूप से मदद करते हैं लेकिन ऐसे लोगों की संख्या नगण्य है। दूसरी तरह की सोच वाले लोग तो अपने सम्मान, प्रतिष्ठा वृद्धि के लिए दान या सहायता करने के साथ अपना नाम भी चाहते हैं। अब प्रश्न यह है कि क्या उचित है क्या अनुचित है? हमारे धर्मग्रंथों में तो लिखा है कि गुप्त रूप से दिया गया दान या सहायता ही फलदायी होती है। फिर भी जो अधिकांश लोग दान देने के साथ - साथ अपना नाम भी चाहते हैं तो इसमें क्या अनुचित है? ऐसा करने से अन्य लोग भी दान देने के लिए प्रेरित होते हैं। मनोवैज्ञानिक मत के अनुसार जब आप किसी की सहायता करते हैं तो आपके भीतर मनोतृप्ति वाले हारमोन स्त्रावित होने लगते हैं जो आपके अंदर सुख का संचार करते हैं। यदि सहायता पाने वाले कुछ लोग शर्मिन्दगी महसूस भी करते हैं तो उसे नजरअंदाज कर देना चाहिए क्योंकि शर्मिन्दगी से बड़ी जिंदगी है। सहायता के अभाव में यदि कुछ लेग अपने जीवन से हाथ धो बैठते हैं तो इससे बुरी बात क्या होगी?

■ **प्रो. डॉ. पंकज माहेश्वरी**, उज्जैन

एक हाथ से किया जाय तो दूसरे को भी खबर न हो।

वर्तमान की विकट परिस्थितियां हो या कोई भी समय रहा हो दान का महत्व या फिर यों कहें जरूरत हमेशा ही रही है। समाज में सभी तरह के लोग होते हैं, कुछ ईश्वर की कृपा से साधन संपन्न, तो कुछ ऐसे जो अपनी दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति में भी सक्षम नहीं होते। हमारे धर्म ग्रंथों, शास्त्रों सभी में दान का महत्व बताया गया है। यदि आप समर्थ हैं तो अपने समाज देश या किसी व्यक्ति विशेष के उत्थान के लिए दान कर एक अहम भूमिका निभा सकते हैं। अब प्रश्न आता है, दान का प्रदर्शन उचित या अनुचित? तो मेरा मानना है, दान का प्रदर्शन उचित नहीं। ऐसा करने से उसका महत्व गौण हो जाता है। कहा तो ये जाता है कि दान ऐसे हो, एक हाथ से किया जाय तो दूसरे को भी खबर न हो। ऐसा यों ही नहीं कहा गया है, इसके पीछे उचित कारण भी है।

दान के प्रदर्शन से उस व्यक्ति की प्रतिष्ठा को आघात पहुंचता है, जिसे हम दान दे रहे हैं, उसमें हीन भावना आती है, वो कुंठाग्रस्त भी हो जाता है। दान प्रदर्शन द्वारा उसे ये महसूस होता है कि मैं दूसरों की दया पर आश्रित हूं, मैं किसी काबिल नहीं, जबकि ऐसा नहीं मेहनत सभी करते हैं पर किस्मत में जिसके जितना लिखा हो उतना ही प्राप्त होता है। जो दान दे रहे हैं वो भगवान नहीं बस ईश्वर ने उन्हें एक जरिया बनाया है सहायता का, समाज के उत्थान का। गर्व इस बात पर मत करो कि मैंने दान दिया, मेरे कारण इन लोगों का भला हो गया। गर्व करना है तो इस बात पर करो कि हे प्रभु! आपका कोटिशः आभार आपने मुझे इस लायक समझा कि मैं किसी के काम आ सकूं। इसलिए अंत में बस यही कहूँगी 'दान करो भला करो, दिखावा नहीं'।

■ **सरिका फलोर**, नैरोबी (कैन्या)

किसी को हीन महसूस करवाना उचित नहीं

सनातन धर्म संस्कृति में दान की महिमा का सर्वत्र बखान किया गया है। रामचरितमानस में बहुत से प्रसंगों में दान की महत्ता का उल्लेख गोस्वामीजी ने किया हैः-

बिप्रन्ह दान बिबिध बिधि दीन्हे।
जाचक सकल अजाचक कीन्हे।। (श्रीराम राज्याभिषेक, उत्तरकाण्ड)

अगर हम किसी भी रूप में सक्षम हैं तो किसी जरूरतमंद की मदद करना हमारा पहला धर्म होता हैं। विशिष्ट अवसरों पर भी दान करके हम मानवता के प्रति हमारे कर्तव्य का निर्वहन करते हैं। लेकिन आजकल ऐसा देखा जाता हैं कि बहुत से लोग दिखावे अथवा प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए दान कार्य करते हैं जो किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं है। क्या आपने कभी सोचा है कि जिस दीन-हीन अथवा जरूरतमंद को चंद वस्तुएं या दान राशि देते हुए आप तस्वीर खिंचवाते हो, उसके आत्मसम्मान को कितनी ठेस पंहुचती होगी? स्वयं की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए किसी अन्य की प्रतिष्ठा का हनन करने का कार्य किसी भी कोण से उचित नहीं है? किसी की मजबूरी को जगजाहिर करना, केवल इसलिए कि चंद लोगों के बीच में हमारा नाम हो, यह सर्वथा अनुचित है। सर्वश्रेष्ठ दान वही कहलाता है, जिसको देते ही उसको भूला दिया जाये। रहीम कवि ने कहा है- 'देनहार कोई और है भेजत जो दिन रैन। लोग भरम हम पर करे तासु निचे नैन।।'

इसीलिए दान कार्य प्रदर्शन करने की गतिविधि ना होकर समाज कल्याण की मंशा से ही किया जाना चाहिए,तभी वह सार्थक और फलदायी होगा।

■ **बिन्दु सोमानी**, मदनगंज-किशनगढ़ (राज.)

क्या सही क्या गलत ये चिंतनीय

हम किसी समाज की संतान से पहले भारतीय हैं। भारत परोपकार, त्याग, तप का गर्भ है, विश्व कल्याण का भाव प्रथम पंक्ति में संझों 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु विरामया' के प्रादुर्भाव से हमारे वजूद में शामिल है। महामारी आज से नही सैंकड़ों वर्षो से अलग अलग रूप में हमारे दरवाजों पर अपना भिन्न-भिन्न रूप लेकर आयी। उस समय भी प्लेग, भूखमरी का स्वरूप यही था और उसकी क्षति भी मानव को आज की तरह ही होती थी। मेरी पुस्तक 'अनदेखी' में इन दोनों महामारियों से जुडे किस्से शामिल हैं, जो आज की परिस्थिति के अनुरूप ही लगते हैं। केवल अंतर इतना ही है कि उस समय किसी भी मानव में महत्वाकांक्षा का भाव उदारवादिता व परोपकार के भाव की तुलना में न के बराबर था। हो सकता है तकनीक, विज्ञान, विकास के प्रभाव से मनुष्य इस सत्य को स्वीकारने से कतराए परंतु हमारे भीतर के देवता से हम मुंह नही फेर पाएंगे। हां प्रोत्साहन तो इस युग में बढ़-चढ़ कर अपना स्थान प्राप्त कर चुका है, हमे हतोत्साह का भय नहीं, किन्तु सहायता प्राप्त करने वाले अपने आपको ऋणी अवश्य महसूस करता है और सहायता का प्रचार उस ऋण को भूलने नहीं देता। अब यह प्रचार, यह दृश्य व दान सही है या गलत कहना संभव नहीं। यह हमारे लिए विचारणीय अवश्य है। हमारे विचार व मूल को दर्शाने का दर्पण भी है। मेरा मानना ओर समझना यह है कि हम स्वयं के भीतर से दूरी बना हर कार्य व कल्याण भाव को स्पर्धा बना ही चुके है। अगर हमें यह उचित लगता है तो सोचना चाहिए, किसी के विचार से भेद होना गलत नहीं परंतु स्वयं के भीतर से भेद होना पीड़ादायक अवश्य है।

■ **विकास चांडक**, जोधपुर (राज)

ऋषिमुनि समूह द्वारा काल गणना की
प्राचीन नगरी उज्जयिनी से प्रकाशित

श्री विक्रमादित्य पञ्चाङ्ग

इतना सरल की अपने घर के पंडित आप खुद बन जाए

डेढ़ वर्षीय विवाह मुहूर्त के साथ

व्रत-पर्व देखना हो या शुभ मुहूर्त या
विवाह के लिए पत्रिका का करना हो मिलान
कहीं जाने की जरूरत नहीं, स्वयं देखें अपने पञ्चाङ्ग में

90, विद्या नगर, टेढ़ी खजूर दरगाह के पीछे, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.)
फोन - 0734-2526761, मो. 094250-91161, 98275-59522

सभी प्रमुख बुक स्टॉलों पर उपलब्ध

नए साहित्यकारों का संबल बनेगा

ऋषिमुनि प्रकाशन

आप अच्छे लेखक हैं तो आपको एक अच्छे प्रकाशक की भी आवश्यकता है, जो आपके बजट में आपकी अनमोल कृति का प्रकाशन कर पाठकों तक पहुँचा सके। ऐसे सभी लेखकों के लिए देश का प्रतिष्ठित प्रकाशन समूह **''ऋषिमुनि प्रकाशन''** समाधान बनकर आया है।

''ऋषिमुनि प्रकाशन'' विगत 30 वर्षों से अपने सुरूचि पूर्ण, सुंदर एवं गुणवत्तापूर्ण प्रकाशन के लिए प्रतिबद्ध व प्रसिद्ध है। निरंतर आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए प्रकाशन समूह ने विभिन्न विषयों पर अब तक 100 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन कर पाठकों के बीच अपनी पेठ बनायी है।

अब समूह ने अपनी नई योजना के तहत अत्यल्प लागत शुल्क लेकर कई सेवाओं के साथ जैसे टाईपिंग, प्रुफ-रीडिंग, डिज़ाइनिंग, ISBN No. आदि के साथ नये लेखकों की रचनाओं के प्रकाशन का बीड़ा उठाया है।

आप आपनी कविताओं, कथाओं, व्यंग्य, आलेख व धर्म से संबंधित रचनाओं के पुस्तकाकार रूप में प्रकाशन के प्रति उत्सुक हैं तो कृपया संपर्क कर अपना मनोरथ सिद्ध करें।

ऋषिमुनि प्रकाशन द्वारा प्रकाशित कोई भी पुस्तक आप घर बैठे भी प्राप्त कर सकते हैं।
श्री माहेश्वरी टाईम्स के **पाठकों** को इनके मूल्य पर **विशेष छूट** प्रदान की जाएगी।
अधिक जानकारी के लिये संपर्क करे।

सम्पर्क- 90, विद्या नगर, सांवेर रोड़, उज्जैन (म.प्र.) मोबाईल : 094250-91161
E-mail : rishimuniprakashan@gmail.com

राशिफल

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष

यह माह आपके लिए चुनौतीपूर्ण रहेगा। सोचे हुए कार्यों में परिश्रम के उपरांत सफलता प्राप्त होगी। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। नवीन संपत्ति क्रय करेंगे या संपत्ति का निर्माण होगा। वाणी द्वारा रुके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। किसी चुनौती को स्वीकार कर सफलता प्राप्त होगी। वाहन सुख, मकान सुख में वृद्धि होगी। मन में अज्ञात भय बना रहेगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। शुभ काम, मांगलिक कार्य में भाग लेंगे। पुराने मित्रों से भेंट होगी। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। संतान के कार्यों को लेकर चिंता ग्रस्त रहेंगे।

वृषभ

इस माह में मौज-मस्ती, मनोरंजन आदि का लुत्फ उठाएंगे और एवं इन विषयों पर खर्च भी करना होगा। याददाश्त कमजोर रहेगी। आंखों से कष्ट के योग रहेंगे। लंबी यात्रा होगी। चुनौती भरे कार्य को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त होगी। कार्य व्यवसाय में कुछ व्यवधान का सामना करना पड़ेगा। मन बेचैन रहेगा। पति पत्नी में वैचारिक मत मतांतर रहेंगे। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। कार्य व्यवसाय में प्रगति पद प्रतिष्ठा में वृद्धि, आय के नवीन साधनों की प्राप्ति के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता, बड़ों के प्रति मन में श्रद्धा, आस्था, निष्ठा भाव रहेंगे। पारिवारिक माहौल का आनंद उठाएंगे। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता प्राप्त होगी।

मिथुन

यह माह आपके लिए लंबी यात्रा प्रदान करने वाला होगा। स्थान परिवर्तन की संभावना रहेगी। कर्ज़ के माध्यम से संपत्ति का निर्माण होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। साहस एवं पराक्रम में वृद्धि होगी। ईश्वर के प्रति आस्था जागृत होगी। ईश्वर की आराधना में मन लगेगा। किसी देव विशेष की आराधना से ईष्ट साधना की प्राप्ति के योग रहेंगे। विवाह संबंध होने के योग रहेंगे। झूठे आरोप का सामना करना पड़ेगा। पैरों में कष्ट के योग रहेंगे। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। धार्मिक यात्रा शुभ एवं मांगलिक कार्य होंगे। अपनी सूझबूझ से सफलता प्राप्त होगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। कार्य व्यवसाय में तथा पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। संतान प्राप्ति के योग रहेंगे।

कर्क

यह माह आपके लिए शुभ फलदाई रहेगा। पुराने रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे परंतु अपने गुस्से पर नियंत्रण करना भी जरूरी रहेगा। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करेंगे। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। संतान से संबंधित कार्य में अनुकूलता रहेगी। खर्च की अधिकता रहेगी। आय के नवीन स्त्रोत की प्राप्ति के योग रहेंगे। अचानक धन लाभ के भी योग रहेंगे। विवाह संबंध होगा। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। गूढ़ रहस्य ज्ञान प्राप्त होगा। पाचन तंत्र से संबंधित कष्ट के योग रहेंगे। मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। रुका हुआ धन प्राप्त होगा।

सिंह

यह माह आपके लिए विभिन्न प्रकार की खुशियां प्रदान करने वाला रहेगा। रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। मन प्रसन्न रहेगा। नवीन योजना बनाएंगे एवं उसको क्रियान्वित करेंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता राज्य से सम्मान प्राप्ति के योग रहेंगे। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। परिवार में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य होंगे। संतान के रुके हुए कार्य पूर्ण होने से सुख की प्राप्ति होगी। विवाह संबंध का निर्धारण होगा। यात्रा में आनंद की अनुभूति होगी। प्रियजनों से मुलाकात होगी। ऋण के माध्यम से संपत्ति का निर्माण होगा। विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में उत्तम सफलता प्राप्त होगी। भाग्योदय एवं पदोन्नति होने के योग प्रबल रहेंगे।

कन्या

यह माह आपके लिए मध्यम फलदाई रहेगा। कार्य की अधिकता रहेगी। चुनौतीपूर्ण कार्य करना होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में अनुकूलता रहेगी। पाचन तंत्र से कष्ट के योग रहेंगे। पत्नी के स्वास्थ्य की भी चिंता बनी रहेगी किंतु राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। शासन में रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। पुराना दिया हुआ धन प्राप्त होगा। संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता मिलेगी। अपनी बौद्धिक कुशाग्रता से दुर्लभ एवं असंभव लगने वाले कार्य में सफलता प्राप्त होगी। अपनों का सहयोग प्राप्त होगा। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। धार्मिक व शुभ कार्य एवं चिकित्सा पर खर्च करना होगा।

तुला

यह माह आपके लिए विभिन्न प्रकार के कार्यों में श्रेष्ठ सफलता प्रदान करने वाला रहेगा। आय के स्थाई स्त्रोत की प्राप्ति होगी। वाहन सुख, मकान सुख मिलेगा। नौकरी में पदोन्नति के योग रहेंगे। विवाह संबंध तय होने के योग, संतान प्राप्ति के योग, धार्मिक यात्रा के योग, प्रिय जनों एवं विशिष्टजनों से मुलाकात होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। राज्य में रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। परिवार में मांगलिक एवं धार्मिक कार्य होने से खुशी का वातावरण निर्मित होगा। आय उत्तम रहेगी किंतु मन में दुविधा का वातावरण भी बना रहेगा। राजनीतिक संपर्क का लाभ मिलेगा।

वृश्चिक

यह माह आपके लिए शुभ फल प्रदान करने वाला होगा। विगत माह से रुके हुए कार्य में सफलता मिलेगी। विरोधी परास्त होंगे। चुनौती भरे कार्यों को में सफलता मिलेगी। कार्य की अधिकता रहेगी। प्रत्येक कार्य में प्रथम व्यवधान उपस्थित होगा फिर कार्य संपादित हो पाएगा। पत्नी के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। दांपत्य जीवन में अनुकूलता रहेगी। बड़ों के प्रति मन में श्रद्धा आदर भाव रहेंगे एवं उनकी सेवा करने का अवसर प्राप्त होगा। लंबी यात्रा के योग रहेंगे। आर्थिक संपन्नता में वृद्धि होगी। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। नवीन कार्य व्यवसाय में प्रगति के अवसर प्राप्त होंगे। हड्डी एवं दांतों से संबंधित कष्ट के योग रहेंगे।

धनु

यह माह आपके लिए उत्तम फलदाई रहेगा। विगत कई वर्षों से हो रही परेशानियों से मुक्ति मिलेगी। न्यायालय के प्रकरण में सफलता मिलेगी। संपत्ति का निर्माण होगा। भाई परिवारजनों का स्नेह एवं सहयोग प्राप्त होगा। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। दांपत्य जीवन में मधुरता बढ़ेगी। स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठाएंगे। पानी से सावधानी बरतना होगी। नौकरी में अनुकूलता रहेगी। भौतिक सुख-सुविधाओं पर खर्च करना होगा। व्यय की अधिकता का सामना करना पड़ेगा। अनैतिक आय के योग बनते हैं। विद्यार्थियों को अपने परिश्रम का उचित लाभ प्राप्त होगा।

मकर

यह माह आपको कठिन परिश्रम के उपरांत सफलता प्रदान करने वाला रहेगा। कार्यों में विलंब से किंतु सफलता अवश्य प्राप्त होगी। स्थाई संपत्ति से संबंधित प्रकरणों में सफलता अर्जित होने के योग प्रबल रहेंगे। लोकप्रियता का झंडा ऊंचा होगा। धन और सुख में वृद्धि होगी। पारिवारिक आनंद प्राप्त होगा। घर परिवार में मांगलिक एवं शुभ कार्य होने से प्रसन्नता का वातावरण निर्मित होगा। विरोधी परास्त होंगे। आय में वृद्धि होगी। नवीन आय की प्राप्ति के योग भी प्रबल रहेंगे। जीवनसाथी अथवा ससुराल के माध्यम से रुके हुए कार्यों में सफलता मिलेगी। शीघ्र लाभ प्रदान करने वाले कार्यों से लाभ प्राप्त होगा।

कुम्भ

यह माह आपको धार्मिक एवं ईश्वर के प्रति विशेष आस्था प्रदान करने वाला रहेगा। ईश्वर भक्ति में आपका रुझान बढ़ेगा। संतान से संबंधित कार्य में सफलता मिलेगी। विरोधी सक्रिय रहेंगे किंतु सफल नहीं हो पाएंगे। राजकीय पक्ष की अनुकूलता रहेगी। आय में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। नौकरी में प्रमोशन एवं स्थान परिवर्तन के योग रहेंगे। यश की प्राप्ति होगी। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। वाणी पर नियंत्रण बनाए रखना होगा। हड्डी एवं दांतों से कष्ट के योग रहेंगे। निर्णय लेने में सतर्कता रखना आवश्यक रहेगा। जल्दबाजी नहीं करें, पुराने मित्रों से मुलाकात होगी, शुभ समाचार मिलेंगे।

मीन

यह माह आपको विभिन्न क्षेत्रों में श्रेष्ठ सफलता प्रदान करने वाला रहेगा। आय के एक से अधिक स्त्रोत की प्राप्ति होगी। बेरोजगारों को नौकरी मिलेगी। संतान प्राप्ति के योग रहेंगे। परिवारजनों से मुलाकात होगी। शत्रु पर विजय प्राप्ति के योग न्यायालयीन प्रकरणों में सफलता मिलेगी। विभागीय परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होगी एवं पद प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग प्रबल रहेंगे। आमोद प्रमोद के संसाधनों पर खर्च करना पड़ेगा। यश मिलेगा संतान से संबंधित कार्यों में सफलता मिलेगी। स्वादिष्ट व्यंजनों का आनंद उठाएंगे। प्रेम के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होगी। दोस्तों से सहयोग मिलेगा। परिवार में हर्ष उल्लास का वातावरण निर्मित होगा।

खुश रहें - खुश रखें

हमारे और परमात्मा के बीच माया को नहीं आने दें

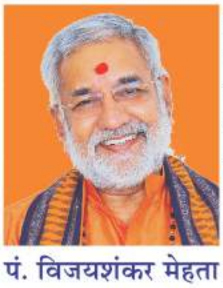

पं. विजयशंकर मेहता
(जीवन प्रबन्धन गुरु)

जरूरत की चादर और मोह की दुशाला इन दोनों में जो फर्क है, उस अंतर को समझने का अब समय आ रहा है। आध्यात्मा मार्ग के लोगों को ध्यान रखना होगा कि आवश्यकता वस्तुएँ तो बनाई जाएँ लेकिन उससे मोह नहीं पालें, क्योंकि मोह धीरे से लोभ में बदल जाता है और लोभ भक्ति के साथ-साथ पारिवारिक दायित्वों में भी बाधक होता है।

रामकृष्ण परमहंस कहा करते थे कि माया को सरलता से समझना हो, तो श्रीरामकथा के एक दृश्य में प्रवेश किया जाए। वनवास के समय श्रीराम आगे चलते थे, मध्य में सीताजी होती थीं और उनके पीछे लक्ष्मण रहते थें, इस दृश्य पर तुलसीदासजी ने लिखा है- ''आगे राम अनुज पुनि पाछें, मुनि बर बेष बने अति काछें। उभय बीच सिय सोहति कैसे, ब्रह्म जीव बीच माया जैसे।''

अर्थात् भगवान श्रीराम परमात्मा का रूप हैं, लक्ष्मणजी आत्मा या कहें जीवात्मा हैं और इन दोनों के बीच में माया स्वरूप में सीताजी हैं। सीताजी रामजी के चरणों की अनुगामी थीं। जहां-जहां श्रीराम पैर रखते थे वहीं-वहीं सीताजी चलती थीं और इसी कारण लक्ष्मणजी श्रीरामजी को ठीक से देख नहीं पाते थे। संयोग से कोई मोड़ आ जाता तो ही लक्ष्मणजी को श्रीराम दिख जाते थे।

संदेश यह है कि परमात्मा और जीवात्मा के बीच जब तक माया है, परमात्मा दिखेंगे नहीं। किसी मोड़ पर माया जरा सी हटी और परमात्मा के दर्शन हुए। भक्ति में ऐसे मोड़ आते ही रहते हैं। इसलिए जीवन में माया तो रहेगी पर हमें मोड़ बनाए रखना है। यही हमारी भक्ति की परीक्षा होगी।

परिवार से भी प्रेम तो रखें, बहुत जरूरी भी है लेकिन ऐसा न हो कि उसके मोह में परमात्मा को ही भूल जाएँ। माया से पार पाने के लिए एक काम और किया जा सकता है- जरा मुस्कराइए..., सदा मुस्कराए...।

जल देवता

वेद-पुराण-कुरान-बायबिल सहित सभी धर्मग्रन्थों ने भी कहा है- 'जल है तो कल है'।
इन्हीं सन्दर्भों से सन्दर्भित
डॉ. विवेक चौरसिया
के जल पर केन्द्रित लेखों का संग्रह 'जल देवता'.
जिनमें आप पायेंगे न सिर्फ भारतीय संस्कृति बल्कि सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकारी है जल की महत्ता.

Rs. 150/-
डाक खर्च सहित

खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद

55 के बाद की जिन्दगी सपनों का अन्त नहीं बल्कि उन्हें साकार करने का स्वर्णिम समय है.
बस इसके लिए जरूरी है खूबसूरती से जीना कैसे जीएँ...
इसी के सूत्र बताती है
डॉ. एच.एल. माहेश्वरी
की पुस्तक
''खूबसूरती से जीएँ 55 के बाद''.

Rs. 120/-
डाक खर्च सहित

आपसे कहा जाता है -
- संकट निवारण हेतु पानी में नारियल बहा दें।
- सांप दिखे तो काम टालें।
- नल को पानी टपकता न छोड़ें।

... और भी बहुत कुछ **तो फिर...**

ऐसा क्यों?
aisa kyon
जिसमें छुपा है आपके हर क्यों का जवाब

प्रश्न उठना स्वाभाविक है - **''ऐसा क्यों?''** लेकिन इसका उत्तर देगा कौन?
इसका उत्तर देगी गहन अध्ययन से संजोई पुस्तक

Rs. 100/-
डाक खर्च सहित

ऋषिमुनि प्रकाशन

90, विद्यानगर, साँवेर रोड, उज्जैन (म.प्र.) फोन - 0734-2526561, 2526761, मो. 094250-91161

बादाम अंगूर सूप

सामग्री :-

भीगे बादाम-25 ग्राम, ग्रीन अंगूर-आधा कप, बटर-वन टी स्पून, ओनियन-40 ग्राम (ऐच्छिक), मैदा-वन टी स्पून, अजवाइन-चुटकी भर, तेज पत्ता-वन पीस, काली मिर्च-तीन पीस, लौंग-2 पीस, गाजर-1 पीस, मिल्क-एक कप, सॉल्ट-स्वादानुसार

गार्निश के लिए बादाम के पतले स्लाइस, छिलके रहित अंगूर के टुकड़े।

विधी :-

बादाम, अंगूर का पेस्ट बनाएं, पैन में बटर डालें, प्याज को पकाने के बाद मैदा डाले, अजवाइन, तेज पत्ता, गाजर, लौंग और काली मिर्च डालें, कुछ सैकंड्स तक सभी को अच्छी तरह मिलाएं, फिर थोड़ा पानी डाले और दस मिनट तक उबलने दें, अब इसे छानें और बादाम और ग्रेप का मिक्स्चर मिलाकर गर्म करें आखिर में मिल्क डालें और नमक मिलाएं। फिर बादाम और अंगूर के टुकड़ों के साथ सर्व करें।

शेफ पूनम राठी, नागपुर
विविधा कुकिंग क्लासेस
9970057423

आपणी बोली

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

कोरोना सूं सीख

खम्मा घणी सा हुक्म आपा सब देख रिया है कि कोविड सूं लड़न री सारी हदा सामने आ गई हैं।आस पड़ोस में कोई बुजुर्ग मरें पड़ोसी आपरी खिड़की दरवाजा बंद कर लेवें और यूँ जतावें कि वाणे कुछ ध्यान ही नहीं। हुक्म कोरोना सिर्फ़ इंसान ने ही नहीं आपाणै रिश्तों ने भी संक्रमित कर रियों है। इण महामारी में आदमी रे साथे रिश्तों री भी मौत हूँ रही है। संक्रमित होते ही आपणा अजीज भी पराया हुता नजर आ रिया है। सामाजिक रिश्तो री परिभाषा ही बदलगी है। इण भयानक संकट रे दौर मे समाज री सारी विषमता चारों तरफ़ा उग आई है। जीवन जीवण रों मायनों बदल ग्यो है। मौत सिर्फ़ अंक गणित हूँ गई है। संवेदनाएँ मरगी है। लोगों रो असमय जाणो भी अब पथरीलें मन ने परेशान नहीं करें। सही कहूँ तो हुक्म इण संकट में आपा एक दूसरे री शारीरिक रूप सूं ही नहीं मानसिक रूप से भी दूर हूँ गया हाँ। यां लागे की कोरोना रे बाद री दुनिया तो और भयावह हुवेला।

इण शताब्दी री शुरुआत सूं आपा पाणी रे लिए लड़ रिया था। अब हवा रे लिए जंग हूँ रही है। हवा री भी कालाबाज़ारी हो रही है। दवाया ब्लैक में मिल रही है। बूढ़ा माँ बाप अगर इण महामारी सूं बच भी ग्या तो बच्चा वाणे घर ले जावण ने तैयार नहीं है। मरने वालों रा परिजन शव लेने घरे नहीं आ रिया है। भरापूरा परिवार होवण रे बावजूद परिवारजन रो अंतिम संस्कार लावारिस री तरह हो रियो है। अस्पताल री जगह श्मशान रो विस्तार हो रियो है। एक आत्मीय रे जाणे सूं आंसू रुके ही नही तब तक दूसरे री खबर आ जावे। लागे आपा एक बड़े श्मशान में बैठा हाँ।

हुक्म सोचने रोंगटा खड़े हूँ जावे कि तस्वीर किती भयावह हुगा है। हैदराबाद रे एक अस्पताल में कोरोना वार्ड में पैंतीस मरीज़ ठीक हूँ ग्या... पर वाणा परिजन रिश्तेदार वाणे लेवने नहीं आया, क्योंकि घर में छोटा बच्चा हैं परिवार जोखिम नहीं लेवणों चाह्वे। मथुरा रे गोवर्धन में एक बेटी बुखार रे चलते मृत पिता री अर्थी रे वास्ते कंधा देने रे लिए गुहार करती रही, बिलखती रही, मगर पड़ोसियो ने दरवाजे बंद कर लियो और तो और उन्हे पहचाण ने सूं इंकार कर दियों। अंततः पुलिस आई, शव रो अंतिम संस्कार करायो। लखनऊ में योंही संकट पत्रकार बिरादरी ने देखणों पड़ियों। देश रे हर हिस्से सूं ईण तरह री खबर आ रही है। सारी दुनिया ने एक कुटुम्ब मानण वालों भारत देश में रिश्तो पर कोरोना भारी पड़ रियो है।आज नहीं तो काल कोरोना तो चला ही जावेला पर जो छोड़ जावेला... जिणमें... आपाणी प्रकृति बदल जावेली। समाज बदल जावेला। नदियाँ और वनस्पतियाँ अपना स्वभाव बदल लेवेगी। संवेदनाएँ बदल जावेला। रिश्ते बदल जावेला। आदतें बदल जावेली। पछे आखरि बची कांई ?

महामारी ने यों सोचण ने मजबूर कर दियों है कि आज ज़रूरत अस्पताल री है या मंदिर मस्जिद? सारी दुनिया में मंदिर, मस्जिद, चर्च बन्द हूँ ग्या। केवल अस्पताल ही खुला रिया। इन पर भी अगर आपा समझण ने तैयार नहीं हैं, तो शवो री अंतहीन यात्रा चलती रेवेला। पहाड़ सी विपत्ति रे बाद भी आपसी कटुता महामारी की तरह बढ़ रही है। बढ़ती रेवेला ।

मित्रों, आपा बचा तो विचार बचेगा, जणे विचारधारा भी बचेली। पहले खुद ने तो बचानो पड़ी, फिर जनतंत्र री सोच। यों वक्त आपसी तनाव रो नही है।एकजुट हुने चालण रो है। आपा प्रलय झेलियो है उने बाद मनुष्यता उठी और खड़ी हुयी। आपा इण विपत्ति सूं भी निकळाला। मनुष्यता री जिजीविषा रों कोई तोड़ नही है। कोई भी दुख मनुष्य रे साहस सूं बड़ा नही, वही हारियो जो लड़ियों नही। इण बार री लड़ाई वैकल्पिक नहीं अनिवार्य है। मनुष्यता ने तो इणसूं भी बड़ा संकट देखिया हैं। मनुष्यता री जीत नियति की जीत है और वो होने रेवेला मगर संवेदनाओं ने जिंदा रखने री जिम्मेदारी आपाणी खुद री है।

मुलाहिजा फ़रमाइये

ज्योत्सना कोठारी
मेरठ

- इतना आसान नहीं है इबादत करना
  दिल से गुरूर जाएगा तभी नूर आएगा

- खुसरो दरिया प्रेम का, उल्टी वा की धार।
  जो उतरा सो डूब गया, जो डूबा सो पार।।

- 'लोग तब तक आप को मूर्ख समझना बन्द नही
  करते जब तक आप उनको उल्लू न बना दो'

- वो तो फितरत है इंसान की बेटियों को बोझ समझना
  वर्ना लड़कियां तो अपना भाग्य लेकर पैदा होती है।

- मेरे अकेले रहने की एक वजह ये भी है कि,
  मुझे झूठे लोगों से रिश्ता तोड़ने में डर नही लगता।

- चार चार बेटियां विदा हो गई जिस घर में खेल कूद कर।
  बहु ने आते ही नाप कर बता दिया की घर बहुत छोटा है

- बहुत ग़जब का नज़ारा है इस अजीबसी दुनिया का,
  लोग सबकुछ बटोरने में लगे हैं खाली हाथ जाने के लिये..!

कार्टून कौतुक

श्रीमती उषा मूंदड़ा

उज्जैन। समाज की वरिष्ठ सदस्या उज्जैन माहेश्वरी सभा महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष मारवाड़ी महिला संगठन की संस्थापक श्रीमती उषा गजानंद मून्दडा का गत 5 मई को देहावसान हो गया। आप अ.भा. माहेश्वरी महासभा सदस्य लक्ष्मीनारायण मूंदड़ा लक्ष्मीनारायण मून्दडा व संजय (नट्टू) मून्दडा की माताश्री थी। आप बहुत ही धर्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में अग्रणी रहती थीं। आप पौत्र-पौत्री व प्रपौत्र सहित भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती लीलादेवी बजाज

इन्दौर। समाज की वरिष्ठ सदस्या श्रीमती लीलादेवी धर्मपत्नी स्व.श्री रामगोपाल बजाज (बागली वाले) का गत 17 मई को असामयिक देहावसान हो गया। कोरोना लॉकडाऊन के निर्देशानुसार केवल चलित उठावना ही आयोजित किया गया। आप अपने पीछे पुत्र कृष्णमुरारी, बलराम व जय बजाज का पौत्र-पौत्री आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

श्री पीरदान राठी

रायपुर (छ. ग.)। वरिष्ठ समाजसेवी श्री पीरदान राठी का गत 20 अप्रैल को आकस्मिक निधन हो गया है। आप मृदुभाषी और सरल स्वभाव के धनी थे। आप माहेश्वरी सभा रायपुर के सतत दो सत्र तक अध्यक्ष रहे तथा अखिल भारतीय माहेश्वरी सभा के सदस्य थे। महेश भवन रायपुर के सचिव पद पर आसीन थे, साथ ही अनेकों संगठनों से जुड़कर अपनी सेवा दे रहे थे। आप रवि कुमार व कमल किशोर के पिताजी थे एवं अशोक कुमार के बड़े भाई थे।

श्रीमती स्नेहलता सोमानी

उज्जैन। श्रीमती स्नेहलता सोमानी धर्मपत्नी श्री अशोक सोमानी का गत 12 मई को असामयिक निधन हो गया। आप अपने परिवार में पुत्र सहित भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

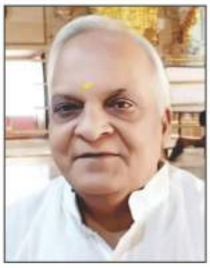

श्री अशोक सोमानी

शाजापुर। आगर मालवा माहेश्वरी समाज के जिला अध्यक्ष श्री अशोक सोमानी गत दिनों देहावसान हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार व संगठन छोड़ गये हैं।

श्री राधेश्याम मुंधड़ा

श्रीनगर। समाज के वरिष्ठ श्री राधेश्याम मुंधड़ा श्रीनगर का आकस्मिक निधन गत 11 मई को हो गया। वर्तमान परिस्थितिवश बैठक का आयोजन जूम मीटिंग के रूप में 13 मई को सायं 5 से 6 बजे किया गया। आप अपने पीछे पुत्र - पुत्री व पौत्र - पौत्री आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

श्री राजेश पलोड़

तराना। तराना शहर के प्रसिद्ध समाजसेवी श्री ओमप्रकाश पलोड़ के चिरंजीव एवं भारतीय जनता पार्टी के पूर्व नगर मण्डल अध्यक्ष युवा समाजसेवी श्री राजेश पलोड़ का असामयिक निधन हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

श्री राम कृष्ण बल्दुआ

कोटा। वरिष्ठ समाजसेवी श्री राम कृष्ण बल्दुआ कोटा का आकस्मिक निधन गत 10 मई को हो गया। आपकी समाज में एक ऐसे निःस्वार्थ समाजसेवी के रूप में पहचान थी, जो सदैव समाजहित के लिये आगे रहे। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं।

डॉ. के.एल. समदानी

उदयपुर। समाज सदस्य डॉ.के.एल. समदानी पुत्र श्री भंवरलाल समदानी का आकस्मिक निधन हो गया। आपके निधन से समाज और शिक्षा जगत में गहरा दुःख व्याप्त हो गया। डॉ. समदानी सुखाड़िया विश्व विद्यालय में इंजिनियर रहे। इसके साथ ही नगर विकास प्रन्यास में ट्रस्टी, भाजपा प्रदेश महामंत्री इंजीनियर प्रकोष्ठ प्रदेश कार्यकारिणी रा. माहेश्वरी प्रादेशिक सभा के सदस्य भी रहे। आप अनेक सामाजिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक संस्थाओं में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। आप अपने पीछे पत्नी व एक इंजीनियर पुत्र छोड़ गये हैं।

जीवन में दुनिया को, आपके ज्ञान से ज्यादा,
हंसमुख व्यवहार की जरूरत है,
हंसमुख व्यक्ति वह फुहार है,
जिसके छींटे हर दुखी मन को राहत देते हैं।

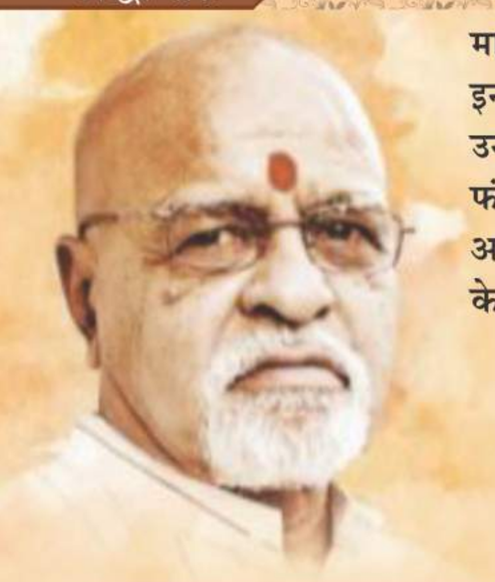

माहेश्वरी समाज की शान, प्रसिद्ध कॉर्पोरेट जर्नलिस्ट और लेखक इन्दौर निवासी प्रकाश बियाणी नहीं रहे। 75वर्ष की अवस्था में भी उन्होंने अपने हौंसले से कोरोना से जंग तो जीत ली थी लेकिन ब्लैक फंगस से नहीं जीत पाऐ। जिसने भी यह खबर सुनी तो वह अपनी आंखें नम किये बिना नहीं रह सका। श्री बियाणी श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रथम अंक के अतिथि सम्पादक भी थे।

अनंत की यात्रा पर चले गये ख्यात कॉर्पोरेट लेखक पत्रकार प्रकाश बियाणी

देश के प्रसिद्ध कॉर्पोरेट जर्नलिस्ट, दैनिकभास्कर के स्तंभकार तथा लेखक के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान रखने वाले प्रकाश बियाणी का इंदौर में निधन हो गया। उन्होंने सीएचएल अस्पताल में 21 मई को आखिरी सांस ली। प्रसिद्ध कॉर्पोरेट जर्नलिस्ट और लेखक इन्दौर निवासी प्रकाश बियाणी नहीं रहे। 75वर्ष की अवस्था में भी उन्होंने अपने हौंसले से कोरोना से जंग तो जीत थी लेकिन ब्लैक फंगस से से नहीं जीत पाऐ। बीते माह उन्होंने अपना 75वां जन्मदिवस मनाया था। पहले उनकी कोरोना रिपोर्ट पॉजिटिव आई थी। फिर 25 दिन चले संघर्ष के बाद 14 दिन पहले वह कोरोना से जंग जीत गए थे। इसके बाद ब्लैक फंगस ने घेर लिया। ऑपरेशन के बाद तबीयत बिगड़ने लगी। कुछ दिनों पहले ही उनका ब्लैक फंगस संक्रमण का ऑपरेशन हुआ था। जीवटता से भरे प्रकाश जी पचहत्तर की उमर में पच्चीस वाले जोश से भरे हुए थे। कई बीमारियों से जूझते रहे, जीवन में बड़ी विपदाएँ झेली थीं, और वे कोरोना को पछाड़ चुके थे, लेकिन काल से आखिरी बाजी नहीं जीत पाए।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में उनकी कलम की धाक

अपने धारदार कॉर्पोरेट लेखन और जुझारू जज्बे के कारण श्री बियाणी ने बीते 30 वर्षों से देश और दुनिया में साख बनाई थी। 'शून्य से शिखर' किताब से मशहूर 20 से ज्यादा किताबें लिखने वाले वे हिंदी में सबसे ज्यादा पढ़े जाने वाले कॉर्पोरेट लेखक थे। वे दैनिक भास्कर गुजराती में पिछले 16 वर्षों से लगातार 'सक्सेस एंड स्ट्रेटजी' कॉलम लिख रहे थे। कॉर्पोरेट इतिहासकार प्रकाश बियाणी की 2020 तक प्रकाशित 20 पुस्तकों में बहुपठित हैं- शून्य से शिखर, जी! वित्तमंत्री जी, इस्पात पुरुष लक्ष्मी मित्तल, इंडियन बिजनेस वुमेन, 25 सुपर ब्रांड्स, द बॉस-सेवक नहीं स्वामी बनो, खदान से ख्वाबों तक संगमरमर, स्व की यात्रा, भरोसा, नोटबंदी-50 दिन।

प्रबंधन के विद्यार्थियों के लिये उनकी पुस्तकें प्रेरक

बिजनेस और कॉर्पोरेट वर्ल्ड पर हिंदी में पहली बार प्रकाशित इन पुस्तकों को दुनियाभर के हिंदी रीडर्स विशेषकर बी-स्कूल के छात्रों ने खूब सराहा है। श्री बियाणी की पुस्तकों के गुजराती, मराठी संस्करण भी लोकप्रिय हुए हैं। किशोर उम्र से लेखन कार्य शुरू करने वाले श्री बियाणी ने 25 वर्ष तक भारतीय स्टेट बैंक में कार्पोरेट लेवल तक की महती जवाबदारियां संभालने के बाद 10 वर्ष (1994-2003) दैनिक भास्कर समूह में कॉर्पोरेट संपादक का दायित्व संभाला था। उनके तीन हजार से ज्यादा लेख, साक्षात्कार विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। बतौर कॉर्पोरेट इतिहासकार और स्तंभकार- लेखक के रूप में अपार और अमूल्य ज्ञान निधि छोड़ गए श्री बियाणी देवी अहिल्या यूनिवर्सिटी की असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. अंशु और अंचल के पिता और दैनिक भास्कर डिजिटल के डिप्टी एडिटर-लेखक कमलेश माहेश्वरी के ससुर थे। प्रकाश बियानी श्री माहेश्वरी टाईम्स के प्रथम अंक के अतिथि संपादक एवं मार्गदर्शक भी रहे हैं।

श्री माहेश्वरी टाईम्स

का आगामी विशेषांक होगा

समाज का गौरवशाली संस्कृति को समर्पित

महेश नवमी विशेषांक

इसमें ऐसे संग्रहणीय आलेख होंगे जो बनाऐंगे इसे अनमोल

विज्ञापन दर

कव्हर पृष्ठ 2 / 3	₹ 25,000/-
पूर्ण पृष्ठ	₹ 15,000/-
आधा पृष्ठ	₹ 10,000/-
एक तिहाई	₹ 5,000/-

व्यवसाय को भी दे सकते हैं ख्याति

यदि आप व्यवसायी हैं और चाहते हैं, देना अपनों को इस पावन पर्व की बधाई तो आप इस विशेषांक में विज्ञापन प्रकाशित करवा कर प्राप्त कर सकते हैं दोहरा लाभ। आपके प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान का यह विज्ञापन आपके अपनो को शुभकामनाएँ तो दिलवाएगा ही साथ ही आपके प्रतिष्ठित प्रतिष्ठान को ख्याति भी दिलवाएगा।

अपनों को दें अपनी बधाई

क्या आप चाहते है कि इस पावन पर्व पर सभी बन्धुओं तक आपकी शुभकामनाएं पहुंचे। तो हम भेजेंगे आपकी शुभकामनाऐं, आपके अपनों तक **मात्र 2500/-** की सहयोग राशि में एक स्ट्रीप विज्ञापन के रूप में। इसके लिए आपको पहुंचाना होगा आपका फोटो, परिचय एवं पता भी।

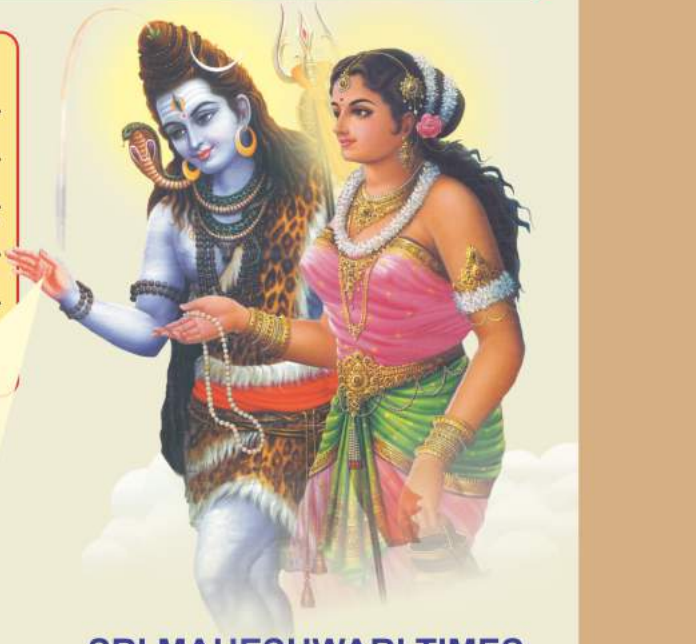

SRI MAHESHWARI TIMES

90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)

Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010

Mo. : 94250-91161 ■ E-mail : smt4news@gmail.com

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल

स्थापना १९२९

आभार और नमन

मुंबई के कोरोना काल के दुःखहर्ता

कोरोना काल की आपदाओं को नियंत्रित कर
असंभव को संभव करने वाले

मान्यवर

श्री सुरेशजी काकाणी (IAS)

ADDITIONAL MUNICIPAL COMMISSIONER
ADVISOR - MVPM SCHOLAR COMMITTEE

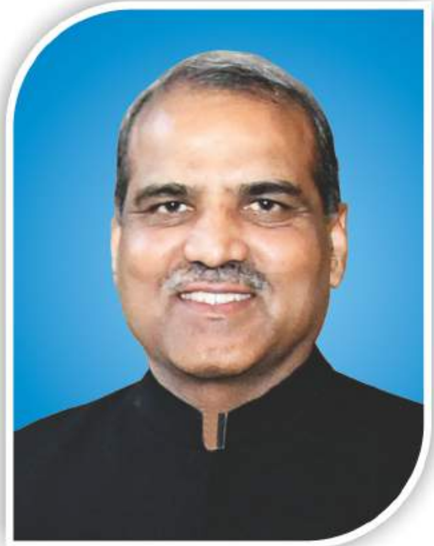

आपके उत्तम प्रशासन, कुशल, मार्गदर्शन, कौशलमय संगठन शक्ति एवम् साहसिक निर्णय से कोरोना की आपदाओं को नियंत्रित कर आपने असंभव को संभव कर दिखाया

तभी तो

सर्वोच्च न्यायालय तथा केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने मुंबई में पुनर्स्थापित परिस्थितियों की प्रशंसा की है और अन्य राज्यों को इससे सीख लेने को कहा है

सभी माहेश्वरी बंधुओं को आप पर गर्व है

काकाणी निर्भीक निर्णय शैली

Aditya Birla Group: Making a life changing difference

We work in 7000 villages. Reach out to 9 million people. A glimpse:

HEALTHCARE

Over 100 million Polio vaccinations

5,000 Medical camps / 20 Hospitals: 1 million patients treated

Over 50 deaf and mute children moved from the world of silence to the sound of music through the cochlear implant

Reach out to over 4,000 children. Extending financial support for the chemotherapy sessions. Encouraging them in a holistic manner to get back quickly on the road to recovery.

Engaged in prevention of cervical cancer through the administration of the HR-HPV vaccines in Maharashtra. Over 1800 girls have been vaccinated.

More than 6,600 persons had their vision restored through the Vision Foundation of India

100,000 persons tested on 32 health parameters through HealthCubed

EDUCATION

Our 56 schools accord quality education to 46,500 students

Mid-day meals provided to 74,000 children

Solar lamps given to 4.5 lakh children in the hinterland

Foster the cause of the girl child through 40 Kasturba Gandhi Balika Vidyalayas

SUSTAINABLE LIVELIHOODS

100,000 people trained in skill sets

45,000 women empowered through 4500 SHGs

200,000 farmers on board our agro-based training projects

And much more is being done through the Aditya Birla Centre for Community Initiatives and Rural Development, spearheaded by Mrs. Rajashree Birla. Because we care.

NUMBERS MEAN A LOT
BUT A SMILE MEANS EVERYTHING!

ADITYA BIRLA GROUP
Engage. Uplift. Empower

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2020-2022
Despatch Date - 02 June, 2021

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah)
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. : 0734-2526561, 2526761 , Mo. : 94250-91161
E-mail : smt4news@gmail.com

https://www.facebook.com/smtmagazine/
http://srimaheshwaritimes.com/